

एकोपि यदि जाति न स्यात् तदा भवेत् ॥ १४ ॥ जामित्र प्रशं
 रतिगर्भकप्रसंगे दत्ताः ॥ आश्विनमेतन्मेषेषु न धात्र्या प्रदे वि ॥ १५ ॥
 टी० लघुसे और चतुर्मासे य पान्दुबरावर अशहोयने सप्तमयोगे यने
 जामित्र दोष होता है और अधिक अथवा कम ती हो यने जामित्र दोष
 नहीं अथवा पाप ग्रह और शुभग्रह कोई भी लघुसे अथवा चतुर्मासे
 कभी सप्तमस्थान में समान अथवा यने जामित्र दोष होता है ऐसा दु
 ह जामित्र होय तो बिबाह करवाना ही ऐसा गर्भ कप्रप देव लघु अथ
 चार्पक होते है और सूर्य ११॥ १५१ दमने स्थान में शुभ होता है

अभिन्नादिना विषय टी ॥ ॥ जामित्राज्यामगुणाः रत्ने
 राहं ह्यकुदस्त्राः स्वगुणान् राह्य ॥ दंताः खरा माः खरमाः
 पुराणाः श्यावा द्वाविंशति रब्धिचक्राः ॥ १६ ॥ इदं स्तुका
 क्षामनकः षड्दशावे दाम्पिनो ज्योतः शुभा द्वाविंशतिः ॥ नागैर्द
 वोभूषनयोः विदुस्त्राज्यामगुणो दस्त्र सुखर्ककाणां ॥ १७ ॥

टी० अभिनीन हात्रसे विषय टीका

विषय टीका नम

इतनी रत्ने नम परसे मा लूम करना -
 विरना डी ॥ अभ्यः परस्ताद्विष
 नाडिकारम्यास्त्याज्याम्यतस्त्राः ख
 लुगोभनेषु तविजा ख्यानाडीषुकन
 सुभंप्रद्विनाशनायाह विराचसर्वे

अ	भ	क	ग	घ	च	ज	झ	ट	ड	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
१०	२४	३०	४०	५४	६४	७४	८४	९४	१०४	११४	१२४	१३४	१४४	१५४	१६४	१७४	१८४	१९४	२०४	२१४
२२	३६	४२	५२	६६	७६	८६	९६	१०६	११६	१२६	१३६	१४६	१५६	१६६	१७६	१८६	१९६	२०६	२१६	२२६
३४	४८	५४	६४	७८	८८	९८	१०८	११८	१२८	१३८	१४८	१५८	१६८	१७८	१८८	१९८	२०८	२१८	२२८	२३८
४६	६०	६६	७६	८६	९६	१०६	११६	१२६	१३६	१४६	१५६	१६६	१७६	१८६	१९६	२०६	२१६	२२६	२३६	२४६
५८	७२	७८	८८	९८	१०८	११८	१२८	१३८	१४८	१५८	१६८	१७८	१८८	१९८	२०८	२१८	२२८	२३८	२४८	२५८

टी० यह योगे विषय डी कहा ह स्त्री अंतर्कष कारणी शुभ कार्य में त्याग कर
 ना कला निरूपिष नाडी में शुभ कार्य हो यती बोडो दिवसेना शाहोता है -
 तिथी विषय टीका ॥ तिथी प्रभागाद्विनिरीश कारिधिर्ग
 जाद्विदिक भावक विषय का सवा ॥ मुनी न संख्या प्रथ
 मानिष्टे न यात पर विषय स्तुति का न गृह्यं ॥ १९ ॥ ॥

टी० प्रतिपदा से दि को पैदति की दीति पक्ष टीका परसे जान ना परतुनि
 पक्ष टीका अंतर्कष नाडी त्याग करना - तिथी विषय टीका नम

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१	१०१	१११	१२१	१३१	१४१	१५१	१६१	१७१	१८१	१९१	२०१	२११

वारविषघटी॥ ॥ नखाह्वयं द्वादशदिक्कशैलाबाण
श्वतत्वानि पथाक्रमेण॥ सूर्यादिवारेषु परंचतस्त्री
नाड्योविषं स्यात्तुल्यवर्जनीयाः॥ १००॥ ७७॥ ७८॥

टी० सूर्यादिशनीतकविषघटीचक्रमेदेखनापरंतु अंतर्कोचारघटीनि
श्रवणकोविवाहमेत्यागकरना विषघटीचक्रं॥

र	च	म	बु	शु	श
२०	२	१२	१०	७	५

दिनरात्रमुहूर्त॥ ॥ शिवसर्पमित्रपित

रोवसुजलविश्राभिजिदुहिणः॥ मुरपट्टिदैवदनुजाः शंबर
नाथाऽर्यमाख्यभगाः॥ १०१॥ दिवसमुहूर्तः कथितादशपं
चमितास्तथैवरात्रेश्च॥ रुद्राजपादाबहिर्बुध्माख्यस्तत

श्वपूषाख्यः॥ १०२॥ अश्विममवन्निधातुमुधावरास्त्वदितिसु
रमंत्री॥ हरिस्तीक्ष्णकरस्त्वाष्ट्रः प्रभंजनाश्चेतिपंचदश॥ १०३

टी० यहगसत्रदिनकेमुहूर्त और रात्रीकेमुहूर्त पथाक्रमसेचक्रमेदेखना

आर्द्रा	आश्ले	अश्वि	म	प	पूर्वा	उषा	अभि	रो	ज्ये	वि	मू	श	उका	दूका	दिवा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त
आर्द्रा	उका	उका	रे	अभि	भ	क	रो	म	पुन	पुष्य	श्र	ह	चित्रा	स्वा	रात्री
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त

वारदुर्मुहूर्त॥ ॥ अर्यग्नोभानुवारे शशिधरदिवसे राक्षस
ब्रह्मसंतौपित्राग्नेयौकुजाहेशशिसुनदिवसे चाभिजित्कृतकः
स॥ जीवाहे राक्षसान्तौ भृगुसुनदिवसे ब्राह्मपित्र्यावहीशौ
सौरावेते विवर्ज्यास्तथच निधनदामंगले दुर्मुहूर्तः॥ १०४

टी० सूर्यवारसे शनिवारतक जैसारविवारको उत्तराफाल्गुनीहोनेसे
त्यागकरना इस्काक्रमचक्रमेदेखना वारदुर्मुहूर्तचक्रम॥ ॥

अभिजितमाह॥ ॥ वैश्वमुनराषा

ढांतस्य प्रांतस्य अनुर्थचरणः॥ अ

वणस्य पंचदशांशस्ताभ्यां पितृ

त्वाभिजिज्ञागः स्यात्॥ १०५॥ ॥

सू	च	म	बु	शु	श
उका	मूल	म	अभि	मूल	रो
०	तो	क	०	मृग	म

टी० उत्तराषाढाका अंतका चतुर्थचरण और अवणका प्रथम १५ अंशमिल
करके अभिजितकी प्राप्तीहोतीहै इसप्रकारसे अभिजितकी उत्पत्ती जानना

वारमुहूर्तः ॥ बुधशुक्रदुर्जीवानांदिनेरेतेर्निवा
हिताः ॥ कन्यासुरवमवाप्तेति पुनारोग्यधनान्विता १०६

टी० बुधशुक्रचंद्रशुक्रदुर्नकेवारमेविवाहकरे तो कन्यापुत्र आशेष
ता धन इस करको शुक्रहोती है ॥ बाणमाह ॥

रुग्मेनाद्यायातति ध्येनकष्टः शोषेनामज्जामितकंदुशोषे ॥

रोगोत्तरीराजचौरौचमृत्युबाणश्चायंलक्षिणात्प्रसिद्धः ॥

टी० विवाहलग्नमें शुक्रपक्षादि तिथी मिलावना १०६ भाग देना शेष १०६ रोग
पशेष रहे तो अग्निबाण शेष १०६ रहे तो राजबाण शेष १०६ रहे तो चौर
बाण शेष १०६ रहे तो मृत्युबाण जानना यह योग दक्षिण देश में प्रसिद्ध है आगे चक्रमेतिथी सहित स्पष्ट है

	पे	ह	मि	क	सि	क	जु	र	प	म	कु	मौ	मि	प्र	ल	क	म	ति
रोग बाण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
अग्नि बाण	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
राज बाण	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
चौर बाण	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०
मृत्यु बाण	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०

बाणपरिहारः ॥ रात्रौचौररुजौदिवानरपतिर्वन्ति
सदासंध्योर्मृत्युश्चाथशनोवृषोविषिमृतिर्गौमेमिशो
रौरवौ ॥ रोगोयत्रतगेहगोपनृपसेवायानृपाणिप्रहेव
ज्योश्चक्रमशोवृषैरुगनलक्ष्म्यापालचौरामृतिः ॥ १०७

टी० रात्रीमें चौरबाण और रोगबाण का त्याग करना दिनमें राजबाण
का त्याग करना और अग्निबाण का सर्वकालमें त्याग करना मृत्युबाण
का त्याग संबंधी करना आगे चक्रमें शनिवारको राजबाण बुधवार
को मृत्युबाण मंगलवारको अग्नि और चौरबाण रविवारको रोग
बाण बृहस्पतिबाणमें मौजीबधन घरका वनावना राजाकी सेवा
यन्त्रविद्या इतने कर्म त्याग करना — चक्रमें स्पष्ट है स्वना-

बाणपरिहारचक्रं

संक्रांतिघटी॥ देवद्वंद्वकर्तव्यो

शशोनाड्योकाः खनृपाः क
मात्॥ वर्ज्याः संक्रमणेर्कादेः
आयोर्कस्यातिनिदिताः॥ १०९
टी० सूर्यमेशनीतकग्रहकी संक्रांत

रोग	अग्नि	राज	चौर	मृत्यु	यहबाण ५
सूर्य	मग	शनि	मंग	बुध	यह ५ बार
रात्री	सदा	दिन	रात्री	संधी	यहकाल
जनेउ	घर	सेवा	यात्रा	विवाह	यहवर्ज

की आदि अंत की घड़ी त्याग करना परंतु सूर्य सं
क्रांत की घड़ी निदिता है सो चक्र पर से मालूम हो

सू	च	म	बु	शु	श
१३	२	९	६	८	९
प	च	घ	ब	ष	ज

अंधादि संज्ञा॥ मेष वृष मृगेंद्रश्च दिवसेषां प्रकीर्तिताः॥ नृ
युक् कर्कटकन्याश्च रात्रावंधाः प्रकीर्तिताः॥ ११०॥ तुला च वृश्चि
कश्चैव दिवसे बधिरौ तथा॥ धनुश्च मकरश्चैव बधिरौ निषिकी
र्तितौ॥ १११॥ कुंभमीने च पंगू द्वौ दिवरात्रौ यथाक्रमं॥ ११२॥

टी० मेष वृष सिंह यह दिन में अंध रहते हैं मिथुन कर्क कन्या यह रा
त्री में अंध रहते हैं तुला वृश्चिक यह दिन में बहिर रहते हैं धन मकर
यह रात्री में बहिर रहते हैं कुंभ दिन में पंगू रहता है मीन रात्री में पंगू
रहता है चक्रमे यथाक्रम से देखना— अंधादि चक्रम॥

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
दिन	दिन	रात्र	रात्र	दिन	रात्र	दिन	दिन	रात्र	रात्र	दिन	रात्र
अंध	अंध	अंध	अंध	अंध	अंध	बधिर	बधिर	बधिर	बधिर	पंगू	पंगू

अंधादि दोष॥ ॥ अंधे वैधव्यमाप्नोति दारिद्र्यं बधिर

तथा॥ अर्धनाशो भवेत्यंगवितिधात्राविनिश्चितं ११२

टी० अंधलग्न में विवाह होय तो विधवा होय बधिर लक्ष में दरिद्रता पंगु
लग्न में द्रव्यनाश इस लग्न को विवाह में त्याग करना

वारत्रय दोष॥ ॥ कर्कलग्न में यवा मेषघटांशो यदि दी

यते॥ तुलायां मकरे चंद्रवैधव्यं जायते भ्रवं॥ ११३

टी० कर्कलग्न में अथवा मेषलग्न में कुंभांश जो होय तुला और मकर
इसमें चंद्रमा होय तो यह तीन योग वैधव्यकारक हैं इत्यादि त्याग करना—

तिथि पर त्वे लग्न वर्ज्य॥ ॥ प्रतिपदितुलामकरौ सिंह

मकरौ हतीयायां॥ कन्यामिथुने पंचम्यां सप्तम्यां चैव

भनुः कर्षी ॥ ११४ ॥ तव म्या कर्षी सिं हौ स का द्रयांतु भनुमी
नौ ॥ चणोदयां र प्रभो नौ मृत्पल मिति धियो गत ॥ ११५ ॥

टी० प्रतिपदा के दिन मुला और मकर रस मूल्य होता है तनी वा के दिन किं
ह और मकर मूल्य पंचमी के दिन कत्या और मिथुन मूल्य सप्तमी को धन और
कर्क मूल्य नवमी को कर्क और मिथुन मूल्य एकादशी को धन और मीन मूल्य त्रयो
दशी को धन और मीन मूल्य यह लघु तिथी योग है मूल्य होने हैं सो त्याग करण

दोष निवारण ॥ ॥ चूनं विना के दृगता मरे ज्येष्ठ
कोण गोवापि हिलक्ष मेक म ॥ निहंति दोषां हि
शतं भृगुश्च शतं बुधो वापि हि हृद्य मूर्तिः ॥ ११६ ॥

टी० गुरु के द्रुमे और ब्रिको जमे १४ ११ १२ १५ तत्तम स्थान वर्जित होय तो
१००००० दोष कानाश करता है शुक्र १०० दोष कानाश करता है और बु
ध १०० दोष कानाश करता है ॥ राशी के उदय ॥ ॥

कुदस्वरस्मा गुणवाण दस्त्रायेदा प्ररामा यनवेद रमा ॥ ११
सचिरामाशररामरामा मेधा लमा दुल्लमतस्तुलाया ॥ ११७ ॥

टी० यह राशी के उदय चक्र में देवनागरी तुलनात्मक राशी का मान जानना

मेष	वृषभ	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
१२१	२१३	३०४	३५३	३८५	३३५	३१५	३८५	३७२	३०४	२१३	१२१

टी० येषां दिवार लघु का प्रमाण शही और पल दस्त्रा क्रम चक्र में देवनागरी

म	र	मि	क	सि	क	तु	व	ध	म	कुं	मी	राशी
३	१०	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	षडो
४१	११	४	४२	४५	३५	३१	४५	४२	४	११	४१	३७

लघु भोग काल ॥ मीना जे स प्रथम पंचम तिथि पलानितु मोकुं
भोही गुणशरादि विंशति चक्र में ॥ ११८ ॥ कर्कचाये मनाः स
योनिं हात्पो कद्रुमि मना ॥ मुला गदिक चवद जीणिल मेले कंठा संमि
टी० जिस राशी पर सूर्य राहा है सो लघु उदय काल में क दिन कितना ति
भोग करता है यह चक्र पर देखाल मकरना — भोग चक्र म

म	र	मि	क	सि	क	तु	व	ध	म	कुं	मी	राशी
७	८	१०	८१	११	१०	१०	११	१०	८	७	७	३७
१६	१४	१०	१३	१३	१५	१५	१३	१३	१०	१०	१३	३७

उदयास्तलग्न॥यस्मिन् राशीयदासूर्यस्तलग्नमुदयेभ

वेत्॥तस्मात्सप्तमराशिस्तुअस्तलग्नंतदुच्यते॥१२०

टी० जिसराशीपरसूर्यरहैसोउदयलग्नजिसलग्नपरअस्तहोय सो सूर्यसेसप्तमस्थानऐसाउदय औरअस्तजानना—

नवांशमाह॥ ॥वृषश्चमिथुनंकन्यातुलाधनीश्वष

स्तथा॥एतेशुभानवांशास्तुततो न्येकनवांशकाः॥२२१

टी० वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन इसलग्नोकेनवांशविवाहलग्नमे१२लग्नकोहोयतो शुभ इसकेदूसरेलग्नअशुभ येषादि१२लग्न औरअंश७कोष्टकमेहै उत्प्रेजिस अंशोकोवर्गशुद्धीआवेउसअंशकेनीचेकोष्टकमेजोलग्नहोयसोलेना औरअंशघड़ीइस्कोअयनांशदेना औरअपानाभुक्तकालजाननाकोष्टकमेचारअंकहै उस्कानामराशीअंशकलाविकलाजानना राशीकीसंज्ञाशून्यहोयतोमेषऔरएकहोयतोवृषभइसप्रकारसेवारो राशीकाज्ञानकरना— नवांशचक्रम् ॥

अष्टमविचार

लग्नादष्टमराशीशः

केंद्रगः शुभवीक्षितः

यदादष्टमलग्नोत्पं

दोषमाशुव्यपोहति१२३

टी० विवाहलग्नसेअष्टम

राशीकास्वामीकेंद्रमेहो

यअथवाशुभग्रहदेखते

होयतोलग्नसंबंधीदोषको

नाशकरताहै—

दृष्टकालीनस्पष्टसू

यैबनावनेकाक्रम-

गतगम्यदिनाहतद्यु

भुक्तेखरसाप्रांशवि

युग्युतोग्रहः स्यात्॥

	वृ	मि	क	कं	सु	ध	मी
मेष	१०	६०	१०	१०	१०	१०	१०
वृषभ	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
मिथुन	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
कर्क	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
सिंह	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
कन्या	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
तुला	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
वृश्चि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
धन	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
मकर	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
कुंभ	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
मीन	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

तत्काल भवस्तथापि प्रियारण सैल अकालानसंपुनः स्यात्
 टी० पंचांगमे ग्रहके कोष्टके आठ दिनके अवधी का सूर्य है परंतु पौर्णि
 मा का सूर्य स्पष्ट है सो जिस दिन का अपाने को करना होय वह दिन मि
 न कोउ स्ते सूर्य की गती कोष्टके की गुण देना और ६० से भाग लेना जो अं
 क आवे सो अंश घड़ी पल जानना यह आगे का सूर्य वनावने का प्रकार अव
 पीछे का सूर्य वनावना केष्टके पौर्णिमा का सूर्य है तो अपाने को पीछे ला
 वना होय तो पंचांग स्पष्ट सूर्य में अंश घड़ी पल कमती करना और आगे
 का सूर्य वनावना होय तो वह फल अंश घड़ी पल पंचांग स्पष्ट सूर्य में पि
 ला पदेना तो तत्काल सूर्य होता है सो उदाहरण से स्पष्ट जानना—

भुक्त दिन का उदाहरण

शके १७९० माघ शुक्ल नवमी ९ शुक्रवार के दिन सूर्य

कितना सोल्यो वने का प्रकार चालन ऋण ६ दिन

सूर्य की गति

पञ्चांग स्पष्ट सूर्य का उत्तर

घटी	पल	रा. अं. क. वि.
६१	५ गति गुण्य	पञ्चांग स्थिति ९ १६ २० ३५
६	६ गुणक ६ दि	चालन ऋण ६ ६ २०
	न २२ पौर्णिमा	अंश स्तम्भ
	के अंतर्गत गुणना	शेष संख्या ९ १० १४ ५

३६६ ३० गुणन फल भा ६० यह स्पष्ट सूर्य जानना—
 ३६६ १६ अं.

गुण्य ६ बाकी पल

गुणक ६०

उक्त ३६०

भा-९७ ३६० (६ घटी)

३६० बाकी

भा-६७ १००० (३० पल)

१००० बाकी

अभुक्तदिनकाउदाहरण ॥

शके १७९० माघ कृष्ण द्वाविंशति के दिन का स्पष्ट सूर्य बनावने की रीति
 तिथौर्णिमा का स्पष्ट सूर्य राशी ९ अंश १६ कला २० विकला ३५ अभुक्तदि
 न ६ और सूर्य की गती ६१५ यह गती को ६ दिन से गुण देना सो गुणन
 फल ३६६१३० इस्को ६० से भाग देना जो लब्धि आवे सो अंश ६ शेष ६०
 से गुण देना फिर नीचे का अंक जोड़ देना और ६० से भाग देना जो ल
 ब्धि आवे सो कला ६ शेष ३० इस्को ६० से गुण देना सो अंक १००० इ
 स्को ६० से भाग देना जो लब्धि आवे सो विकला ३० यह फल पौर्णिमा के
 सूर्य में जोड़ देना सो सूर्य राशी ९ अंश २२ कला ३३ विकला ३९ इस
 रीति से अभुक्तदिन का फल ल्यावना सूर्योदयादिष्टं ५११०१ ॥

अयनांशाबनावने की रीति

शाको वेदाब्धिवे दोनः षष्ठि भक्तो यनांशकाः ॥

देयास्तेतुरवौ स्पष्टे चरलगादिसिद्धये ॥ १२४ ॥

टी० अयनांशाबनावने का प्रकार वर्तमान शक में ४४४ कम करना औ
 र ६० से भाग देना जो अंक आवे सो अयनांशाजानना पर वह फल स्पष्ट
 सूर्य में देना तो चरस्थिर द्विस्वभाव यह ल प्रसिद्ध होगा है ॥

शके १७९० इस्ते
 ४४४ घटावना
 १३४६

उदाहरण

भा. ६०) १३४६ (२२ अं

१२०

१४६

१२०

गु २६ बा

६० गुण

६०) १५६० (२६ कला

१२०

३६०

धनचालन

६१११४६

९ २२ ३२ ३९ स्वर

२२ २६ अयनांशा

१० १४ ५८ ३९

यह साधन सूर्यजान

ना

लग्नवनावने का क्रम ॥ ॥ नात्कालार्कः सायनः स्तोत्र
 यघ्ना भोग्यां शाः खत्र्युधृतो भोग्य कालः ॥ एवं पातां शोभं
 वेद्यान कालो भोग्यः शोभ्यो भीष्टनाडी पलेभ्यः ॥ १२५ ॥ तद
 तुजही हि प्रहोदयां श्र शेषं गगनगुण ३० प्रमशुद्धलुवा

ज्योतिषसार १४६

यं ॥ सीहतम जादि ग्रहें अशुद्ध पूर्व भयति विलम्ब पदो पनांशहीनं
 ती० साधनार्क जो है उ स्के अंश ३० अशुद्ध कला और शुद्ध विकला मे
 घटा घटेने से भोग्यांश सूर्य के होत है वह भोग्यांश को अपना उदय से
 गुण देना और ३० से भाग देना जो लब्धि आवे सो सूर्य का भोग्य काल ज
 नना पीछे जिसरी तसे भोग्य काल किया सीरी त से भुक्त काल बनाव
 ना भुक्त काल मे विशेष की जो साधन सूर्य के अंश है उसको १० मे घटाव
 नान ही जो साधन सूर्य के अंश है सो आगे रखना अपना उदय से गुण
 ना ३० से भाग देना जो लब्धि आवे सो भुक्त काल जानना दूसरी तसे भो
 ग्य काल और भुक्त बनावना आगे जो अपना उदय होय उसको ६० से श
 ग देना और नीचे का पल मिलाय देना उ स्के भोग्य काल अथवा भुक्त
 काल ही न करना जो शेष बचे उ स्के अपना उदय का उदय घटावना
 जिस उदय तक घटे उ स उदय तक घटावना आगे जब न घटे तब लय
 कानाम अशुद्ध से सा जानना जो अंश न घटे तब शेष को ३० से गुण देना
 जो लब्ध अशुद्ध है सो भाग लेना जो लब्धि आवे सो अंश फिर ६० शेष से
 गुण देना अशुद्ध से भाग लेना सो घड़ी फिर ६० शेष से गुण देना फिर
 अशुद्ध से भाग लेना सो लय स्पष्ट होता है तब पूर्व मे अंश दि जो फल
 आवा है उ स्के रूप र अशुद्ध लय के पूर्व जितने रूप आवे उ स अंश पर
 मे कारि राशी संख्या जो देना तो राशी पूर्व कल प्र होता है फिर वह
 लय मे अघनांश घटा घटेने से निरयन लग्न होगा सो जानना —

तत्काल सूर्य
 २१२३१२१२१
 इ स्के ३०
 १४
 १५

उदाहरण
 साधन सूर्य
 १५१५१५१५१५
 ५८
 १

अघनांशः
 २२१२५१००
 ३१
 २२ भोग्यांशः
 ३०४ उदय से गुणना

अंश
 ४५६०
 १०१ १७
 ४५६०

क
 १०४ ६०
 १४६
 ५५०

वि०
 ८८१६ (१४६)
 ६०
 २८१६

ज्योतिषसार १४७

३०)	४५६७	भोग्यकाल ६०)	४५०	७	२८१६
	३०	(१५२)	४२०		२४०
	<u>१५६७</u>		<u>०३०</u>		<u>४१६</u>
	१५०				३६०
	<u>६७</u>				<u>०५६</u>
	६०				
	<u>७</u>				

दृष्टघटी काफल करना दूस्मे वह भोग्यकला कम करना तब उस्मे
उदयघटावना जो उदयनघटे सो अशुभ जानना—
दृष्टघटी

५	१० गुण्य
६०	६० गुण्य
<u>३००</u>	<u>६०</u>
१०	६०० (१०)
यो ३१०	<u>६००</u>
	०००
भोग्य १५२	
शोध १५८	अशुभ
३०	२५३
२५३)	<u>४७४०</u>
	(१८ अंश
	२५३
	<u>३२१०</u>
	२०२४
	<u>१८६</u>
	गुण्य
	६०
	गुणक
२५३)	<u>१११६०</u>
	(४४ कला
	१०१२
	<u>१०४०</u>
	१०१२
	<u>३८</u>
	गुण्य
	६०
	गुणक
१५३)	<u>१६८०</u>
	(६ विकला
	१५१८
	<u>१६२</u>

स्पष्टलग्नं

रा	अं	घ.	प
१०	१८	४४	६
	२२	२६	०
<u>१०</u>	<u>२६</u>	<u>१८</u>	<u>६</u>

निरयनलग्नं

लग्नसे भुक्त काल बनावना
स्फुट सायन भाग के भोग्यां
शफल संमितः॥ सायनां
शस्तनोश्चापि भुक्तां शफ
लसंयुतः॥ १२६॥ मध्य
लग्नोदयैर्युक्ता षष्ठि हृदि
ष्टनाडिकाः॥ ॥ ॥

टी० सायन सूर्यसे भोग्य और
सायन लग्नसे भुक्त काल बनावने

का प्रकार दूनों का योग करना सूर्य और लग्न दूस्के बीच का उदय यु
क्त करना और ६० से भाग लेना तो लग्नसे सूर्य का भोग्य काल स्पष्ट होता है

ज्योतिषसार १४८

उदाहरण शके १०९० माघ शुक्ल ६ भौमके दिन का सूर्य रा ९ अं २२ क ३२ वि ३९ अघनांशा ४४४ सूर्यके अंशादिक से मिलावना तो सायन सूर्य होता है रा १० अं १४ क ५० वि ३९ तो यह कुंभ का सूर्य इसके अंशादिक १० ये कम नीकरना तो कुंभ उदय है इस वास्ते कुंभ के राय से भोग्यांश गुण देना ३० से भाग लेना तो सूर्य का भोग्य काल होता है आगे सायन लग्न की अंश घड़ी पर इस्ते अफाने उदय से गुण देना और ३० से भाग लेना तो लग्न का भुक्त काल होता है सो भुक्त और भोग्य इसको एकत्र करना और उदय से भाग लेना तो दृष्ट घड़ी स्पष्ट होती है इस प्रकार से पहिले सूर्य स्पष्ट सायन सूर्य लग्न सायन लग्न और दृष्ट काल बनावना इससे शुभाशुभ स्पष्ट पालू प्रहोता है लग्न का भोग्य काल पूर्व में इस सायन लग्न के ऐसी क्रिया करना तत्काल लग्न ९०२६१८१६॥

सायन लग्न से भुक्त काल बनावने का क्रम

अंश	उदाहरण	सायन लग्न
१८	कला	१०१८१४४१६
२५३	४४	विकला
४५ ५४	२५३	२५३ उदय
१८५ भुक्त काल	१११३२	१५१८ (२५)
३०) ४७३९ (१५८ ६०)	२५	१३०
३०	१११५७ (१८५)	३१८
१७३०	६०	३००
१५०	५१५७	१८
२३०	४८०	
२१०	३५७	
२९	३००	
	५७	

भोग्य काल और भुक्त काल इसको एकत्र योग करना और ६० से भाग लेना तो दृष्ट काल होता है

उदाहरण	भोग्य काल	दूनों का योग	भुक्त काल
१५३ ६०)	१५३	१५३	१५८

वा.	५०	गुण्य
६०)	६०	गुणक
	६००	१४
	६००	

उत्तर दृष्टिका
घ. ५
५ १०

सूर्य और लग्न एक राशी होय तो इष्टघटी ॥ यदि तनु दिन नाथा

वेकराशी तदंशंतर हत उदयः स्यात्तवाग्निहृत्विष्टकालः ॥१२७॥

टी० सूर्य और लग्न एक राशी होय तो दूनों के अंशका अंतर करना और उसी राशी के उदय से गुण देना ३० से भाग लेना जो आवे सो इष्टकाल जानना रात्री काल ग्र अथ वा इष्टकाल दना बना होय तो सूर्य के राशी में ६ मिलावना तो रात्री का इष्ट होता है ॥

लग्न शुद्धी देखना ॥ लग्ने चंद्र खलारि पौशशिसितौ सर्व बुने

से बुधो ज्योतिषः मुखगोष्ठमा कुजशुभाः शुक्ररत्न तीये शुचे

॥ लाभे सर्व खगाः शुभा अरिबलगास्त्र्यष्टारिगास्यः खला

श्रंद्रस्त्र्यं बुधने प्रियं शभट्टकेट् स्यान्मृत्युवेष्टारिगः ॥१२८॥

टी० विवाह लग्न में चंद्रमा और पापग्रह षष्ठस्थान में चंद्रशुक्र होय और सप्तमस्थान में कोई ग्रह न होय दशमस्थान में बुध होय १२ स्थान में चंद्रमा होय चतुर्थस्थान में राहु होय अष्टमस्थान में मंगल होय वा शुभग्रह तृतीयस्थान में शुक्र होय ऐसा विवाह लग्न होय तो अनिष्टशोककारक होता है एकादशस्थान में सब ग्रह शुभ पापग्रह तृतीय अष्टम षष्ठ ग्रहस्थान में शुभ और चंद्रमा तृतीय चतुर्थ द्वितीय ऐसा विवाह लग्न होय तो शुभ लक्ष्मीकारक होता है और लग्न का स्वामी अथवा अंशका स्वामी अथवा द्रेष्काण स्वामी यह षष्ठ अष्टमस्थान में मृत्युदापक होते हैं ॥

अन्यमत ॥ ॥ पंचभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैरिष्टमादेश्यं ॥

स्थानादिफलसमृद्धिश्चतुर्भिरपिकथ्यते यवनेः ॥१२९॥

टी० विवाह लग्न से ५ ग्रह शुभस्थान में होय तो पुष्टकारक जानना अशुभ होय तो अरिष्टकारक और यवन के मत से चार ग्रह भी इष्टकारक जानना

त्रिंशांशादिकथनं ॥ ॥ त्रिंशद्भागत्पके लुग्रं होरा तस्या

र्द्धमुच्यते ॥ लग्ना त्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशवः

॥१३०॥ द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ॥ ॥

टी० ३० अंशकाल ग्र १५ अंशकी होरा लग्नका त्रिभाग द्रेष्काण लग्नका जो नवमांश सो नवांश लग्नका जो द्वादशांश सो द्वादशांश लग्नका जो त्रिंशांश सो त्रिंशांश जानना इस प्रकार से सर्व जानना —

आदौ ग्रह देखना ॥ यस्य ग्रहस्य पौराशित्तस्य तद्ग्रहमुच्यते

टी० जिसग्रह कीजो राशी उल्लासहृष्टपूर्वजातकमेस्वापीकहाहैउ
सोचक्रपरसेजानना - ॥ राशिस्वामी ॥

शुभ	दुःख	मिश्र	क	क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन	राशी
मंग	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	शनि	रवि	शुक्र	बुध	शनि	राशी

होराकथन॥ ॥ होराचोरोजराशीतुरवीदृक्रमतः

पती॥ समराशीतुचंद्राकीहोरेशीक्रमतोवेदेन॥ १३१

टी० विषमराशीमेंप्रथमसूर्यकीहोरा नंतरचंद्रकीहोरा समराशी
मेंप्रथमचंद्रहोरा नंतरसूर्यहोरा सोचक्रपरसेदेखना

म	र	ध	क	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशी
१	चंद्र	२	चं	३	चं	४	चं	५	चं	६	चं	७	१५
८	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	३०

द्रेष्काणकथन॥ ॥ द्रेष्काणआद्योलग्रस्पष्टिनीयपंचम

स्थल॥ द्रेष्काणग्रहतीमस्तुलग्रान्वयमराशिपः १३२

टी० द्रेष्काणकाप्रकारतोलग्रके ३० अंश प्रथम १० अंशतक प्रथम द्रेष्का
ण सो होय तो लग्र कास्वामी द्रेष्काणाधिपती होता है दूसरा द्रेष्काण १०
अंशतक होय तो पंचम स्थान कास्वामी द्रेष्काणाधिपती होता है ३ द्रे
ष्काण ३० अंशतक होय तो नवम स्थान कास्वामी द्रेष्काणाधिपती हो
ता है परंतु शनि सूर्य मंगल इन ग्रहों की होरा लगाना सोचक्रमें यथाक्रमसे देखना

राम	मेघ	वृष	मिश्र	क	क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
१ अंश	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०
१ अंश	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०
१ अंश	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०

कुजाकी ज्योतिषकाणां बाधोऽप्यष्टादि मार्गणाः॥

भागास्तुर्विषमेते तु समराशौ विपर्ययात् ॥ १३३ ॥

टी० मंगल शनि बृहस्पती बुध शुक्र ग्रहों च ग्रह विषमराशीमें
पंचमसे विंशति और समराशीमें उल्लासयुक्तसे विंशति जानना
मंगल ५ शनि ५ गुरु ८ बुध ७ शुक्र ५ चक्रमें अंशसहित देखना और
विषम और विंशति स्थल फिरवा है ॥ विंशति चक्र ॥

ज्योतिषसार १५१

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु
५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु
८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु	८ गु
७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श
५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं

ली० यह सप्तमं चक्रदस्का सप्तमं प्रयोजन जानना सप्तमं चक्रं ॥

लग्नमनवमांश
मेषसिंह धनुर्लघ्नमनवां
शमेषतः स्मृताः ॥ वृष
कन्या मृगशिरा मकरा
नवमांशकाः ॥ १३४ ॥
कर्कालिमीनलघ्नेषु न
वांशा कर्कितस्मृताः ॥

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
२	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
३	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
४	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
६	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
७	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

नृयुग्मतौ लिङ्गं भेषु तौ लितः स्युर्नवांशकाः ॥ १३५ ॥

ली० मेषसिंह धन यह लग्नमेनवांशा मेषसे वृष कन्या मकर यह
लग्नमेनवांशा मकरसे कर्क वृश्चिक मीन यह लग्नमेनवांशा कर्कसे मिथु
न तुला कुंभ यह लग्नमेनवांशा तुलासे जानना आगे चक्रमे स्पष्ट देखना

	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
३	२०	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७
६	४०	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८
१०	०	बु ३	गु १२	गु ९	बु ६	बु ३	गु १२	गु ९	बु ६	बु ३	गु १२	गु ९
१३	२०	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०
१६	४०	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११
२०	०	बु ६	बु ३	गु १२	गु ९	बु ६	बु ३	गु १२	गु ९	बु ६	बु ३	गु १२
२३	२०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १	श १०	शु ७	चं ४	मं १
२६	४०	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २	श ११	मं ८	र ५	शु २
३०	०	गु ९	बु ६	बु ३	गु १२	गु ९	बु ६	बु ३	गु १२	गु ९	बु ६	बु ३

ज्योतिषसार १५२

द्वादशांशपञ्चमम्

लघुलघुद्वादशांशस्तु स्वराशेरेवकीर्तिताः ॥

टी० लघुका अंश ३० उत्के वा २ सो द्वादशांश उत्तमकमना गिराशी का
स्वामी सो द्वादशांश पती मंगल शनी सूर्य होयतो अशुभ अग्ने र
शीसे जो द्वादशांशोत्तमदशांशपती ज्ञानना-

	मे	व	ति	व	ति	क	तु	र	प	व	कु	मी
३०	मे १	व २	ति ३	व ४	ति ५	क ६	तु ७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२
३१	व २	ति ३	व ४	ति ५	क ६	तु ७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १
३२	ति ३	व ४	ति ५	क ६	तु ७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २
३३	व ४	ति ५	क ६	तु ७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३
३४	ति ५	क ६	तु ७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३	व ४
३५	क ६	तु ७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३	व ४	ति ५
३६	तु ७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३	व ४	ति ५	क ६
३७	र ८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३	व ४	ति ५	क ६	तु ७
३८	प ९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३	व ४	ति ५	क ६	तु ७	र ८
३९	व १०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३	व ४	ति ५	क ६	तु ७	र ८	प ९
४०	कु ११	मी १२	मे १	व २	ति ३	व ४	ति ५	क ६	तु ७	र ८	प ९	व १०

विषमत्रिंशंशः॥ कुतार्किं पुरुविच्छुक्रास्त्रिंशंशः

तयः क्रमात् पंचपंचाष्टशैलेषु भागानां विषमेष्टुहे १२६

टी० यहस्यष्टविषमत्रिंशंशमंगलसे अंश ५५८७५ सहितजानना-

	म	मि	सि	तु	प	कु
५	म १	मि २	सि ३	तु ४	प ५	कु ६
१०	मि २	सि ३	तु ४	प ५	कु ६	म १
१५	सि ३	तु ४	प ५	कु ६	म १	मि २
२०	तु ४	प ५	कु ६	म १	मि २	सि ३
२५	प ५	कु ६	म १	मि २	सि ३	तु ४
३०	कु ६	म १	मि २	सि ३	तु ४	प ५

समत्रिंशंशः॥ ॥ शुक्रतेज्यार्किं

पुत्रास्त्रिंशंशपतयः समे ॥ पंचागा

ष्टेषु पंचागां भागानां कथितावुधैः ॥

टी० यहस्यष्टसमत्रिंशंशशुक्रसे अंश २५०

१०५२५ सहितजानना समत्रिंशंश

षड्दशः॥ ॥ ग्रहरोरान्द्रेष्वापोन

वांशोद्वादशांशकः॥ त्रिंशंशश्चेति

षड्दशं सोमो न्यग्रहजाः शुभाः ॥ १३८

टी० लघुहीरा द्रेष्वापो नवमांश द्वादशांश

	र	क	र	म	मी
५	र १	क २	र ३	म ४	मी ५
१०	क २	र ३	म ४	मी ५	र ६
१५	र ३	म ४	मी ५	र ६	क ७
२०	म ४	मी ५	र ६	क ७	र ८
२५	मी ५	र ६	क ७	र ८	म ९
३०	र ६	क ७	म ९	र ८	मी १०

त्रिंशंश यह उक्तांश षड्वर्ग जानना सो
शुभग्रहका शुभअशुभका अशुभ

रुम	होगा	दिक्का	नवां	हाट	त्रिंश
वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग

उक्तांश॥ ॥ मेषेषष्ठधत्तैरुषेविहृगिनाहंदेद्रिगोर्का
ग्रयः कीदेव्यंगनवाद्रपोर्कभवनेगाश्चास्त्रियांअ
र्कषट॥ नूकेर्काद्रिखगा अलौगवगषट्चापेविषट्
गोद्रपोनकंशास्त्ररुणाघटे द्वाषट्चौमीनेद्रिगोषट्शुभाः।
टी० यह उक्तांशकाज्ञानचक्रपरसे जानना उक्तांशचक्रम्॥ ॥

वर्गविचार

रा	उ	मे	र	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
अंश	६	३	७	४	६	३	१२	९	३	३	१२	७	
०००	७	२	९	६	७	१२	७	७	६	१२	२	९	
०००	०	१२	१२	९	०	६	९	६	९	०	०	६	
०००	०	०	३	७	०	०	०	०	७	०	०	०	

षड्वर्गपंचवर्गवाच
तुर्वर्गमथापिवा॥ कै
श्चित्रिवर्गसत्त्वोक्तं
द्व्येकवर्गेतनुत्यजेत

टी० विवाहलग्नको ६ वर्ग आवेतो उत्तम ५ अथवा ४ मध्यमकोर्द वि
वर्गमध्यम कहते हैं जिस लग्नमे दो अथवा १ वर्ग आवेतो वह लग्न त्या
लग्नांशफल॥ ॥ लग्नेचतुर्दशभागेरुषस्यमकरस्य गकरना
च॥ कन्याकर्कटमीनानामष्टमेद्वादशोलिनः॥ १४१
टी० विवाहलग्नमे वृषअथवामकरदस्ते १४ अंशशुभ कन्याकर्कटस्के
अंशशुभरश्चिकके १२ अंशशुभयहलग्नविवाहमेलेनाहोयतो अंशदेखना

अन्यमत॥ ॥ एकविंशतिमेभागेमेषस्याष्टादशो
हरेः॥ संपूर्णफलदंचादौमध्योमध्यफलप्रदं॥ १४२॥

टी० विवाहलग्नमे मेष २१ अंशसिंहलग्न १० अंशयहसंपूर्ण उत्तम
फल करते हैं मध्यमहोयतो मध्यमफल जानना—

अन्यमत॥ ॥ कुंभस्वांशोचषाड्विंशोचतुर्विंशोचतौ

लिनः॥ नृपुक्कामुकयोर्लग्नशुभसप्तदशांशके॥ १४३

टी० विवाहलग्नमे कुंभ २६ अंशशुभतुला २४ अंशशुभमिथुन धन १७
अंशशुभयहलग्नमे जो अंशकथित किया सो शुभजानना—

वर्गेनमलक्षण॥ ॥ अंतंतुच्छफलंलग्नंयदिवर्गेनमं
नचेत्॥ लग्नस्यस्वनवांशोयःसर्वर्गेनमउच्यते॥ १४४॥

टी० लघुजो वर्गोत्तम होय तो अंतमेशो हा फल करता है लघु आपने न
वर्मांशमे होय तो बहुवर्गोत्तम होता है सो शुभ जानना —

स्त्रीविचार॥ ॥ क्रीताद्रव्येण या नारी न सा पत्नी विधीय
ते॥ न सा पित्र्यो न सा देवेदासी ता कश्य गोब्रवीत्॥ १४५॥

टी० द्रव्य देकर के जो स्त्री से विवाह करते हैं सो वह स्त्री के बल योग के का
प्रकीर्ण होती है और पिता जो द्रव्य देकर करते हैं वह स्त्री देवता और पित
र के काम की होती है ऐसा कश्यप ब्रह्म कहते हैं —

अन्यमत॥ ॥ दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च पित्रोर्वा प्राणसंकटे
॥ प्रोद्धाया मपि कन्यायां प्रतिकूलं न दुष्यति॥ १४६॥

टी० काल पड़े राजभंग पिता का प्राण संकट ऐसा काल होय और कन्या
को घोष न प्राप्ति होय वह कन्या को ग्रह बल न होय तथापि करना होय न ही
वैधव्य भंग विचार॥ ॥ बलवद्विधवा योगे बाल्ये सति
सृणीदृशां॥ पितारहसि कुर्वीत तद्वंशाश्रय संमतं॥ १४७॥

टी० कन्या को बल अवस्थामे बलवान् विधवा योग होय तो पिताने शास्त्र
के संयती से एकांतमे उस्का भंग होय केवास्ति कुं भविष्य विवाह के रीत से करना

अन्यमत॥ ॥ बालवैधव्य योगे पितुं बहु प्रणिपादिभिः॥
कृत्वा लघ्नं रदः पश्चात्कन्योद्वाह्येति चापरे॥ १४८॥

टी० कन्या को बल अवस्थामे वैधव्य योग होय तो पिताने पहिले एकांत
मे घड़े से अथवा पेड़ से या विष्णु की प्रतिमा से इतने से विवाह कर को
तब प्रत्यक्ष से विवाह करना ऐसा कोई आचार्य कहते हैं —

अन्यमत॥ ॥ विवाहात्पूर्वकाले तु चंद्रताराबलेशु
भे॥ विवाहोक्ते च संघन्याकुभेन च सहोदहेत्॥ १४९॥

टी० विवाह के पहिले चंद्र बल तारा बल शुभ दिन मे विवाह के मन्त्रों
मथनी से अथवा कुंभ से विवाह करना तो विधवा योग नाश होता है —

अन्यमत॥ ॥ स्वर्णं तु पिप्याला नीच प्रतिमा विष्णु
पिणी॥ तथा सह विवाहे न पुनर्भूत्वं न जायते॥ १५०॥

टी० सुवर्ण जल कुंभ पिप्याल विष्णु की प्रतिमा इनके साथ विवाह
करने से पुनर्विवाह का दोष होता न ही सो जानना —

विवाहप्रकार॥ ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्त

थासुरः॥ गंधर्वोराक्षसश्चैवपेशाचश्चाष्टमोधमः॥१५१

टी० ब्राह्म-दैव-आर्ष-प्राजापत्य-आसुरगंधर्व-राक्षस-पिशाच-
यह ८ प्रकारका विवाह होता है -

ब्राह्मविवाह॥ ॥ ब्राह्मोविवाह आहूयदीयतेशत्तचलं

कृता॥ तज्ञः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिः॥१५२

टी० प्रथमब्राह्मविवाह ब्राह्मणको निमंत्रण करको और अपने को जो
शक्ति होय उससे कन्याको अलंकृत करको ब्राह्मणको यथाविधी से कन्या
दान करना तो २१ पुरुष अपने पूर्व और २१ पुरुष नंतर पवित्र होते हैं -

दैवविवाह॥ ॥ यज्ञस्थकृत्विजेदैवः॥

टी० दैवविवाह कन्या अलंकृत करको यज्ञमेकृत्विजको दान करे तो दैववि
आर्षविवाह॥ ॥ आरायार्षस्तुगोद्वयमिति॥ (वाह होता है)

टी० आर्षविवाह पुरुष कन्याको बैल गाय अथवा दूध के मोलका द्र
व्य देको कन्याका पूजन करको विवाह करे तो वह आर्षविवाह जानना -

प्राजापत्यविवाह॥ ॥ सहधर्मचरतामिति भाषणपू

र्वकमलंकृता कन्या यत्र दीयते स प्राजापत्यः॥१५३॥

टी० प्राजापत्यविवाह॥ धर्मके सहित आचरण करेगे ऐसा भाषण पू
र्वक अलंकृत कन्या जो देतो वह प्राजापत्यविवाह जानना -

आसुरविवाह॥ आत्मार्यं द्रविणमादाय यत्कन्यार्पणं स आसुरः॥

टी० आसुरविवाह जो पुरुष ने अपने वास्ते द्रव्य कमाया और द्रव्य क
न्याके अर्पण करको विवाह करे तो वह आसुरविवाह जानना -

गंधर्वविवाह॥ ॥ त्वं मे भार्या त्वं मे पतिरिति गंधर्वः॥

टी० गंधर्वविवाह स्त्री पुरुष यह दूनों वय प्राप्ती मे आपको यह कह कि तुम
हमारे पती और तू हमारी स्त्री ऐसा परस्पर भाषण सो गंधर्वविवाह जानना -

राक्षसविवाह॥ ॥ राक्षसो युद्धहरणात्॥

टी० राक्षसविवाह दूसरे के राज्य मे से कन्या जीत करको ल्यावना
यह राक्षसविवाह जानना -

सात्रविवाह

अलंकृतामभिजपन् सात्रद्वयमिधीयते॥

टी० शात्रुविवाह राजालोक असुखरसहित कन्याको जीतते है
इसबास्ते यह शात्रुविवाह जानना -

पिशाचविवाह

कातेन स्वापाद्यवस्था सुकन्यकाहरणपेशाचोविवाह
टी० पिशाचविवाह कपटकरको मित्रा अवस्थामे कन्याको उखाव
ले जाना यह पिशाचविवाह जानना -

पुनर्विवाह ॥ गांधर्वादि विवाहेषु पुनर्वैवाहिको विधिः

॥ कर्मव्यवधिभिर्वर्णैः समयेनाप्रिसाक्षिकः ॥ ११४

टी० गांधर्वविवाह राक्षस शात्रु पिशाच यह चार विवाहकेनेतर
पुनर्विवाह विधी तीनवर्णको है सो अग्नी साक्षी करको करना
रंतु विवाहका समय होय तो उचित है -

अन्यमत ॥ ॥ चतुरो ब्राह्मणस्याद्यान् शस्तान्क

वयोविदुः ॥ राक्षससत्रिपस्यैकमायुरवैश्यशूद्रयोः ॥

११५ ॥ गांधर्वायुरपेशाचराक्षसमारव्याश्च सर्वदा ॥ ॥

टी० ब्राह्मणको ब्राह्म्य देव आर्य प्राजापत्य यह चार विवाह
करना उक्त है सत्रियको राक्षसविवाह वैश्य शूद्रको भी उही
जानना और गांधर्व आयुर पिशाच राक्षस यह चारो विवाह
को सर्वकालमें करना इसमें तिथी नष्टानका विचार नहीं -

अन्यमत ॥ ॥ नशास्त्रदृष्ट्या विदुषा कदाचिदु

संप्रतीयाः कुलदेशधर्माः ॥ मूलं हि तेषां च्युतवेद

शाखाभूयानधर्मः स्थितिभंगदोषात् ॥ ११६ ॥

टी० पंडितने यह शास्त्र देखको अपना कुलधर्म कभी त्याग करना न
ही कौंकि यह मूल अष्ट होता है वेद अष्ट होयको धर्मनाश होते है -

अन्यमत ॥ ॥ पुत्रो द्वाहात्तरं पुत्रीनिवा होवक्तु

वये ॥ न तयोर्ब्रतमुह्ये हान्यं दुनादपि मुंडनं ॥ ११७

टी० पुत्रके विवाहमंतर कन्याका विवाह छ महिनकरना नहीं वि
वाहबाद जनेऊ करना नहीं जनेऊ बाद मुंडनकरना नहीं -

मुण्डनविचार

व्रतं समावर्त्तनकः सचौलं केशान्तमेतानि वदन्ति तज्ञाः ॥ दौ

रं पुरस्कृत्य भवन्ति यस्माच्च त्वारितस्मादिह मुंडनानि १५८

टी० जनेऊ. समावर्त्तन. चौल. और १६ वर्ष में दाही. और सौर आ
दिले को यह ४ मुंडन होता है सो जानना -

अन्यदपि ॥ ॥ एकोदश्यादि चोदश्यादि नोदहने भवेत्ता

शः ॥ न ह्यंतर एकदिने व्यादुः संकटे च शुभं ॥ १५९ ॥ ॥

टी० दोकन्या की एक माता होय तो दूनों कन्या का विवाह एक दिन में करने से
नाश होता है जो अंतर न होय और सैकट प्राप्ती होय तो करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ आदौ चौलं तनो मौ जी विवाहश्च शुभप्र

दः ॥ मातृभेदे बुधैरुक्तो पातुरैक्येन कर्हिचित् ॥ १६० ॥

टी० प्रथम चौल तब जनेऊ तब विवाह शुभ माता का भेद होय तो क
रना माता एक होय तो करना नही -

अन्यमत ॥ ॥ वरवध्वोऽपिता माता पितृव्यश्च सहो

दरः ॥ एतेषां प्रतिकूलं चेन्महाविप्रकरं भवेत् ॥ १६१ ॥

टी० पुरुष अथवा कन्या दूनों के वंश में पिता माता चाचा भाई इन लोग को वि
होय तो वह प्रतिकूल होता है तो निश्चय के नंतर ऐसा होय तो विवाह करना नही

अन्यमत ॥ ॥ वाग्दानानंतरं यत्र कुलयोः कस्यचि

न्मृतिः ॥ तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभो भवेत् ॥ १६२ ॥

टी० विवाह का वाक्य दान भयानंतर दूनों के कुल में जो किसी का मृत्यु होय
तो १ वर्ष तक करना नही १ वर्ष के बाद करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ अन्येषां तु सपिंडानां माशौचं माससं

मितं ॥ न दंते शान्तिकं कृत्वा ततो लग्नं विधीयते ॥ १६३ ॥

टी० और जो अपने वंश के बाहर का अशौच होय तो १ मास पर्यंत
विवाह करना नही नंतर शांती कर को करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ श्रवः श्रविष्ठाश्च सनानुराधा

सविश्वपूर्वात्रयवन्ति भेषु ॥ निमित्तं शुद्धं फल

पुष्प पूर्णः शुभे मुहूर्ते वरयेत्कुमारीं ॥ १६४ ॥

टी० श्रवण. धनिष्ठा. स्वाती. अनुराधा. उत्तराषाढा. तीनों पूर्वा, क

स्तिका इनने नक्षत्रमे विवाहके पहिले कल पुष्प पूर्णपात्र और वस्त्र इ
त्थे शुभ सुहृन् मे कन्याका वरणन पूजन करना और अशने कुलाचार
की जोरित विवाहके पहिले करनेकी होय सो करना —

अन्यमत॥ ॥ पूर्वात्रितयमाशेषमुत्तरात्रितयं
तथा॥ रोहिणीतत्रवरणे भगणः शस्यते बुधैः ॥
॥ १६५ ॥ उपवीतफलं पुष्पं वा सांसि विविधानि च
॥ देयं वराय वरिणे कन्या आत्राहिजे न क॥ १६६ ॥

टी० तीनों पूर्वी रुतिका तीनों उत्तरा रोहिणी इतने नक्षत्र मे और ता
राबल देखके वरका विवाहके पहिले यज्ञोपवीत फल पुष्प और ना
माप्रकारके वस्त्र देको वरका पूजन कन्याके भाईने या ब्राह्मणद्वारा
करना पश्चात् कन्याका पूजन करना —

अन्यमत॥ ॥ नहन्त्यंगलघोषैश्च विशाशी
र्वचनैः सह ॥ आदीकृतवाशची पूजां पश्चा
त्सर्वसमाचरेत् ॥ १६७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

टी० विवाहकर्म आरंभ होते ही पहिले वाद्य घोषके सहित और ब्राह्मण
के आशीर्वाद वचन सुक्त कन्यासे रन्दाणीका पूजन करावना नंतर विवाह
को आरंभ करना और विवाहके बाद जो कुलाचार होय सो करना —

अन्यमत॥ ॥ तथेति तस्मिन् कन्यावरणोक्तस्त्वेवास
रे ॥ कुर्यात्प्रदानं कन्यायाः स्वस्तिवाचनपूर्वकं ॥ १६८ ॥

टी० कन्याका पिता कबूल करे कि हम तुमको कन्या देने हैं तब जिस नक्ष
त्रमे वर्णनीक्या है वह नक्षत्रमे या विवाह नक्षत्रमे पिता स्वस्तिवाचन
पूर्वक कन्यादान विधी सुक्त करे और ब्राह्मण श्रिय वैश्य इनको वेद
विधी सो करना शूद्रको गोपर्व विवाहादिकसे करना ऐसा कथित है —

अन्यमत॥ ॥ दलनकंडुनमंडनवेदिकाग्रह
स्तुमार्जनचारकमंडपः ॥ करतलगृहमध्य
गतागतंतदखिलं विधीतविवाहः ॥ १६९ ॥

टी० विवाहकानितनाकाश पीसना कुलनाई दिवनाचना घरसंस्कारादि
बाहुत मंडप और जो सब कार्य होना चाहें सब विवाहके नक्षत्रमे करना —

घटिकाविचारमाह ॥ कुंडे भः परि पूरिते सुघटिका मर्द्दी दया
स्तेन्यसेत् स्तुत्वाग्नित्रयवायुगानशुभदा पूर्णाग्निपंचस्वय ॥

टी० विवाह काल सिद्धी के वास्ते ज्योतिषशास्त्र के अनुसार काल सा
धन कुंड मे अथवा नाद मे घड़ी स्तूती कर को छोड़ देना दिन मे दृष्ट काल
ल होय तो सूर्य का आधा बिंब उदय होय तब घड़ी छोड़ना और रात्री
मे दृष्ट काल होय तो आधा बिंब अस्त होय तब घड़ी छोड़ना और
छोड़ने ही अग्नि दिशा दक्षिण नैर्ऋति वायु इतने दीशामे घड़ी ग
मन करे तो अशुभ और भरी घड़ी अग्नि दक्षिण नैर्ऋति पश्चिम
वायु इतने दिशामे पूर्ण घड़ी गमन करे तो अशुभ जानना -

घटिका गमन फल ॥ ॥ पूर्वाशादि फलं कुर्यात्स्थिता मध्ये
धनप्रदा ॥ सौभाग्यनिर्धनं नार्या अपमृत्युरुजान्विता ॥
॥ १७० ॥ भर्तृप्रिया च वेश्या च मान्या विनमुतान्विता ॥

टी० घड़ी कुंड मे छोड़ने के नंतर आठ दिशामे गमन फल कुंड मे घड़ी
छोड़ने ही मध्य मे रहे तो धन युक्त पूर्व दिशामे सौभाग्य अग्नि दिशामे द
रिद्र दक्षिण दिशामे अपमृत्यु नैर्ऋत्य दिशामे रोग युक्त पश्चिम दि
शामे प्रतिप्रिया वायु दिशामे वेश्या उत्तर दिशामे मान युक्त ईशान्य दि
शामे धन पुत्र युक्त स्त्री होती है ऐसा यह आठ दिशा का फल जानना -

लग्नविचार ॥ ॥ घटी लग्नं घटानास्ति तदा गोधूलिकं
स्मृतं ॥ शूद्रादीनां बुधाः प्राहुर्न हि जानां कदाचन ॥ १७१

टी० दिन मे घड़ी लग्न मिले अथवा रात्री मे भी न मिले तो शूद्र को
मात्र गोधूली लग्न कथित है ब्राह्मण को गोधूली लग्न कभी करना न
ही परंतु संकट काल मे करना -

गोधूली लग्न ॥ ॥ पिंडी भूते दिन कृति हेमंत तौ स्या
दह्मस्ते न पसमये गोधूलिः ॥ संपूर्ण स्ते जल धरमा
ला काले त्रेधा योज्या सकल शुभे कार्या दौ ॥ १७२ ॥

टी० हेमंत ऋतू मे गोधूली सूर्य का बिंब संपूर्ण बाहर रहे उष्ण काल
मे आधा अस्त पर गोधूली वर्षा काल मे संपूर्ण अस्त होय तब गोधूली हो
ती है ऐसी तीन प्रकार की गोधूली शुभ कार्य मे शूद्र को कथित है ॥ -

गोधूलीलग्नम् ॥ ॥ गोधूलिपञ्चजादिकेषु भवते पंचांग
शुद्धीरेवेर धोस्नात्वर पूर्व नोप धादिकान्तरे दुर्गमशुद्धि
ने ॥ सोप्रांगकुलमहमंगुल्यमाहः पानमर्कप्रमंज
यादिप्रमुखीतिसंकरदृष्टस्योयनाद्येकादिन ॥ १७३ ॥

टी० गोधूलीलग्नम् इदिको शुभ पंचांग शुद्धीरेवेरको गोधूलीका
कारुसरे अपि अस्तोने के वादयल १५ और अर्ध अस्तोने के पी
ले ॥ १५ फल यह गोधूली तोइस्मे भी विचार चंद्रमा अष्टम षष्ठ लग्न
येवापग्रह अष्टम स्थानमे मंगल और गुरुशनी दुनकेवार महाश
तसूयैमंक्रान्ति इतने दुष्टयोग का त्याग करना आत्माकी संकट प्रा
प्ती होय अथवा कन्या जीवनवती होती होय तो विचार करना न
ही गोधूलीमे करना ॥

वधूप्रवेशः ॥ ॥ विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युग्मे
शवाधो दश वासरांतात् ॥ न दुर्धर्मद्वेषु निपंच
मांतादतः परस्तान्मिये मो न चास्ति ॥ १७४ ॥ ४२ ॥

टी० विवाहसे समदिनमे वधूप्रवेश करना अथवा सोल दिनमे व
धूप्रवेश समदिनमे करना इत्केनंतर पांचवर्षतक समवर्षमे कर
ना अगरे विचार करना नही -

उक्तमासादि ॥ ॥ माघफाल्गुनवैशाखेषु कूपसेषु भेदि
ने ॥ सुवीदित्यविशुद्धी स्यात् नित्यं पत्न्यो हिरागमः ॥ १७५ ॥

टी० माघ फाल्गुन और वैशाख मे सुकूपसेषु भेदिनमे गुरुशुद्धी
सुर्षसुद्धीमे वधूप्रवेश दूसरे दुके सो हिरागमन करना शुभ -

वधूप्रवेशः ॥ ॥ नीहारांशुपुनरादिनिगुरुब्राह्मण
धर्मिनीशाक्रेभास्करवापुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रप्रशस्ते
तिथौ ॥ कुंभाज्जातिगतैर्यौ शुभ करे प्राप्तादये भागीवे
जीवजास्फुलितं दिनेन वधूप्रवेशः शुभः ॥ १७६ ॥

टी० मृग तीकोउत्तरा पुनर्वसुशुभ रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त
स्वाती अश्लेषा शततारका चित्रा चतनस्तत्रये शुभ तिथीमे कुंभमे वधुप्र
वेश गुरुशुद्धीमे वधूप्रवेश और गुरुशुद्धीमे वधूप्रवेश

अन्यमतः॥ ॥हस्तादिपंचमृगपूषभदक्षभेषुविष्णुह
येबुधदिनेगुरुशुक्रवारे॥स्त्रीणांशुभंप्रथमपल्लवधा
रणस्यात्याणिग्रहोक्तसमयेखलुपीतवस्त्रैः॥१७७॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अश्लेषा मृगशिरा अश्विनी अ
वध धनिष्ठा यहनक्षत्रमे बुध गुरु शुक्र इनके वारमे और विवा
हनक्षत्रमे स्त्रीको प्रथमवस्त्र पीत धारण करना अर्थात् माथे पर से
धोनी पहिरावना शुभ-

शूद्रादिको पुनर्विवाह ॥ ॥शूद्रांत्येषु पुनर्भवाप
रिणयः प्रोक्तो विवाहोक्तमैनीलोक्यं तिथिमास
वेधभृगुजेज्यास्तादित्यार्कभातः॥त्रिच्यर्सेषु मृ
तिर्धनं मृतिमृती पुत्रो मृतिर्दुर्भगश्चैरौ न्नत्यम
योधृती शकृततत्त्वर्सेत्ययः साभिजित् ॥१७८॥

टी० शूद्रादिजातीको पुनर्विवाह करने का प्रकार विवाहके नक्षत्रमे क
रना परंतु तिथिमास और वेध गुरु शुक्र इनका अस्तोदय इस्का वि
चार करना नही सोइहा सूर्यनक्षत्रसे दिन नक्षत्रतक गिनना प्रथम ३
मरण दूसरे ३ धन तीसरे ३ मरण चौथे ३ मरण पंचम ३ पुत्र लाभ
षष्ठ ३ मरण सप्तम ३ दुर्भग अष्टम ३ लक्ष्मी नवम ३ श्रेष्ठता और सू
र्यनक्षत्रसे १८।११।१४।२५ यहनक्षत्रका त्याग करना -

अन्यमतः॥ ॥शूद्रादितिथिवाश्लेषाआग्नेयं वारुणा
तथा॥अश्विनीवसुदैवत्यंपट्टकालेषु भेस्यते॥१७९॥

टी० ज्येष्ठा पुनर्वसु आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी
धनिष्ठा यहनक्षत्रमे शूद्रने विवाह करना सो स्त्रीका पुनर्विवाह हो
ता है भाषामे सगई ऐसा कहते है-

दत्तपुत्रमुद्गते॥ ॥हस्तादिपंचकभिषक्वसुपुष्यभेषु
सूर्यसमाजगुरुभार्गववासरेषु॥रिक्ताविवर्जिततिथि
ष्वलिकुंभलग्नेसिंहेवृषे भवति दत्तपरिग्रहोयं॥१८०॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अश्लेषा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य य
हनक्षत्रमे और रवि मंगल गुरु शुक्र इनके वारमे रिक्ता तिथी का

त्यागकरके वृश्चिक कुंभ यह लग्नका भी त्याग करना और सिंह वृष
यह लग्नमें पुनर्दत्त कलेवा लड़का गोर सेना वंशके वास्ते -

प्रथम भाग समाप्त ॥

वास्तव्यकरणम्

ग्रामादि अनुकूल ॥ ॥ ग्रामादेरनुकूल तन्दिशि भूतग्रह

त्यक्वा ॥ वासधिष्यति शुद्धि चरीत्यापव्ययभांशाकार १

टी० वास्तव्य नाना होय तो पहिले ग्राम देखना दिशा भूमी मास नक्षत्र
ही लोभ खर्च लग्न अंश इन नानिचार कर को न बघर बनावना शुभ -

ग्रह बल ॥ ॥ गुरु शुक्रा के चंद्रेषु खोजा दिबल श

लिषु ॥ गुरु के दुबल लब्ध वायु द्वार भक्ष्यस्यते ॥ २ ॥

टी० गुरु शुक्र तूर्य चंद्र यह अपने उच्च में होय और बलवान होय
ऐसे कालमें गुरु चंद्र सूर्य रम के बल प्रती में घर बनावने को आरंभ करना शुभ

ग्रहे वर्ज्य ॥ ॥ विवाहोक्तमहादेवा नृतेजामित्र

शुद्धि ॥ रिक्ता कुजा के वाराच चरल ग्रंथ रीशक २

टी० विवाह में जो महादोष कथित है उस्का जा मित्र खो डको त्याग
करना रिक्ता तिथी मंगल रवि इनका चार और चरल ग्रंथ चरल ग्रंथ
का अंश यह घर बनावने में त्याग करना -

अन्यमत ॥ ॥ तत्त्वकुजा के जो अंश पृष्ठे चाग्रस्थि

तं विधुं ॥ सुपेन्यगशिगं चार्क्युगो देहं शुभाहये ॥ ४ ॥

टी० मंगल तूर्य इनके अंश और पृष्ठ चंद्र सत्सुख चंद्र इनका
त्याग करना मिथुन राप्ता धन और मीन यह राशी में सूर्य होय
और घर बनावे तो शुभ कारक होता है -

घर शुद्धि ॥ ॥ हार शुद्धि निरीत्या सौभ शुद्धि दृष च

कतः ॥ निष्यं च के स्थिरे लगे द्वांगे चाल गमार भेत ५

टी० प्रथम हार शुद्धि देखना नक्षत्र शुद्धि वृष चक्र सो देख को पंच कला त्याग
कर को स्थिर लग्न में अथवा हि सुभाव लग्न में घर बनावने को आरंभ करना
ग्राम अनुकूल ॥ ॥ स्वनाम गेर्पद्रा विहिं शरु के शरि दि

तः॥ सग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततो न्यशा ६

टी० अपानेनामराशी से ग्राम की राशी २५।९।११।१० आवेतो वह ग्राम शुभ जानना और इस्से विपरीत आवेतो अशुभ जानना -

अन्यमतः॥ ॥ एकभेसप्तमे व्योम गृहहानिस्त्रिषष्ट

गे॥ तुर्याष्टद्वादश रोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखं॥ ७॥

टी० अपाने राशी से ग्राम की राशी एक होय अथवा सप्तम होय तो शून्य जानना तृतीय षष्ठ होय तो घर की हानी चतुर्थ अष्ट द्वादश होय तो रोग कारक इस्से जो शेष स्थान रहै पूर्व में लिखे सो शुभ -

गृह जात कहा ॥ ॥ अक्षत तपय शवर्गार्षौ क्र

मतः स्मृताः॥ एकोनखेषु वर्णानां स्वरशास्त्रविशा

रदैः॥ ८॥ अवर्गे षोडश ज्ञेयाः स्वराः कादिषु पंचसु

॥ पंचपंचैव वर्णस्युर्यशौ तु चतुरक्षरौ॥ ९॥ ७॥

टी० अवर्ग से शवर्ग तक अक्षर ४९ तिस्से अवर्ग का स्वर १६ और क वर्ग ५ चवर्ग ५ टवर्ग ५ तवर्ग ५ पवर्ग ५ यवर्ग ४ शवर्ग ४ ऐसा स्वर शास्त्र में कथित है सो जानना -

वर्गस्वामी॥ ॥ तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्चासर्पारवुगज

सूकराः॥ वर्गेशाः क्रमतो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमोरिपुः १०

टी० अवर्ग का स्वामी गरुड कवर्ग का मार्जार चवर्ग का सिंह टवर्ग का कुकुर तवर्ग का सर्प पवर्ग का मूसा यवर्ग का गज शवर्ग का सूवर यह क्रम से आठ वर्ग के स्वामी जानना और जिस वर्ग में अपाना नामाक्षर होय उस वर्ग से पंचम शत्रु होता है सो जानना -

काकिणी॥ ॥ स्ववर्गे द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजये

त्॥ अष्टभिश्च हरेद्भागं यो धिकः स त्रणी भवेत्॥ ११॥

टी० अपाने नामाक्षर का वर्ग द्विगुणित करना और ग्रह के नामाक्षर का वर्ग से मिलाय देना और आठ से भाग लेना जो अधिक होय सो त्रणी जानना

भूमिलक्षण॥ ॥ श्वेताशस्ताद्विजेंद्राणां रक्ता भूमिर्म

ही भुजा॥ विशांपीता च शूद्राणां रुष्णान्येषां तु मिश्रिता १२

टी० भूमी की परीक्षा ब्राह्मण को श्वेत भूमी राजा को लाल भूमी वैश्य को पी

ती मूद्रकोकाली भूमी और चंडालादिको मिश्रित सब वर्ण युक्त
शुभ कारक होती है. भूमि परीक्षा

॥ श्वभ्रं कृत्वा निशां चादौ पानीयेन प्रहूरयेत् ॥
॥ प्रातर्हृदये जले वृद्धिः स मेयं कत्रणे मयं ॥ १३ ॥

टी० शस्त्री को भूमी हात में खोदना उसको फनी भर देना और दूसरे दिन सबेरे देवना समान जल होय तो वृद्धी और कमती होय अथवा कीचड़ होय या यतोक्षयना शकारक जानना —

स्वोदनेकाप्रकारः ॥ जलांतं प्रस्तरांतं वा पुरुषांतमथा
पिवा ॥ क्षेत्रं संशोध्य चोद्धृत्य शल्यं सदनमारुहेत् ॥१४॥

टी० भूमीमेषानीलगेतबनकरखोदनाअथवापत्थरलगेतबनकरखोद
नाअथवाएकपुरुषखोदनाजगशुद्धकरनाशल्पनिकालडालनाभीरुपा
(बनवना)

शुभभूमीअसुभभूमी॥ ॥खन्यमानेचदाहोत्रेपाषा
णःप्राप्यतेतदा॥धनायुक्तिवतासस्यदिष्टकासुधना
गमः॥१५॥कपालांगारकेशादौव्याधिनापीडितोभवेत्॥

टी० भूमी खोलेने के काल में नीचे पक्षर निकले तो धन आया था धान
बहुत जानना ईशान निकले तो धन प्राप्ति जानना और हाड को दूला
केश नीचे निकले तो रोग पीड़ित हो जाहै।—

स्वातन्त्र्ये ॥ ॥ कपि शीर्षप्रमाणेन प्राचाणैः पूरयेत्
दृढं ॥ स्वातन्त्र्यं तत्संयुक्तं ततः प्राचीं प्रस्थापयेत् ॥ १६

टी० भूमीखोदनेकेबाद उसभूमीमें बंदरकेमस्तककेऐसेपाजण
सेमजबूतभरनाखातबरोबरकरनातबजाचीसाधनकरना -

नक्षत्रसंज्ञाविचारः ॥ ॥ अन्यान्मैत्रान्गर्हस्थे चंद्रेण
न्योत्तरावनं ॥ पित्र्याहासवतस्तद्व्यागपरास्याहदंशुभं ॥ १४

टी० कृत्तिका से ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो घरका मुख दक्षिण दिशामे
बनावना और अशुभासे ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो घरका मुख उत्तर दि
शामे बनावना मघा से ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो घरका मुख पूर्व दिशामे
करना धनि शा से ७ नक्षत्र मे चंद्रमा होय तो घरका मुख पश्चिम दिशामे बनावना

* चंद्रविचार॥ पनलाभः प्रवासः स्यादायुः श्रीरामचंद्रमातुः॥

दक्षाग्रवामपृष्ठस्थो गृहकर्तुर्निशाकरे ॥१८॥

टी० घर बनावने वाले को दहिने चंद्रमा होय और घर बनावे तो धन लाभ सन्मुख होय तो प्रवास बाँए होय तो आयुष्य बड़ी पीछे होय तो चौरका भय ऐसा चंद्रफल जानना -

आपादिसाधन ॥ ॥ गृहेशकरमानेन गृहस्यायादिसाध

येत् ॥ करैश्चेन्नेष्टमायादिसाध्य मंगुलिकस्तथा ॥१९॥

टी० जो घर बनावे उसके हाथ से घरनापना और लाभ खर्ची इस्का साधना करना कदाचित् हाथ से अनिष्ट आवे तो अंगुली से साधन करना -

क्षेत्रफल ॥ ॥ विस्तारगुणितं दैर्घ्यं गृहक्षेत्रफलं भ

वेत् ॥ तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायध्वजादिकः ॥२०॥

टी० स्थान की चौडई लंबई से गुण देना और - से भाग लेना शेष जोर है सो ध्वजादिक से आय होता है सो गृहका क्षेत्रफल जानना -

आपादिकनाम ॥ ॥ ध्वजो धूमो घसिंहः श्वा सौरभेयः ख

रोगजः ॥ ध्वांसश्चैव क्रमेणै तदोपाष्टकमुदीरितं ॥२१॥

टी० ध्वज धूम सिंह कुकुर बैल गर्दभ हाथी ध्वांस यह आय जानना - वर्ण परत्वे ॥ ॥ ब्राह्मणस्य ध्वजो ह्येयो सिंहो वै सन्निय

स्य च ॥ वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥२२॥

टी० ब्राह्मण को ध्वज आय शुभ सन्निय को सिंह आय शुभ वैश्य को बैल आय शुभ सर्वजाती को गज आय शुभ जानना -

फल ॥ ॥ कीर्तिः शोको जयो वैरं धनं निर्धनता सुखं

रोगश्चेति गृहारं भेध्वजादीनां फलं कमात् ॥२३॥ ॥

टी० ध्वज आय होय तो कीर्ति धूम होय तो शोक सिंह होय तो जय कुकुर होय तो वैर बैल होय तो धन गर्दभ होय तो निर्धन गज होय तो सुख ध्वांस होय तो रोग यह प्रकार से आठो मे आय का फल जानना -

नक्षत्रप रत्ने व्ययसाधन ॥ ॥ पूर्वद्वारे वृषः श्रेयान् गजः प्रा

ग्यमदिद्व्युखः ॥ क्षेत्रमष्टाह तं धिष्ये विभक्तं स्याद्गृहस्य

भम् ॥२४॥ भेष्ट भक्ते व्ययः शेषमायादित्वा व्ययः शुभः ॥ ॥

टी० घर के पूर्व द्वार बनावने में वृष आय श्रेष्ठ जानना और दक्षिण

द्वारको गज आय श्रेष्ठ जानना और भागे जो क्षेत्र फल व ता पाहे उत्तो
८ से गुण देना और २० से भाग लेना शीघ्र है सो घर का नक्षत्र जान
ना वह नक्षत्र को फिर आठ से भाग लेना तो घर का व्यय होता है सो
आय से जो उहोयते सु ५ अगिक होय तो आयु भजाना —

गृह राशी ॥ ॥ अश्विन्यादि च यो मे षो मथादि नितयेह

रि ॥ मूलादि चितये धन की भद्र गं प्रो क राशि सु ॥ २५ ॥

टी० गृह का नक्षत्र अश्विनी भरणी कृत्तिका यह तीन नक्षत्र होय तो
घर की पैदाई की जानना मघा पूर्वा उत्तरा यह तीन नक्षत्र मे सिंह रा
शी जानना मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा यह तीन नक्षत्र मे धन राशी जा
नना और जो नक्षत्र राशी इस्मि क्रम से दो २ नक्षत्र एक १ राशी मे जानना
इसरीत से घर का नक्षत्र और राशी इस्का जान करना —

गृह कानाम ल्यावने का प्रकार

गृहस्य पूर्वतो दिक्षु केवात् कक्षा चिह्नं तिन ॥

संस्थाप्या हि दुर्जानकस्तन्मि त्या बोद्धुं शक्यः ॥ २६ ॥

टी० घर के चारो दिशामे पूर्वादि क्रम से अंक देखना जैसे पूर्व मे १ द
क्षिण मे २ पश्चिम मे ४ उत्तर मे ८ इस प्रकार से अंक स्थपन करना औ
र गृह का मुख जिस दिशामे होय वह अंक लेना और घर मे जिस दिशा
मे दखाना अथवा २ अथवा ३ अथवा जो होय वह संख्या का अंक
लेना ऐसे यह दूनों अंक एकत्र करना और उस अंक मे १ और मिला
वना जो संख्या अंक होय सो सोलह नाम मे नाम रखना —

गृह के नाम ॥ ॥ ध्रुवं धान्यं जय नंदं सूर्यं कांतं मनोरमं

रम्यं ॥ सुमुखं दुर्मुखं क्रूरं विप्रदं धनं दक्षयम् ॥ २७ ॥

॥ आक्रंदं विपुलं विजयं विजयं चेति बोद्धुं श ॥ गृ

हं ध्रुवादि कं होयनाम तुल्य फलं प्रदम् ॥ २८ ॥

टी० घर के सोलह नाम ध्रुव धान्य जय नंद सूर्य कांत मनोरम सुमुख
दुर्मुख क्रूर विप्रद धन दक्षय आक्रंद विपुल विजय यह ध्रुवादि
सोलह नाम हैं इन का नाम के सुमान फल जानना —

ज अंश ल्यावने का प्रकार ॥ ॥ अथ येन संयुते स्तेन गृह नामान्विते

क्षरे॥ त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषां द्वितीयोऽंशो न शोभनः॥२९॥

टी० पूर्वमे लाभ और खर्चा जो कहा है सो खर्चा भूमी के फलमे मि
लावना और घरकाना मास्तर मिलाय देना तीनसे भाग लेना शेष
२ बचे तो अशुभ और जो बचे सो शुभ जानना —

गृहका भाग॥ ॥ नवभागं गृहं कुर्यात्पंचभागं तु दक्षि
णे॥ त्रिभागं वामतः कुर्याच्छेषं द्वारं प्रकल्पयेत्॥३०॥

टी० घरका ९ भाग करना उसमे ५ भाग दक्षिण दिशामे घर बनावना
और ३ भाग उत्तर दिशामे और शेष मध्यमे द्वार की योजना करना —

गृहद्वार॥ ॥ द्वारस्योपरि यद्वारं द्वारस्यान्यच्च संमु
खं॥ व्ययदंतनदातच्च न कर्त्तव्यं शुभेषुभिः॥३१॥

टी० अपना घर के दरवाजे के ऊपर दूसरा दरवाजा करना नही औ
र दूसरे का दरवाजा सामने होय तो अपना दरवाजा उसके सामने क
रना नही क्योंकि नाशदायक होता है —

गृह योजना॥ ॥ स्नानागारं दिशि प्राच्या माग्नेयां
पचनालयं॥ ग्राम्यायां शयनागारं नैर्ऋत्यां शस्त्र
मंदिरम्॥३२॥ प्रतीच्यां भोजनागारं वायव्यां पशु
मंदिरं॥ भांडकोशं चोत्तरस्यां ईशान्यां देवमंदिरं॥३३॥

टी० स्नान करने का स्थान पूर्व दिशामे करना अग्नि दिशामे पाक स्थान
न दक्षिण दिशामे शयन स्थान नैर्ऋती दिशामे शस्त्र का स्थान पश्चि
म दिशामे भोजन स्थान वायु दिशामे पशु स्थान उत्तर दिशामे भांडार
और द्रव्य स्थान ईशान्य दिशामे देवता स्थान यह प्रकारसे आठो
दिशामे घर की योजना करना —

अल्पदोष॥ ॥ अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषाय न भवेद्
हं॥ आयव्ययौ प्रयत्नेन विरुद्धं भंचवर्जयेत्॥३४॥ ॥

टी० घर बनावने मे थोड़े दोष आवे और गुण बहुत आवे तो वह घर दोषकारक हो
तानही परंतु आयव्यय और दोषित न होव दृष्टा विचार करके त्याग करना —

वास्तुचक्रकानाम॥ ॥ आरंभे वृषभं चक्रं स्तंभे रोगंतु
कूर्मकं॥ प्रवेशे कलशं चक्रं वास्तुचक्रं बुधैः शुभम्॥३५॥

टी० घरके आरंभमें वृष चक्र देखना शंभके स्थापनमें कूर्म चक्र देखना प्रवेशकालमें कलश चक्र देखना ऐसा यह वास्तु चक्र देखना—

गृहारंभमास॥ ॥ सौम्यफाल्गुन वैशाख भाद्र आषाढ कार्तिकः॥ मासाः स्युर्गृहनिर्माणेषु आरोग्यधनप्रदाः॥ ३६॥

टी० पौष फाल्गुन वैशाख भाद्र १२ आषाढ कार्तिक इन्होंने महिने में घर बनावनेको आरंभ करना तो पुत्र आरोग्यता धन प्राप्त होता है

मासफल॥ ॥ शोकोधान्यपंचतानिः पशुत्वं स्वाप्ति
र्भैस्त्वं संगरं भृत्यगणं॥ सच्छौभातिं बन्धि भौतिं च
लक्ष्मीकुपुंश्चित्राया गृहारंभमासे॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥

टी० वास्तुहिनेमें घर बनावनेका फल— चैत्रमें शोक वैशाखमें भानु ज्येष्ठमें मृत्यु आषाढमें पशुहानी आषाढमें द्रव्यप्राप्ति भाद्रपदमें हरिद्र आश्विनमें लडाई कार्तिकमें सेवकनाश मार्गशीर्षमें धन प्राप्ति पौषमें पुत्रप्राप्ति माघमें अधिक धन फाल्गुनमें लक्ष्मी प्राप्ति सप्तकारमें चैत्रदिक बार महिनेका फल जानना—

मुखदिशा परत्वे॥ ॥ कर्क नक्षत्र हरिकुंभ गतेर्के
वैपश्चिन्मसुखानि गृहाणि॥ नीलिमेघवृषवृश्चि
कयाते दक्षिणोत्तरमुखानि बद्धंति॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥

टी० कर्क मकर सिंह कुंभ यह राशीके सूर्यमें घरका मुख पूर्व और पश्चिममें करना और तुला मेष वृष वृश्चिक यह राशीके सूर्यमें घरका मुख दक्षिण और उत्तरमें करना शुभ—

गृहारंभेनसूत्र॥ ॥ मृगशिरा मृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रवरत्रये॥
धनिष्ठाहितये पौष्णो गृहारंभः प्रशस्तते॥ ३९॥ आदिस्पृधो
मवर्ज्ये तु सर्वे वाराः शुभावहाः॥ चंद्रादिसुबलं लब्ध्वा लभे
शुभमिरीक्षिते॥ ४०॥ सप्तमोच्छ्रायस्तु कर्तव्यो अन्यत्र परिव
र्जयेत्॥ प्रासादेऽप्येवमेव स्यात्कूपवापीषु चैव हि॥ ४१॥ ॥ ४२॥

टी० तीनों उत्तम मृग रोहिणी पुष्य अनुषाधा हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका रेवती यह नक्षत्रमें गृहका आरंभ करना शुभ और रविवार मंगलवार छोड़को सबकारमें शुभ सुख बल प्राप्त

प्राप्ती लक्ष्यकोश भदेखते होय ऐसेशुभकालमेखंखडाकरना औ
र अन्यत्र त्यागकरना घर कूँवा बावली यहकरना-

वृषचक्र ॥ ॥ त्रिवेदाब्धि त्रिवेदाब्धि द्वित्रिभेष्वर्कतः

शशी॥ कुर्याद्ब्रह्मणो समुद्रा संस्थैर्यलक्ष्मीं परिद्रतां ॥

॥४२॥ धनं व्याधिं क्रमात् मृत्युं प्रवेशारंभयोर्दृषः ॥७॥

टी० सूर्यनक्षत्रसेदिन नक्षत्रतक गिननेकाक्रम प्रथम ३ नक्षत्रमे
लक्ष्मी द्वितीय ४ नक्षत्रमेउद्वास तृतीय ४ नक्षत्रमेस्थिरता चतुर्थ
भागमे तीननक्षत्रमे लक्ष्मी पंचमभागमे ४ नक्षत्रमे दरिद्रता ष
ष्ठभागमे ४ नक्षत्रमे धन सप्तमभागमे दो नक्षत्रमे रोग अष्ट भाग
मे तीननक्षत्रमे मृत्युकारक यहप्रकारसेवृषचक्रदेखना जिसदिन
शुभनक्षत्र आवेउसदिन घरबनावनेको आरंभकरना -

शिलान्यासः ॥ ॥ दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा पूजां शिलान्य

सेत्यथमं॥ शेषाप्रदक्षिणेनस्तंभाश्चैवप्रतिष्ठाप्याः॥४३॥

टी० पहिले पूजा कर को प्रथम पूर्व और दक्षिण के बीच में आग्नेय दिशामें
हिले पाषाण भरना फेर प्रदक्षिण क्रमसे भरना दूसरी तिथिसे स्तंभ स्थापन भी करवा

नक्षत्रपरत्वे शिलान्यासः ॥ ॥ शिलान्यासः

प्रकर्त्तव्यो गृहाणां श्रवणे मृगे ॥ पौष्णे हस्ते

चरोहिण्यां पुष्पाश्विन्युत्तरात्रये ॥४४॥ ॥

टी० खातमे पत्थर भरना श्रवण मृग रेवती हस्त रोहिणी पुष्य
अश्विनी तीनो उत्तरा इतने नक्षत्रमे शिलान्यासकरना—

शेषकामुख॥ ॥ कन्यासिंहेतुलायां भुजगपतिसुखंशं भुको

णेमिखातं वायव्ये स्यात्तदा स्यंत्वलिधनमकरे ईशखातं

वदन्ति ॥ कुंभे मीने च मेषे निर्ऋतिदिशि मुखं खातवाप्यव्यको

णेचा ग्येकोणे मुखं वैद्यमिश्रुनगतैकैर्देहसखातं ॥४५॥

टी० कन्या सिंह तुला यहलघ्नमेशेषकामुख ईशान्यकोणमे तो अग्नि
कोणमे स्वात भरना वृश्चिक धन मकर यहलघ्नमेशेषकामुख वा
युकोणमे तो ईशान्यकोणमे स्वात भरना कुंभ मीन मेष यहलघ्नमे
शेषकामुख नैऋतिकोणमे तो वायुकोणमे स्वात भरना वृष मिथुन

कर्क पहल भगेश का मुख अधि कोण में तो निर्मल कोण में रख
त भरना

दुष्ट योग

वज्र व्याघात भूल व्याघात पात भृगु गंडकः ॥

विष्णु भ परिधौ व न्यौ वारौ मंगल भास्करौ ॥ ४६ ॥

टी० वज्र व्याघात भूल व्याघात पात विष्णु भ परिधौ व न्यौ वारौ मंगल भास्करौ और
मंगल रावि इनके चारों ओर बनावना नही —

कूर्म चक्र ॥ ॥ तिथिस्तु पंचगुणिता कृत्तिका द्युस
संयुता ॥ तथा द्वादशमिश्चाचन व भागेन भाजिता ॥ ४७ ॥
॥ फल ॥ जले वेदा मुनिश्चंद्र स्थले पंचद्वयं वसु ॥ वि
षद कन वचा काशौ त्रिविधं कूर्म लक्षणं ॥ ४८ ॥ जले
लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्तथैव च ॥ आका
शे मरणं प्रोक्तं मिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥ ४९ ॥ ७ ॥

टी० जिस तिथी में घर आरंभ करना होय उसमें कूर्म चक्र देखना जो
तिथी होय उसमें पांच से गुण देना और कृत्तिकादि से जो नक्षत्र होय
सो युक्त करना और १२ विद्या घनांतर ९ से भाग देना शेष ३।७।१२
हेतो कूर्म जल स्थान में जानना फल लाभ और शेष ५।२।० रहे तो
कूर्म भूमी पर जानना फल हानी और शेष ३।६।९ रहे तो कूर्म आका
श में जानना फल मरण ऐसा तीन प्रकार का कूर्म चक्र जानना —

स्तंभ चक्र ॥ ॥ सूर्याधिष्ठितं बह्वयं प्रथमतो मध्ये त
था विंशतिस्तंभा ग्रह स संख्यया मुनिवैरुक्तं मुहूर्ते शु
भं ॥ फल ॥ स्तंभा ये मरणं भवेत्स गृहपते मूलो धनायैव यो
मध्ये चैव तु सर्व सौख्यमतुलं प्राप्नोति कृत्वा तदा ॥ ५० ॥

टी० सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक देखने का क्रम प्रथम दो वक्षत्र
स्तंभ के मूल में फल धन लाभ और दूसरा ३० वक्षत्र स्तंभ के मध्य
में फल सर्व सौख्य कारक और तृतीय ६० वक्षत्र स्तंभ का मध्य फल मर
ण तो जिस नक्षत्र में शुभ फल आवे उसमें स्तंभ खड़ा करना शुभ —
धरतरु खने का मुहूर्त ॥ ॥ मूलो पौं भे त्रिचक्र गृहपति
मरणं पंचगर्भे सुखे स्यात्पुण्ये देवा इच्छा सं धन सुख

सुखदंपुच्छदेशेष्टहानिः॥ पश्चाद्देयं त्रिकुसं
गृहपति सुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्येर्साच्चंद्रः
संप्रतिदिनगणयेद्यो भवचक्रे विलोक्य ॥ ५१ ॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक देखने का क्रम धरनरखने के वास्ते
देखना प्रथम ३ नक्षत्र धरन का मूल स्वाती से जानना फल घरबनावने
वाले का नाश दूसरे ५ नक्षत्र मे गभसुख तीसरे ८ नक्षत्र मे मध्य धन
सुतसुख चवथे ८ नक्षत्र मे पुच्छ फल मित्रनाश पांचवे भाग ३ नक्ष
त्र मे घरबनावने वाले को सुख भाग्य पुत्र धन दायक जानना ऐसा
स्वाती नक्षत्र से अंभचक्र देखना -

द्वारचक्रं ॥ ॥ अर्कोच्चत्वारिंशत्साणि ऊर्ध्वं चैव प्र
हापयेत् ॥ द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्द्वै शाखायां च चतु
श्चतुः ॥ ५२ ॥ अधश्चत्वारिंशदयानि मध्ये त्रीणि प्र
हापयेत् ॥ ऊर्ध्वं तु लभते राज्यमुद्वासं कोणकेषु च
॥ ५३ ॥ शाखायां लभते लक्ष्मीर्मध्ये राज्यप्रदं तथा ॥
अधस्ते मरणं प्रोक्तं द्वारचक्रे प्रकीर्तितम् ॥ ५४ ॥

टी० द्वारचक्रबनावने का प्रकार सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक देखना
प्रथम ४ नक्षत्र मे द्वारका ऊर्ध्व भाग फल राज्यप्राप्ती द्वारके कोण ४
तो दो २ नक्षत्र मे कोण फल उद्वास द्वारकी शाखा २ तो दूनो तरफ ४
नक्षत्र मे लक्ष्मी प्राप्ती द्वारका मध्य ३ नक्षत्र फल राज्य प्राप्ती द्वारकी
डेवडी पर ४ नक्षत्र फल मरण ऐसा यह द्वारचक्र जानना -

अग्निचक्रं ॥ ॥ सेकातिथिर्वारयुता रूता प्रा
शेषे गुणे भ्रेभुवि वन्हि वासः ॥ सौरव्याय होमेश
शिशुगमशेषे प्राणार्थना शौटिविभूतलेच ॥ ५५ ॥

टी० जोतिषी मेशांती करना होय तो अग्निका वास देखना तिथी मे
१ मिलावना और जो बार होय सो मिलावना ४ से भाग लेता शेष ३ अ
थवा ० शून्य आवे तो अग्निका वास मृत्युलोक मे जानना फल सौख्य
प्राप्ती शेष १ आवे तो अग्निका वास स्वर्ग मे फल प्राणनाश शेष २ आ
वे तो अग्निका वास पाताल मे फल अर्थनाश जानना -

ग्रहचक्र॥ ॥तरणियिडुगुभास्करिचंद्रमाः
कुजसुरेज्यविधुंतुदकेतवः॥रविमनोदिनभंग
गणेशमास्त्रतिगंगत्रितयंत्रितयंत्रयसेत॥५६॥

टी० सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतकगिननेकतकम प्रथम ३ नक्षत्रमेसु
र्व फल अशुभ द्वितीय ३ नक्षत्रमेसु फल शुभ तृतीय ३ नक्षत्रमे
शुभ फल शुभ चतुर्थ ३ नक्षत्रमेशानी फल अशुभ पंचम ३ नक्षत्रमे
चंद्र फल शुभ षष्ठ ३ नक्षत्रमेमंगल फल अशुभ सप्तम ३ नक्षत्रमे
गुरु फल शुभ अष्टम ३ नक्षत्रमेराहु फल अशुभ नवम ३ नक्षत्रमे
केतू फल अशुभ ऐसानवग्रहकाचक्रदेखना -

ग्रहप्रवेशकाक्रम॥ ॥अथप्रवेशेनवमंदिरस्थ
मात्रानिरुत्तात्तथ भूपतीनां॥सौम्यायनेपूर्वदि
नेविधेयंवास्त्वर्चनंभूतबलिश्चसम्यक्॥५७॥

टी० मात्राकेवात् नवीनघरमेप्रवेशकरना राजाकादर्शनकरना
तोपहिलेदिनवास्तु पूजन भूतबली करना उत्तरायणमेकरना
अन्यदीप॥ ॥विज्ञानुराधामृगशौष्णपुष्यस्वा
तीश्रविष्ठाश्रवणंचमूलं॥वारेष्वस्तूर्यसितिजेष्ण
रित्तातिथौप्रशस्तोभवनप्रवेशः॥५८॥५९॥

टी० चित्राअनुराधा मृगश्वरी पुष्यस्वाती धनिष्ठाश्रवण मूल यहनक्षत्र
मेघरमेप्रवेशकरनाओर रवि मंगलयहवार रित्तातिथीदस्तायागकरना
कलशचक्रं॥ ॥प्रवेशेकलशोर्कसौत्यंचनागाश्रवट्
क्रमात्॥अशुभंचशुभंतेयमशुभंचशुभंतथा॥५९॥

टी० कलशचक्रदेखना सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतकदेखना प्रथम
३ नक्षत्रअशुभ द्वितीय ३ नक्षत्रशुभ तृतीय ३ नक्षत्रअशुभ चतुर्थ ३
नक्षत्रशुभ यहप्रवेशकालमेदेखना कलशचार भाग कल्याणकरना -

नामाकलक्षण॥ ॥रंध्रात्प्रादुर्भूताद्यायात्पंचस्वर्कस्थि
तेक्रमात्॥पूर्वाशादिमुखं गेहविशोद्दामोभवेदत्॥६०॥

टी० घरमे प्रवेशकालमे सूर्यदामकथितहे सोक मप्रवेशालगमे
अष्टमस्थानसे पंचमस्थानमेसूर्यहोय ओर घरका मुख पूर्वदि

शामे वैसा घर का मुख दक्षिण दिशामे और पंचम स्थान मे पंचम स्थान मे सूर्य और घर का मुख पश्चिम दिशामे और द्वितीय स्थान से पंचम स्थान मे सूर्य और घर का मुख पश्चिम दिशामे और एकादश स्थान से पंचम स्थान मे होय तो सो वा मार्क होना है प्रवेश मे शुभ-

गृह शुद्धी ॥ ॥ त्रिकोण केन्द्र गैः शुभैस्त्रिषष्टलाभ संस्थितैः ॥ असद्गृहैः स्थितोदये गृहं विशेषं ह्यलेविधौ ॥ ६१

टी० घर मे प्रवेश करने के वास्ते लग्न शुद्धी गृह प्रवेश लग्न से त्रिकोण १।५ केन्द्र १।४।७।१० यह स्थान मे शुभ ग्रह होय और तृतीय ३।६।११ यह स्थान मे पाप ग्रह होय स्थिर लग्न होय चन्द्र बल मे नवीन घर मे प्रवेश करना शुभ

अन्य मत ॥ ॥ त्रिषडा यगतैः पापैरष्टांतं तरगैः शुभैः ॥ चंद्रे लग्नारि रंध्रात्पवर्जिते स्याच्छुभं गृहं ॥ ६२

टी० तृतीय ३।६।११ इतने स्थान मे पाप ग्रह शुभ और शुभ ग्रह ८।१२ स्थान छोड़ को शुभ और चंद्रमा १।४।८।१२ यह त्याग करना और गृह प्रवेश करना शुभ-

अन्य मत ॥ ॥ धन केन्द्र त्रिकोण स्थः स्त्रीण चंदोनशो

भनः ॥ शत्रोर्नवांशगः खेटः खास्त संस्थोपिनो शुभः ॥ ६३

टी० गृह प्रवेश लग्न से स्त्रीण चंद्रमा १।४।७।१०।१।५ इतने स्थान मे अशुभ और शत्रू के नवमांश मे कोई ग्रह होय को १०।७ स्थान मे होय तथा पि शुभ नही ऐसा यह विचार कर कोतब घर मे प्रवेश करना शुभ-

गृहायुष प्रमाण ॥ ॥ रुग्ण जीवः सुखे शुक्रौ बुधः कर्मण्य

रौरविः ॥ रविजः सहजे नूनं शतायुः स्यात्तदा गृहं ॥ ६४

टी० घर के आरंभ काल से लग्न मे १ गुरु होय ४ स्थान मे शुक्र १० स्थान मे बुध ६ स्थान मे सूर्य ३ स्थान मे शनी यह ऐसी संस्था होय तो घर का आयुष्य १०० वर्ष निश्चय कर को जानना -

अन्य मत ॥ ॥ भृगुर्लगे बुधो व्योम्निलाभेर्कः केन्द्रगो

शुरुः ॥ यस्यारंभे च तस्यायुर्वत्सराणां शतद्वयं ॥ ६५ ॥

टी० घर के आरंभ काल से लग्न मे शुक्र १० स्थान मे बुध ११ स्थान मे सूर्य केन्द्र मे गुरु ऐसे ग्रह योग मे घर आरंभ होय तो वह घर का आयुष्य २०० वर्ष जानना

अन्यमतः ॥ ॥ स्वोच्चवर्तिनिभृगौविलग्नमेदेव
मंत्रिणिरसातलेशवा ॥ स्वोच्चमेरविमुलेगया
यगेस्यात्स्थितिश्चमुधिरंसहप्रिया ॥ ॥ ॥

टी० घरके आरंभकालमें शुक्र ३१ ने उच्चका होय को रू प्रसे होय ग
रु ४ स्थानमे होय उच्चकाशनी ११ स्थानमे होय ऐसे लग्न प्रहरी मे
घर बनावने को आरंभ करना तो लक्ष्मी युक्त बहुत काल रहता है-

अन्यमतः ॥ ॥ जीवोच्चोभृगुज्योत्स्निलाभगौभूमि

भानुजो ॥ प्रारंभेयस्यतस्यायुःसमाशीतिःसहप्रिया ॥ ॥

टी० घर बुधशुक्रयह १० स्थानमे होय ११ स्थानमे होय ऐसे लग्न होय ऐसे
लग्नमे जो घर बनावने को आरंभ होय तो धन युक्त ८० वर्ष आयुष्य जानन

अन्यमतः ॥ ॥ स्वर्षमेहिमगेलाभौसुरेज्येकेद्रसंस्थि

ते ॥ धनधान्यसुतारोग्ययुक्तं धाम निरंभवेत् ॥ ॥ ॥

टी० रक्तकाचन्द्रमा ११ स्थानमे होय गुरुकेन्द्रमे ११ ५० ७ ॥ होय तो व
ह घर धनधान्यपुत्रविशेषता वृद्धकर को युक्त बहुत काल पर्यंत रहता है

शल्यशोधन ॥ ॥ कुंडायेष्ट्योपनिशोध्यहेतवेष्टमुखाद्य

प्रश्नमस्तुटीभवेत् ॥ वर्गोदिवर्णः किलतद्विधिसूतं शल्येषु

नीद्रेहपयस्तुमध्यतः ॥ ॥ ॥ स्तुतेष्टदेवतांष्टुर्वचनस्याद्य

महार ॥ गृहीत्वा तु नतः शल्याशल्यमम्यमिच्छार्थते ॥ ॥ ॥

टी० कुलकेवास्ते अश्वघारवनावने में शल्यशोधन करवाष्ट्रकके
मुखका प्रथमाक्षर उसकी वर्गसे रखा देखना अवगोदिवर्णान आदि
शामे जानना इष्टदेवता का स्मरण करको ज्योतिषीसे पूछना तब जो श
ल्य आवे उस्का निचार करना नीचे के लक्षणों से ही है-

प्रश्नाक्षरफलं ॥ ॥ पूर्व ॥ पूच्छायां यदि अः प्राच्यां नरश

ल्यंतदा भवेत् ॥ साहैहता प्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्यु

कृत् ॥ ७१ ॥ आग्नेय ॥ आग्नेय्यादिशिकः प्रश्ने रवः शल्य

करहये ॥ राजदंडो भवेत्तत्र भयने बनिवर्त्तते ॥ ७२ ॥

दक्षिण ॥ पाण्यायादिशिकः प्रश्नेतदा स्यात्कटिसं

स्थितं ॥ नरशल्यं गृहेतस्य मरणं निरोगतः ॥ ७३ ॥

नैर्ऋत्य ॥ नैर्ऋत्यां यदि तः प्रश्ने सार्द्धहस्तादधस्थले ॥
 शुनोस्थिजायते तत्र बालानां जायते मृतिः ॥ ७४ ॥ प
 श्चिम ॥ तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं व्रजायते ॥
 सार्द्धहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ ७५ ॥ वाय
 व्य ॥ वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषां गाराश्चतुष्करे ॥ कुर्व
 तिमित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं तदा ॥ ७६ ॥ उत्तर ॥ उदी
 च्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं करादधः ॥ नच्छीघ्रं निधै
 न त्वाय कुबेरसदृशस्य हि ॥ ७७ ॥ ईशान्य ॥ ईशान्यां यदि
 शः प्रश्ने गोशल्यं सार्द्धहस्ततः ॥ न ह्यो धनस्य नाशाय जा
 यते गृहमेधिनः ॥ ७८ ॥ मध्य ॥ हृषयामध्यकोष्ठे च वक्षो
 मात्रं भवेदधः ॥ नृकपालमशोभस्मलो हंत कुलनाशकृत् ७९

टी० प्रश्नकालमे पृच्छकके मुखसे प्रथम अवगैका अक्षर होय तो पूर्व
 केतरफ १ ॥ हाथके नीचे मनुष्यके हाड है ऐसा जानना वह न निकाले
 तो मृत्युकारक होता है १ और कवर्गका अक्षर प्रथम होय तो अग्निदि
 शामे २ हाथके नीचे गदहेका हाड है ऐसा जानना वह न निकाले तो राजा
 से दुंड होता है २ और चवर्गका अक्षर होय तो दक्षिणदिशामे कमर भर
 के नीचे खोदना तो मनुष्यके हाड है वह न निकाले तो मरणसमान बहु
 त काल रोगी जानना ३ दवर्गका अक्षर होय तो निर्ऋतीदिशामे १ ॥ हाथके
 नीचे खोदना तो कुत्तेका हाड है वह न निकाले तो पुत्रकानाश जानना
 ४ तवर्गका अक्षर होय तो पश्चिमदिशामे लडकेका हाड है वह न
 निकाले तो घरमे स्वामीका वास होता नही ५ पवर्गका अक्षर होय तो
 वायुदिशामे ४ हाथके नीचे भूसाको दला है वह न निकाले तो मित्रका
 नाश दुष्ट स्वप्न ६ यवर्गका अक्षर होय तो उत्तरदिशामे १ हाथके नीचे ब्राह्म
 णके हाड है वह न निकाले तो कुबेर ऐसा धनी होय तथा पितृही होय
 गा ७ शवर्गका अक्षर होय तो ईशान्यदिशामे १ ॥ हाथके नीचे गौका हाड
 है वह न निकाले तो गोधनका नाश ८ हृषय यह मध्यभागमे जानना इ
 स्मे कमर भर खोदना नीचे मनुष्यका कपाल भस्म लोह है वह न नि
 काले तो कुलकानाश जानना ऐसा जो वर्ग और दिशा इस्का विचा

रकरको शल्प देवना -

अन्यमत ॥ ॥ अकयात मनाकूनमदत्त बलिभो

जन ॥ गृहं न प्रविशेद्वं विषदा मा करं हित ॥ ७० ॥

टी० जिस घर को कवाड़ी न होय जिस घर की पाट न न होय जिस घर में बली पूजान भई होय उस घर में प्रवेश करना न होय सुखायक होना है सो जान

अन्यमत ॥ गृहं भोदितैर्मा सैर्धिष्यैर्वारे विशेद्गृहं ॥

टी० जिस भास में घर बनावने को भोर भ होय उसी में प्रवेश करना न ह्यत्र वार सब गृहं भ में तो है उसी में प्रवेश करना -

अन्यमत ॥ विशेत्सौम्यापनेहर्ष्यतृणागारं तु सर्वदा ॥

टी० घर में प्रवेश उत्तरायण में करना और ह्यपर का घर होय तो सब काल में प्रवेश करना हे सा घर का विचार कर को तब घर में प्रवेश करना

॥ इति वास्तुप्रकरणम् ॥

अथ यात्राप्रकरणं

शुक्रसन्मुख ॥ ॥ एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राष्ट्रवि

प्लवे ॥ विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १ ॥

टी० गांव के गांव में अथवा शहर के शहर में होय दुर्भिक्ष होय तब प्रवेश होय तब काल यात्रा होय तो विवाह और तीर्थ यात्रा में सन्मुख शुक्र का दे

अन्यमत ॥ ॥ पोष्यादावग्निपादांतं यावन्ति धुतिचं ॥ १ ॥

द्रमाः ॥ तावच्छुक्रो भवेत्तुः सन्मुखे गमनं शुभम् ॥ २ ॥

टी० रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका ग्रहनक्षत्र के प्रथम चरण में शुक्र अं परहता है तो सन्मुख शुक्र होय और यात्रा करे तो दोष नही -

शुभाशुभफल ॥ ॥ दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सन्मुखो हं वि

मंगलम् ॥ दामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेदस्तगः शुभः ॥ ३ ॥

टी० यात्रा काल में दक्षिण शुक्र होय तो दुःखदायक होना है सन्मुख शुक्र में यात्रा करे तो मंगलनाश दाम शुक्र होय तो शुभ

पृष्ठ शुक्र होय तो शुभ पूर्व में अस्त होय तो पश्चिम में यात्रा शुभ और पश्चिम में अस्त होय तो पूर्व में यात्रा शुभ यह प्रकार से शुक्र का विचार करना -

घातचंद्र॥ ॥ प्रयाणकाले युद्धे च कृषौ वाणिज्यसं

ग्रहे ॥ वादे चैव गृहारंभे वर्जयेत् घातचंद्रमाः ॥ ४ ॥

टी० यात्राकालमे युद्धकालमे खेती करनेमे बिनियाईमे वाद करनेमे
घरके आरंभ करनेमे इतने कर्ममे घातचंद्रमा का त्याग करना —

घातप्रकार॥ ॥ घाततिथिं घातवारं घातनक्षत्रमेव च

॥ यात्रायां वर्जयेत् साक्षैरन्यकर्मसु शोभनं ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

टी० घाततिथी घातवार और घातनक्षत्र इस्का त्याग बुद्धिवानने या
त्रामे मात्र करना और सब कर्ममें शुभ जानना —

मेघेरविर्मघाप्रोक्ता षष्ठी प्रथमचंद्रमाः ॥ वृषभे पंचमो

हस्तश्चतुर्थी शनिरेव च ॥ ६ ॥ मिथुने नवमस्वाती अश्व

मीचंद्रवासरः ॥ कर्के द्विरनुराधा च बुधः षष्ठी प्रकीर्ति

ता ॥ ७ ॥ सिंहे षष्ठश्चंद्रमाश्च दशमी शनिमूलके ॥

कन्यायां दशमश्चन्द्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥ ८ ॥ तुल्ये

रुह्ये दशमस्याच्छते तृतीयचंद्रमाः ॥ ९ ॥ श्रिके रेवती स

प्तदशमी भार्गवस्तथा ॥ १० ॥ धने चतुर्थी भरणी द्वितीया

भार्गवस्तथा ॥ मकरेष्टमो रोहिणी द्वादशी भौमवासरः ॥

॥ ११ ॥ कुंभे एकादशश्चाद्र्या चतुर्थी गुरुवासरः ॥ मीने

च द्वादशः सार्पे द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ १२ ॥ ॥ १२ ॥

टी० यह श्लोक का अर्थ चक्रमे देखना परंतु अपाने राशीसे घातचतुष्ट
य यात्रामे त्याग करना — ॥ घातचक्रम् ॥

राशी	मे	रु	मि	क	सिं	क	तु	रु	ध	म	कुं	मी
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु	मूल	श्रव	शत	रेव	भर	रोहि	आर्द्रा	आश्ले
तिथी	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

कालचन्द्र ॥ ॥ मेघे वेदावृषेष्टौ च मिथुने च तृतीयकः ॥

दशकर्के रविः सिंहे कन्या अंकः प्रकीर्तितः ॥ १२ ॥

षट्पुत्रे च भिन्ने खेदुर्धने रुद्राः प्रदीर्घिताः ॥ मरु
रेकः पयः प्रोत्ता कुंभे बाण उदाहृताः ॥ १३ ॥ मीने
अग्निः कालचंद्राः शौनके कश्चिद्गम्य वीत् ॥ १४ ॥
टी० मेषराशीको ४ चंद्रमको ८ चंद्र मिथुनको ३ चंद्र कर्कको १० चंद्र सि
को १२ चंद्र कन्याको ९ चंद्र तुलाको ६ चंद्र श्विक्को १० चंद्र धनको ११ चं
द्र मकरको ७ चंद्र कुंभको ५ चंद्र मीनको ४ चंद्र ऐसा बारहों राशी में जान
ना यह कालचंद्र शौनके ने कहा है सो सब शुभ कर्म में त्याग करना -

तिसी पर त्वे लग्न का त्याग

नंद्यामातिहयोस्तु तुलामकरपहलग्नकात्यागकरना ॥ मद्रा
यो मीनधनुषोऽकालस्तिष्ठति सर्वदा ॥ १४ ॥ ज
या यं रूमी मिथुन पोरिक्ता यां मेघकर्कयोः ॥ पू
र्णायां कुंभधनुषयोर्मनुष्यमरणं ध्रुवम् ॥ १५ ॥ ॥
टी० नंद्यातिथीको रूश्चिक सिंह तुलामकर पहलग्न का त्याग करना
भद्रातिथीको मीन धनलग्न का त्याग करना जयातिथीको कन्या और मिथु
न लग्न का त्याग करना रिक्तातिथीको मेघ कर्क लग्न का त्याग करना पूर्णा
तिथीको कुंभ और धनुष लग्न का त्याग करना क्योंकि मृत्यु नारक होते हैं -

यात्राको न सत्र ॥ ॥ हस्तदुर्मेघश्रवणाश्वि तिथि
पौष्णः श्रविष्ठा च पुनर्वसु च ॥ प्रोक्तानि पिष्यन्ता

नित वप्रपाणे त्यक्त्वा निपेन्वादि सप्तनाराः ॥ १६ ॥

टी० हस्त मृगश्रवा धा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु
पहनवन सप्त पावा करने को कथित है और ता श्रविष्ठा नी सरीतारा
पांचवी तारा अम्यतारा सातवी तारा यह ४ तारा का त्याग यात्रा में करना -

मध्यमनक्षत्रम् ॥ ॥ रोहिणी उत्तरा चित्रा मूलमाद्री तथैव

च ॥ षाटोत्तराभाद्रपदे प्रयागे मध्यमाः स्मृताः ॥ १७ ॥

टी० रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आद्री पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा उत्त
राषाढा यह नक्षत्र यात्रा करने को मध्यम मानना -

वर्ज्यमसत्रम् ॥ ॥ त्रीणि पूर्वी मघा ज्येष्ठा भरणी जन्मा क

तिकाः सार्पः स्वाती विशाखा च नित्यं गमनवर्जयेत् ॥ १८ ॥

कृत्तिका एकविंशत्या भरण्याः सप्तनाडिकाः ॥ एकादशमघाया
 श्रत्रिपूर्वाणां च षोडश ॥ १९ ॥ विशाखा सार्षप चित्रा सुस्वाती रौद्र
 चतुर्दश ॥ आद्यास्तु घटिकास्त्याज्याः शेषांशे गमनं शुभं ॥ २०
 टी० तीनो पूर्वा मघा ज्येष्ठा भरणी जन्म नक्षत्र कृत्तिका आश्लेषा स्वाती
 विशाखा यह नक्षत्र यात्रा मे त्याग करना कदाचित् बहुत संकट पड़े तो
 कृत्तिका की २१ घड़ी त्याग करना भरणी की ७ घड़ी मघा ११ घड़ी तीनो
 पूर्वा की १६ घड़ी विशाखा आश्लेषा चित्रा स्वाती आर्द्रा यह ५ नक्षत्र की
 १४ घड़ी यात्रा मे त्याग करना तो शुभ -

शुभाशुभवार ॥ ॥ अर्के क्लेशमनर्थकं च गमने सोमे
 च बंधुप्रियं चांगारेन लतस्करे ज्वर भयं प्राप्नोति चार्थं
 बुधे ॥ क्षमारोग्य सुखं करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रेशुभो
 मंदे बन्धनहानि रोगमरणान्युक्तानि गर्गादिभिः ॥ २१

टी० रविवार को गमन करे तो महाक्लेश और बहुत अनर्थ प्राप्ती सोमवार को
 बंधुप्रिय दर्शन मंगलवार को अग्नि चौर ज्वर भय प्राप्ती बुधवार को धन
 प्राप्ती गुरुवार को क्षेम आरोग्य सुख प्राप्ती शुक्रवार को लाभ प्राप्ती शनि
 वार को बंधन हानि रोग मरण प्राप्ती यह गर्गादिक मुनीने कथन किया सो
 होरा कथन ॥ ॥ वारात् षष्ठस्य षष्ठस्य होरा सार्द्धं (ज्ञानना

द्विनाडिका ॥ अर्कशुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवधरा सु
 तौ ॥ २२ ॥ गुरुर्विवाहे गमने च शुक्रो बौधे सौम्यः सर्वका
 र्येषु चंद्रः ॥ कुजे च गुरुं विराजसे वामं देव वित्तं इति
 होरयोगाः ॥ २३ ॥ यस्य ग्रहस्य वारस्य कर्म किंचित्त्वकी
 र्त्तितम् ॥ तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वकर्म विधीयते ॥ २४

टी० प्रथम होरा ज्ञान जिस दिन जो वार होय उस वार का होरा प्रथम २॥
 घड़ी बाद उसे जो षष्ठवार उसकी होरा ज्ञान ना रविवार को प्रथम ३॥ घड़ी
 सूर्य की होरा दूसरी २॥ घड़ी शुक्र की होरा तिसरी २॥ घड़ी बुध होरा चवथी
 २॥ घड़ी चंद्र होरा पाचवी २॥ घड़ी शनि होरा षष्ठ २॥ घड़ी गुरु की होरा
 सातवी २॥ घड़ी मंगल की होरा यह क्रम से जो वार होय उसकी होरा पहि
 ले होती है आगे कौन होरा मे क्या करना गुरु के होरा मे विवाह शु

के होरा में गमन बुध के होरा में बुध चंद्र के होरा में सब काम मंगल
के होरा में शुक्र सूर्य के होरा में राज सेवा शनी के होरा में द्रव्य संग्रह
यह क्रम से होरा में करना शुभ जिस बार में जो कर्म है सो पूर्व में कथि
त है सो कर्म उसके होरा में करना —

सूर्य होरा ॥ ॥ सूर्य स्य होरे राज की सुवस्त्रां कुमा
रिका विप्रचतुष्टयं च ॥ काकद्वयं द्वौ नकुलौ तथैव
चापस्तथैको वृषभस्तु गोश्व ॥ २५ ॥ ७ ॥ ॥

टी० सूर्य होरा में गमन करे तो रस्ते में घोड़ी वस्त्र सहित मिलेगा कुमारी का
चार ब्राह्मण १ कौवा १ नेउर २ नील कंठ १ बैल १ गो इतने में से कोई भी श
कुन रस्ते में मिलेगा ऐसा जानना —

चंद्र होरा ॥ ॥ चंद्र स्य होरे द्विज युग्म का क भे
री मृदंगा नकुलः खरो द्वौ ॥ हयश्च गोमेव शु
नस्तथैव पुष्पाणि न रीति यु मेव मार्गे ॥ २६ ॥

टी० चंद्र के होरा में गमन करे तो रस्ते में दो ब्राह्मण मिलेंगे कौवा नगारा
मृदंग नेउर गदहा अट घोड़ा गो मेढा कुत्ता और फूल दो स्त्री इतने
से कोई भी शकुन रस्ते में मिलेगा ऐसा जानना

मंगल होरा ॥ मार्जार पुट्टं कलहः कुटुंबे रजस्वला स्त्री युवन
स्य गृहः ॥ नपुंसकश्च वितथे द्विजश्च नृणां विमुक्तो धरणी धरस्य २७
टी० मंगल के होरा में गमन करे तो रस्ते में बिलाई की लड़ाई कुटुंब में
लड़ाई चतुर्मासी स्त्री धरकाजलना नपुंसक ३ कुत्ता नंगा ब्राह्मण सि
ह इतने में से कोई भी शकुन मिलेगा ऐसा जानना

बुध होरा ॥ बुध स्य होरे शकुनश्च सर्वः स्त्री पुत्र युक्ता कलशस्तु
पूर्णा ॥ पुचातक म्पाव गजौ कुमारः पुष्पाणि नारी रत्न दुर्पणश्च २८
टी० बुध के होरा में गमन करे तो रस्ते में सर्व शकुन स्त्री पुत्र युक्त पूर्ण क
लश चातक पक्षी नील कंठ पक्षी हाथील डका फूल स्त्री ऐसा इतने में
से कोई भी शकुन मिलेगा ऐसा जानना —

शुक्र होरा ॥ शुक्रिर्हि जातिर्गणिकान् भेदु स्त्री बाल पुक्ता स नलो घट
स्तु भूर्णा च का कोन कुली वरश्च संसारा जाय हवस्तु विद्या २९

टी० गुरूकेहोरा मेगमनकरेतोरस्तेमेब्राह्मणवेश्या गौस्त्रीबालयुक्त
जलकाघडा कंबलबादुशाला काक नेर बगुला पक्षी हंसपक्षी राजा
बहुत बनिया इतनेमेसेकोईभीशकुनमिलेगा ऐसाजानना —

शुक्रहोरा॥ ॥ शुक्रस्यहोरेगणिकाहिजेन्द्रः
काकत्रिकंचाथनपुंसकोवा॥ मयंहिमांसगण
कश्चधेनुर्धान्यंचशूद्रत्रितयंचवैश्यः॥३०॥

टी० शुक्रकेहोरा मेगमनकरेतोरस्तेमेवेश्याब्राह्मणकाक ३ नपुंसकम
द्यमांसज्योतिषीगौअन्न तीनशूद्र बनिया इतनेमेसेकोईभीशकुनमि
लेगाऐसाजानना. शनिहोरा

पतंगमूनोर्यवनश्चनग्नौरजस्वलास्त्रीचमृतंतथैव॥ पि

शाचगृध्रौविधवाचवन्दिर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचंड॥३१॥

टी० शनीकेहोरा मेगमनकरेतोरस्तेमेनंगा मुसलमान ऋतुमतीस्त्री प्रे
तपिशाच गृध्रपक्षी विधवास्त्री अग्नि नपुंसक जवान बडापराक्रमी इत
नेमेसेकोईभीशकुनरस्तेमेमिलेगाऐसाजानना यहसातग्रहकाहोराफल
प्रश्न॥ ॥ गमनंप्रतिरातस्तुसन्ध्यादर्शनेनच॥ (जानना.)

प्रतस्तांचैवसंभाषेत्सर्वानेतांश्चकीर्त्तयेत्॥३२॥

टी० राजाकोयात्राकालमेजोपूर्वमेशकुनकहासो होय अथवाउत्तम
वाणीकाश्रवणदर्शननहोय तोउस्का मनमेचितन करकोगमनकनाशुभ
वस्त्रधारण॥ ॥ रवौनीलंबुधेपीतकृष्णवर्णशनैश्च

रे॥ श्वेतंगुरौभृगौभौमेरत्तंसोमेतुचित्रकं॥३३॥ ॥

टी० रविवारको नीलवस्त्र बुधकोपीत शनीकोकृष्ण गुरूऔरशु
क्रकोसफेद मंगलकोलाल सोमवारको चित्रविचित्र यहप्रकार
से७ बारमे वस्त्रपरिहारको यात्राकरना -

पूर्वदिशामेवर्ज्य॥ ॥ मूलश्रवणशाक्रेषुप्रतिपन्नव

मीषुच॥ शनौसोमेबुधेचैवपूर्वस्यागमनंत्यजेत्॥३४॥

टी० मूलश्रवणज्योष्ठा यहनक्षत्रमेप्रतिपदा नवमी यहतिथीमे श
निवार सोमवारबुधवार यहवारमे पूर्वदिशामेयात्राकरनानही -

रक्षिणदिशामेवर्ज्य॥ पूर्वाभाद्रपदाश्विन्योपंचमीचत्रया +

दृशी॥ गुरुर्भीनेष्टाचार्त्तसयाम्ये सप्तविबर्जयेत् ॥ ३५॥
टी० पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी यहनसत्रमे पंचमीचणोदशी यहतिथीमेष
रुवार और पतिष्ठा आर्द्रा यहनसत्रमे दक्षिणदिशामे यात्रा कराना ही-
पश्चिमदिशामे वर्ज्य॥ रोहिण्यांचतया पुष्ये पक्षी चैव न तु
दृशी॥ औभाके गुरु वारे पुनगच्छेत्पश्चिमादिशं ॥ ३६॥
टी० रोहिणी पुष्य यहनसत्रमे पक्षी चैव न तु दृशी यहतिथीने मंगल रवि
गुरु इनके वारमे पश्चिममे यात्रा कराना ही-

उत्तरदिशामे वर्ज्य॥ करे चोत्तरफालगुन्यांहिती यादश
मीतथा॥ बुधेरवौ भौमवारे नगच्छेदुत्तरादिशं ॥ ३७॥
टी० हस्त उत्तरा फाल्गुनी यहनसत्रमे द्वितीया दशमी यहतिथीमे
बुध रवि मंगल इनके वारमे उत्तरदिशामे यात्रा कराना ही-

विदिकमूल॥ ॥ ईशान्यां शैशनौ शूलो आग्नेयां गुरु
सोमयो॥ वायव्यां भूमिपुत्रस्तु नैर्ऋत्यां शुक्रसूर्ययोः २८
टी० ईशान्यादिशामे बुध और शनीको दिशा शूल जानना अग्निदिशामे
गुरु और सोमको दिशा शूल जानना वायुदिशामे मंगलको दिशा शूल
जानना निर्ऋतिदिशामे शुक्र और रविको दिशा शूल जानना -

शूलदोषनाश होने के नास्ते भक्षण
सूर्यवारे घृतपीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा॥ शुद्धमंगारवारे
तु बुधवारे तिलानपि ॥ ३९॥ गुरुवारे दधिजेयं शुक्रवारे य
वानपि॥ माषां पुच्छाधाने वीरे शूलदोषोपशान्तये ॥ ४०॥
टी० रविवारको घीव प्राशन करकोत वयात्रा करे सोमवारको दुध म
गलको तुड बुधवारको तिल गुरुवारको दही शुक्रवारको जव शनि
वारको उहदि यह पदार्थ भक्षण करकोत वयात्रा करेः शुभ -

दिक्करोहदं॥ ॥ प्राचीं गच्छेत्तु तं प्राग् दक्षिणां प्राणि
लोदने॥ पश्चिमां लोहदं मीनशुद्धी चैव तु पयस्तथा ॥ ४१॥
टी० पूर्वदिशामे घृत भक्षण करको मयन करना दक्षिणादिशामे त
ल भक्षण पश्चिमदिशामे पल्लव भक्षण उत्तरदिशामे दुध भक्ष
ण करको यात्रामे मयन करना -

पंचकवर्ज्य ॥ ॥ शय्यावितानं प्रेताग्नि क्रिया काष्ठतृ

णार्जनं ॥ याम्यदिगामनं कुर्यान्न चन्द्रे कुंभमीनगे ॥ ४२

टी० कुंभके और मीनके चंद्रमामे खटिया बनावना नही प्रेतकी अग्नि क्रिया करनानही लडकी भूसा यह खरीद करनानही दक्षिणदिशामे यात्रा करनानही इतने कर्म पंचकमे करनानही.

सन्मुखचन्द्र ॥ ॥ करणभगणदोषं वारसंक्रान्तिदोषं कुति

थिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषं ॥ कुजशनि रविदोषं राहु

केत्वादिदोषं हरतिसकलदोषं चंद्रमा सन्मुखस्थः ॥ ४३ ॥

टी० करणदोष नक्षत्रदोष वारदोष संक्रान्तिदोष दुष्टतिथी दोषकुलिक यामदोष यामार्द्धदोष मंगल शनि रवि इनके वारका दोष राहु और के तुइनके दोष यात्रा कालमे चन्द्रमा सामने होय तो यह सब दोष नाश होते हैं.

चंद्रविचार ॥ ॥ मेषे च सिंह धनपूर्वभागे वृषे च कन्या म

करे च याम्ये ॥ तुले च कुंभे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने

दिशि चोत्तरस्यां ॥ ४४ ॥ फल ॥ सन्मुखे अर्धलाभाय दक्षिणे

सुरवसंपदा ॥ पृष्ठतः प्राणनाशाय चामे चंद्रो धनक्षयः ॥ ४५ ॥

टी० मेष सिंह धनग्रहा राशीका चन्द्रमा पूर्वमे रहता है और वृष कन्या म करग्रहा राशीका चन्द्रमा दक्षिणमे रहता है मिथुन तुला कुंभ यह रा शीका चन्द्रमा पश्चिममे रहता है कर्क वृश्चिक मीन यह राशीका चंद्र मा उत्तरमे रहता है आगे फल देखना यात्रा कालमे सामने चंद्र होय तो द्रव्यलाभ दहिने चन्द्रमा होय तो सुरव धन पीछे चंद्रमा होय तो प्राण नाश वाम चंद्रमा होय तो धन नाश यह विचार यात्रामे करना शुभ -

कालविचार ॥ ॥ पूर्वाण्हे चोत्तरांगच्छेत्वा च्यामध्यान्ह

के तथा ॥ दक्षिणे अपराण्हे तु पश्चिमे अर्द्धरात्रिके ॥ ४६ ॥ ॥

टी० दिनके प्रथम भागमे उत्तरदिशामे गमन करे और मध्यान्ह मे पूर्व दिशामे गमन करे और दिनके तीसरे भागमे दक्षिणदिशामे गमन करे और अर्धरात्री मे पश्चिमदिशामे गमन करे ऐसा कथित है सो जानना -

योगिनीविचार ॥ ॥ प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीयादिशि चोत्त

रे ॥ तृतीये कादशी वदौ ननु द्विदिशि नैर्जाते ॥ ४७ ॥ पंचत्र

योदशीवाग्धेवमी भूतं च पश्चिमे ॥ सप्तमी पूर्ववाग्धेव अमा
 वास्याष्टमीषावे ॥ ४८ ॥ फल ॥ पृष्ठे च शुभदा प्रोक्तावाग्धेवे
 रविप्रोबतः ॥ योगिनीमा भवेन्नित्यं प्रणयेषु भद्रं नृणां ॥ ४९ ॥
 टी० प्रतिपदा और नवमीको पूर्वदिशामे योगिनी जानना द्वितीयादश
 मीको योगिनी उत्तरदिशामे तृतीया एकादशीको योगिनी अग्निदिशामे
 चतुर्थीद्वादशीको योगिनी निर्ऋतीदिशामे पंचमीत्रयोदशीको योगि
 नी दक्षिणदिशामे षष्ठीचतुर्दशीको योगिनी पश्चिमदिशामे सप्तमी
 योगिमायोगिनी वायुदिशामे अमावास्या अष्टमी को योगिनी ईशान्य
 दिशामे जानना इस प्रकार से योगिनी देखना आगे फल यात्रा काल मे
 योगिनी पीछे होय तो शुभ बाँह होय तो शुभ ऐसे साविचार कर को यात्रा करना
 काल राहु ॥ अर्कोत्तरे वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधमे
 क्रैते च ॥ घाम्ये गुरौ वृद्धिदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्व प्रवदंति कालं ५०
 टी० काल विचार रविवारको काल उत्तरदिशामे जानना सोमवारको का
 ल वायुदिशामे मंगलको काल पश्चिमदिशामे बुधवारको काल निर्ऋ
 तीदिशामे गुरुवारको काल दक्षिणदिशामे शुक्रवारको काल अग्निदिशा
 मे शनिवारको काल पूर्वदिशामे जानना यह प्रकार से काल राहु का विचार करना
 अन्य मत ॥ रविदिन गुरु पूर्व सोम शुक्र च घाम्ये वरु
 णदिशितु भौमे चोत्तरे सोरि संस्थे ॥ प्रतिदिन मति मत्वा का
 ल राहुर्दिशानां सकलगमन कार्ये वाम पृष्ठे च सिद्धिः ॥ ५१ ॥
 टी० रविवार और गुरुवारको पूर्वमे यात्रा करे तो काल राहु वाम और
 पृष्ठ भागमे आचला है फल सर्व कार्य सिद्धी सोमवारको और शुक्रवा
 रको दक्षिणदिशामे यात्रा करना मंगलको पश्चिमदिशामे यात्रा करना
 शनिवारको उत्तरदिशामे यात्रा करना ऐसा काल राहु का विचार क
 रको तब यात्रा करना ॥

सुधित राहु ॥ ॥ इंद्रे वायौ यमे रुद्रे तो ये प्रौ शशि
 रससोः ॥ यामा ई सुधितो राहु भ्रमत्येव दिगाष्टके
 ॥ ५२ ॥ नतिश्चिर्न च न स्रजं न योगो न च चंद्रमोः ॥ सि
 ध्वांति सर्व कार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥ ५३ ॥ ॥

टी० पहिले प्रहर के अर्धमे सुधित राहु पूर्व मे रहता है दूसरे प्रहर के अर्धमे वायु दिशामे तीसरे यामार्द्ध मे दक्षिण दिशामे चवथे यामार्द्ध मे ईशान्य मे पाँचवे यामार्द्ध मे पश्चिम दिशामे षष्ठ यामार्द्ध मे अग्नि दिशामे सप्तम यामार्द्ध मे उत्तर दिशामे अष्टम यामार्द्ध मे निर्ऋति दिशामे सुधित राहु जानना ऐसा क्रम से आठो दिशामे राहु जानना या त्रिकाल मे दक्षिण सूर्य होय तो सर्व कार्य सिद्धी उस्मेति थी नक्षत्र योग चन्द्रमादस्का विचार करना नही —

काल स्थान विचार ॥ ॥ काल फलं घातक लोह पात द्वा
वानलः खड्ग कचश्च कांतिः ॥ नखाश्चतुर्विंशति षट् तथा
दिकुरुद्राधृतिर्वेदगुणाः क्रमेण ॥ ५४ ॥ तिथ्या युतं चैव सु
भाजितं च शेषश्च कालो मुनयो वदन्ति ॥ फल ॥ कालं च पृ
ष्ठे फल सन्मुखेन घातं च लोहं वडवां च पृष्ठे ॥ खड्गे च चापे क
चं च वामे कांतिश्च योन्यादि शिदक्षिणस्याम् ॥ ५६ ॥

टी० काल नाम काल १ फल २ घातक ३ लोह पात ४ द्वा वानल ५ ख
ड्ग ६ कच ७ कांति ८ यह आठ जानना इनके आठ ध्रुवांक बास दे
खने के वास्ते कहते हैं २०।३४।६।१०।११।१८।४।३ यह आठ ध्रुवांक जा
नना अपाने को जिस तिथी मे गमन करना होय उस तिथी मे ध्रुवांक मि
लावना और ८ से भाग लेना जो शेष रहे सो दिशामे काल है ऐसा जान
ना सो आठो का क्रम पृष्ठ भाग काल शुभ सन्मुख फल शुभ पृष्ठ भाग
मेषातक लोह पात और वडवानल यह ३ शुभ अग्र भाग मे खड्ग शु
भ वाम भाग मे कच शुभ और दक्षिण भाग मे कांति शुभ ऐसा दि
शा मे दे दे स्वकोन वयात्रा करना शुभ —

पथाराहुः ॥ ॥ सूर्य मे दक्ष पुष्यो रगवसुजल प
ही शमे त्राप्यथार्थे याम्या जांघ्रीं द्रुक् र्णादिति पितृ
पवनोऽन्यथा भानिकामे ॥ वन्त्या द्वा बुध्य चित्रानि
र्ऋति विधि भगारव्यानि मोक्षो यरोहिण्यर्यम्याप्ये दु
विश्वंति मभ दिन कर र्णाणि पथ्यादि राहो ॥ ५७ ॥ ॥

टी० नक्षत्र २८ इस्के चार भाग तो प्रथम धर्म मार्ग इस्के नक्षत्र ७ दूसरा

अर्थमार्गनक्षत्र० तीसरा काममार्गनक्षत्र० चवथा मोक्षमार्गनक्षत्र
नक्षत्र० दसप्रकारसे चारो मार्गके नक्षत्रजानना और हस्तसूर्यका मार्ग
देखने चंद्रचारो मार्ग से धूमंगातिस्काफल आगे देखना - पंचाराहुतक

धर्म	अर्थमार्ग	पुण्या	आश्लेषा	विशारक	अनुरा	धनिष्ठा	शततारा
अर्थ	मरणी	उत्तराशु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	अश्लेषा	पूर्वाभा
काम	कनिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभिजि	उत्तराभा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाभा	उत्तराभा	रेवती

धर्ममार्गकाफल॥ ॥ धर्ममार्गगते सूर्ये अर्थशेचंद्र

यदि॥ तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तु विबुधैः शुभम् ॥ ४८ ॥

टी० धर्ममार्गमे सूर्यहोय और अर्थमार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो शत्रुसे

अन्यमत॥ ॥ धर्ममार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते॥

स्थिते॥ संहारश्च भवेत्प्रभंगो हानिः प्रजायते ॥ ४९ ॥

टी० धर्ममार्गमे सूर्यहोय और धर्ममार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो

नाश कार्य भंग हानि यह है यात्रा जानना -

अन्यमत॥ ॥ धर्ममार्गगते सूर्ये कामशेचंद्रमा

यदि॥ विग्रहेदारुणं चैव चौराकुलं स मुह्यति ॥ ५० ॥

टी० धर्ममार्गमे सूर्यहोय और काममार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो

शत्रुपीडा चौरसे भय प्राप्ती जानना -

अन्यमत॥ ॥ धर्ममार्गगते सूर्ये चंद्रे मोक्षगते यदि

॥ गृहलाभो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशयः ॥ ५१ ॥

टी० धर्ममार्गमे सूर्यहोय और मोक्षमार्गमे चंद्रमा होय यात्रा करे तो

घर मिलेगा और सुख प्राप्ती होगी ऐसा जानना -

अर्थमार्गकाफल॥ ॥ अर्थमार्गगते सूर्ये चंद्रे धर्मस्थि

ते यदि॥ गजलाभो भवेत्तस्य तत्र श्रीः सर्वतो मुखी ॥ ५२ ॥

टी० अर्थमार्गमे सूर्यहोय और धर्ममार्गमे चंद्रमा होय और यात्रा

करे तो हाथी मिलेगा और बहुत सुख प्राप्ती होगी -

अन्यमत॥ ॥ अर्थमार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते॥

प्रशमं जायते कार्यं तत्र भंगो भविष्यति ॥ ५३

टी० अर्थमार्ग मे सूर्य होय और अर्थमार्ग मे चंद्रमा होय और यात्रा करे तो पहिले कार्य होगा. फिर भंग हो जायगा. —

अन्यमत ॥ ॥ अर्थमार्ग गते सूर्य चंद्रे कामेश सं

स्थिते ॥ सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्र संशयः ॥ ५४

टी० अर्थमार्ग मे सूर्य होय और काममार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो सर्वसिद्धि होगी ऐसा जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ अर्थमार्ग स्थिते सूर्य चंद्रे मोक्ष स्थिते

यदि ॥ भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ॥ ५५

टी० अर्थमार्ग मे सूर्य होय और मोक्षमार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो भूमिलाभ हर्ष युक्त सुखी होगा. —

काममार्ग का फल ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चंद्रे तत्रैव

संस्थिते ॥ गजाश्वाश्च विलभ्यते राजसन्मान संभवात् ॥ ५६

टी० काममार्ग मे सूर्य होय और धर्ममार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो राजा के इहां से हाथी घोडा इस्की प्राप्ती जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चन्द्रे चैवार्थ सं

स्थिते ॥ सकलं जायते तस्य विप्रभंगो विनिर्दिशेत् ॥ ५७

टी० काममार्ग मे सूर्य होय और अर्थमार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो सर्वकाम होय विप्रका भंग होय जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चंद्रे तत्रैव संस्थि

वे ॥ विग्रहं दारुणं चैव कार्यं नाशं विनिर्दिशेत् ॥ ५८

टी० काममार्ग मे सूर्य और काममार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो शत्रु से भय कार्य नाश जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ काममार्ग गते सूर्य चंद्रे मोक्ष गतेपि

वा ॥ राजलाभो भवेत्तस्य स्वर्णलाभं विनिर्दिशेत् ॥ ५९

टी० काममार्ग मे सूर्य होय और मोक्षमार्ग मे चंद्रमा होय यात्रा करे तो राजदर्शन सुवर्णलाभ जानना. —

मोक्षमार्ग का फल ॥ मोक्षमार्ग गते सूर्य चंद्रे धर्म स्थिते यदि ॥ +

हे मलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यप्रसिध्यति ॥६९॥

टी० मोक्षमार्गमे सूर्यहोय और धर्ममार्गमे चंद्रमाहोय यात्रा करे तो सुवर्णकालाभ और सर्वकार्यकी सिद्धी जानना —

अन्यमत ॥ ॥ मोक्षमार्गगते सूर्ये अर्थशेचंद्रमा यदि ॥ विफलतस्य कार्यच चोरराजरीपुर्भयं ॥७०॥

टी० मोक्षमार्गमे सूर्यहोय और अर्थमार्गमे चंद्रमाहोय यात्रा करे तो कार्यविफल होय चोरराजा शत्रुदुनका भय जानना —

अन्यमत ॥ ॥ मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे कामस्थि तेपदि ॥ सर्वसिद्धिमवाप्नोति कार्यच जयमेव च ॥७१॥

टी० मोक्षमार्गमे सूर्यहोय और काममार्गमे चंद्रमाहोय यात्रा करे तो सर्वसिद्धी प्राप्ती और कार्यमे जय जानना —

अन्यमत ॥ ॥ मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थि ते ॥ विग्रहं हारुणं चैव विप्रस्तस्य भविष्यति ॥७२॥

टी० मोक्षमार्गमे सूर्यहोय और मोक्षमार्गमे चंद्रमाहोय यात्रा करे तो शत्रुभय विप्रहोगा —

पंचाराहमे कर्म ॥ यात्रायुद्धे विवादेन प्रवेशेनगरादिषु ॥ व्यापारेषु च सर्वेषु पंचाराहं प्रशस्यते ॥७३॥

टी० यात्राकालमे युद्धमे विवादमे ग्रामप्रवेशमे व्यापारमे सर्वकाममे पंचाराह देखना —

गर्गचार्यमुहूर्त्त ॥ ॥ उषःप्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः ॥ अंगिरामनउत्साहो विप्रवाक्यो जनादेव ॥७४॥

टी० गर्ग ॥ गचार्यका वचन प्रातःकालमे यात्रा करना बृहस्पतीका वचन शकुनदेखको यात्रा करना अंगिराका वचन मनउत्साहमे यात्रा करना अथवा ब्राह्मणके वचनसे यात्रा करना शुभ —

शुभाशुभवाहन ॥ ॥ आत्मनोजन्मनस्तत्रादिनस्तत्रमेव च ॥ एकीकृत्वा हरेद्वागं नरशेषे च वाहनं ॥७५॥

समोष्णो गतो मेघो जंबुको सिंह संज्ञकः ॥ काकमेवैवमपूर

+ श्वहंस इत्येव वाहनं ॥७६॥ फल ॥ रासमे अर्थयात्रा

धनलाभश्चवाहयः॥ लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्येयंमेषेच
मरणं ध्रुवम्॥ ७७॥ जंबुकेस्वल्यलाभश्चसर्वसिद्धि
श्चसिंहगे॥ काकेचनिष्फलंकार्यंमयूरेचसुखावहं
॥ ७८॥ हंसेतुसर्वसिद्धिःस्याद्वाहनानांफलस्मृतं॥

टी० अपनाजन्यनक्षत्रदिननक्षत्रमे मिलावना और ९ से भाग लेना
जो शेष रहे सो क्रमजे जानना शेष १ रहे तो गदहा फल अर्घनाश २ शेष
परहे तो घोडा फल धनप्राप्ती ३ शेष रहे तो हाथी फल लक्ष्मी प्राप्ती ४
शेष रहे तो मेढा फल मरण ५ शेष रहे तो सियार फल थोडा लाभ ६
शेष रहे तो सिंह फल सर्वसिद्धी ७ शेष रहे तो काक फल निष्फलकार्य
८ शेष रहे तो मोर फल सुखप्राप्ती ९ शेष रहे तो हंस फल सर्वसिद्धि इस
प्रकारसे यात्राका विचारवाहन से करना शुभ आवे तो यात्रा करना

अंकमुद्धर्त्ते॥ ॥ तिथयः पक्षगुणिताः सप्तभिर्भाजि
ताश्चतः॥ वारास्युर्वन्दिगुणितावसुभिश्चैव भाजिताः
॥ ७९॥ चतुर्गुणानि भान्यंगभाजितानियथाक्रमान्॥

टी० जिस तिथी मे गमन करना होय उस तिथी को दूना करना ७ से भाग
लेना गमन मे जो बार होय उसको तीन से गुण देना ८ से भाग लेना गम
न मे जो नक्षत्र होय उसको ४ से गुण देना ६ से भाग लेना तिथी वार नक्षत्र यह
तीनों शेष अंक होय तो शुभ शून्य आवे तो अशुभ यह अंक बने कथित किया
है।
फल॥ ॥ पीडा स्यात्प्रथमेशून्ये मध्ये शून्यं महद्वयं॥

अंत्यशून्ये तु मरणं अंकैश्च विजई भवेत्॥ ८०॥

टी० तिथी के शेष मे शून्य आवे तो पीडाकारक वार के शेष मे शून्य आवे तो महा
भय नक्षत्र के शेष मे शून्य आवे तो मरण और तीनों अंक आवे तो विजयकारक
भ्रमणाडल मुद्धर्त्ते॥ ॥ सूर्यभाह्णये चान्द्रसप्त (जानना)
भिर्भागमाहरेत्॥ त्रिषट्क भ्रमणं चैव हि सप्त महदाडलं
॥ ८१॥ प्रथमं पंचचत्वारिं आडलो नास्ति निश्चितं॥ आ

डलं ताडनं प्रोक्तं भ्रमणे कार्यनाशनम्॥ ८२॥ ८३॥

टी० सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनना ७ से भाग लेना शेष तीन अ
थवा ६ रहे तो यात्रा होगी परंतु कार्यनाश शेष दो अथवा ७ रहे तो आडल

योग यात्राकरना नही आइल योगमे ताउन और शेष १ अथ
वा ५ या ४ रहे तो आइल नही गमन करना कथित है -

हे वरमुहूर्त ॥ ॥ सूर्य भाद्रपदे चान्द्रपक्षादिति

शिवारमुहूर्त ॥ नवभिस्तुहरेद्भागं सप्तशेषं तु हे वर ॥ ८३ ॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिन नक्षत्रतक गिनना उक्ते पक्षादिति यी मिलावना और
वारमिलावना ९ से भागलेना शेष ३ रहे तो हे वरमुहूर्त जानना सो यात्रामे क

षवाडमुहूर्त ॥ ॥ सूर्य भाद्रपदे चान्द्र त्रिगुणं तिथि (यिन है -

मिश्रितं ॥ नवभिस्तुहरेद्भागं त्रीणि शेषं च वाडकं ॥ ८४ ॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे दिन नक्षत्रतक गिनना उक्ते तीन से गुण देना गमन की
तिथी मिलावना ९ से भागलेना शेष ३ रहे तो षवाडमुहूर्त जानना सो यात्रामे

वार पर त्वेस्वरशकुन ॥ ॥ पुरोशनीरवौ भौमे शुभो शुभ

वैदक्षिणस्वरः ॥ अन्यचारेषु वामस्तु स्वरश्चैव शुभः

स्मृतः ॥ ८५ ॥ निर्गमे वामतः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ॥

यः स्वरः सैव नासा ग्रेषोऽग्निनामतमीदृशं ॥ ८६ ॥

टी० पुरुशनि रवि मंगल यह चार वारमे अपना दक्षिण स्वर चलता हो
यतो प्रवेश मे शुभ और सोम बुध शुक्र यह तीनो वारमे अपना वाम स्

र चलता हो यतो गमन काल मे शुभ यह स्वर योगियो ने कथित कि गे है

वार पर त्वेच्छायाशकुन ॥ ॥ अधोपादा बुधे स्युर्नव

धरणि सुते सप्तजीवे पदानि ज्ञेयं चैकादशार्कं शनि

शशिभृगुपुत्रोक्तप्रथे चतुष्कं ॥ नक्षिपन्नाले मुहूर्ते

सकलगुणयुते कार्यसिद्धिः शुभोक्तानास्थि न चो

गशुद्धिर्नखलु शशिवले भाषितं गर्भं मुरख्ये ॥ ८७ ॥

टी० बुधवार को ८ गोड छाया आवे तो गमन करना मंगल को ९ गोड

छाया आवे तो गमन करना शुरुवार को ७ गोड छाया आवे तो गमन

करना रवि शनि रश्मि शुक्र यह चारो वारमे ११ गोड छाया आवे तो

गमन करना नो सव गुण युक्त सर्व कार्य सिद्धि शुभ ह स्तोत्रा गमुही

चंद्रबल इस्का विचार करना नही ऐसा गर्भ कहते है -

१ काकशब्दशकुन ॥ ॥ काकस्य वचनं यत्तापादच्छा

यांतु कारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वा षड्विंशभागमा
हरेत् ॥ ८८ ॥ फल ॥ लाभः खेदस्तथा सौख्यं भोजनं

च धनागमः ॥ अशुभं च क्रमेणैव गर्गस्य वचनं तथा ८९

टी० यात्राकालमेकाकशब्दसुनके अपनी पादछाया जो होय उस्मे १३

मिलावना ६ से भागलेना जो शेष रहे उस्का फल १ शेष रहे तो लाभ २

शेष रहे तो खेद ३ शेष रहे तो सुख ४ शेष रहे तो भोजन प्राप्ति ५ शेष रहे तो ध

न प्राप्ति ० शेष रहे तो अशुभ भयहक्रम से देखना यह गर्गमुनीने कथित कि

पिंगलाशब्दशकुन ॥ ॥ उल्हासः किल्विले चैव चि (या है -

ल्लित्या भोजनं तथा ॥ वंधनं खटि खटि स्यात्कुर्कु शब्देर्महद्वय ॥

टी० यात्राकालमे पिंगलका किलबिलशब्द होय तो आनंद चिलपिल

शब्द होय तो भोजन प्राप्ति और खटि खटि शब्द होय तो बंधन कुरकुरश

ब्द होय तो महाभय इस प्रकार से पिंगलकेशब्दका विचार करना -

छायाशकुन ॥ ॥ बुधैः शिंकारं वंशुत्वा पादछायां च

कारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥

९१ ॥ फल ॥ लाभः सिद्धिर्हानि शोक भयं श्रीदुःखनिःफ

ले ॥ क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गर्गेण च यथोदितम् ॥ ९२ ॥

टी० यात्राकालमे छीक होत ही अपनी छाया पाँव से गिनना उस्मे १३

मिलावना ८ से भागलेना फल १ शेष रहे तो लाभ २ शेष रहे तो सिद्धी

३ शेष रहे तो हानी ४ शेष रहे तो शोक ५ शेष रहे तो भय ६ शेष रहे तो

लक्ष्मी ७ शेष रहे तो दुःख ० शेष रहे तो निष्फल ऐसा क्रम से देखना -

छिक्काशकुन ॥ ॥ छिक्काप्रश्नं प्रवक्ष्यामि पूर्वस्यामशु

भं फलं ॥ आग्नेय्यां शोक दुःखं स्यादरिष्टं दक्षिणे तथा

॥ ९३ ॥ नैर्ऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टं वा

यव्ये धनलाभस्त उत्तरे कलहस्तथा ॥ ९४ ॥ दैशान्यां

च शुभं ज्ञेयमात्मशिकामहद्वयं ॥ ऊर्ध्वे चैव शुभं ज्ञेयं

धौ चैव महद्वयं ॥ ९५ ॥ आसने शयने चैव दाने चैव तु भो

जने ॥ वामांगे पृष्ठतश्चैव षट्शिकांश्च शुभावहाः ॥ ९६

टी० यात्राकालमे आठोदिशा मे छीक होय निस्का फल पूर्वदिशामे हो

यतो अशुभ अग्निदिशामे होय तो दुःखशोक दक्षिणदिशामे होय
तो अरिष्ट निर्कृती दिशामे होय तो शुभ पश्चिमदिशामे होय तो मि
त्रात्म भोजन वायु दिशामे धन लाभ उत्तरदिशामे होय तो लडाई
ईशान्यदिशामे होय तो शुभ कदाचित् अपने को लीक आवे तो म
हो भय अनपने ऊपर लीक होय तो शुभ मध्यमे होय तो महा भय औ
र आसन पर निद्रा काल मे दान काल मे भोजन काल मे वा मांग मे रक्त
मांग मे यह द्जन ने लीकने का फल शुभ जानना --

पल्लीशब्दशकुन ॥ ॥ विलंब्रह्मणिकार्यसिद्धिमत्तु
लांशक्रेतुतोशेभयं ग्राम्ये मित्रवधः स्वयं निर्वृते लाभः
समुद्राशये ॥ वायव्यां वरमिष्टमन्नमशनं सोम्यार्थला
भस्तथा ईशान्ये गृहगोपिकार्ये मत्तुलं सर्वत्र भूगोभयं १९०
टी० यात्रा काल मे पल्ली का शब्द ऊपर होय तो धन प्रवेदिशामे कार्य
सिद्धी अग्निदिशामे भय दक्षिणदिशामे मित्र नाश निर्कृती दिशामे स्वय
पक्षे पट्टि शामे लाभ वायु दिशामे मिष्टान्न उत्तरदिशामे लाभ ईशान्यदिशा
मका पे सिद्धी और भूमी पर होय तो भय मिसाद सो दिशामे पल्ली का शब्द फलना

पल्ली पतन ॥ ॥ राजपुत्रशिरसि ते यं ललाटे बंधुदर्शनं ॥
भूमध्वेराज्यसन्मानमुन्नरो ह्ये धनक्षयं ॥ १९१ ॥ अधरो ह्ये
धनैश्च येनासा ग्रे व्याधि पीडनं ॥ आयुष्यं दक्षिणे कर्णे च
हुला भस्तु वामके ॥ १९२ ॥ अक्षयोस्तु बंधनं शीघ्रं भुजैर्भूयति
तुल्यता ॥ राजसो भंतया वामे कर्णे शत्रुविनाशनं ॥ १९३ ॥
स्तनद्वये च दुर्भीष्यमुदरे मंडनं शुभं ॥ प्रज्ञानाशः पृष्ठदेशे
जातु जंघे शुभा वहे ॥ १९४ ॥ करद्वये वस्त्रलाभः स्वंधयो
मित्रिणी भवेत् ॥ नाभौ बहु धनं प्रोक्तं कूर्वोश्चैव हयादिकं ॥ १९५ ॥
दक्षिणे मणिबंधे च मनस्तापं धनक्षयं ॥ मणिबंधे तथा वा
मे कीर्तिवृद्धिं धनप्रदं ॥ १९६ ॥ न विषधान्यलाभं च वक्रैर्मि
ष्टान्नभोजनं ॥ गुल्फयोर्वंधनं जेयं केशं ते मरणं पुवं ॥ १९७ ॥
अध्वानं दक्षिणे पादे वा मे बंधुविनाशनं ॥ स्त्री नाशस्तथा द्वा
दशध्वे पादो ने मरणं भवेत् ॥ १९८ ॥ मल्लयाः प्रपतते जेयं सर

दस्याधिरोहणे॥ यत्रोद्युक्तं मनुष्यस्य शुभाशुभहिसू-
चकं॥१०६॥ तिलमाषादिदानं च त्वात्वादेयं द्विजन्मने॥ पिना
किनं नमस्कृत्य जपेन्मंत्रं षडक्षरं॥१०७॥ शतं सहस्रं मथ वा स-
र्वदोषनिवर्हणं॥ शिवालये प्रपद्याद्वैदी पदोषोपशान्तये १०८
टी० पुरुष अथवा स्त्री इनके यात्रा काल में शरीर पर विस्तृत गिरे अ-
थवा गिर गितान चढ़े तो शुभाशुभ शरीर के स्थान से मालूम करना-

॥ शरीर स्थान पर त्वे शुभाशुभ फल ॥

१ शीर्षः राज्य प्राप्ती	११ वाम भुजा राजक्रोध	२१ कटि भाग घोडा प्राप्ती
२ कपालः बंधु दर्शन	१२ कंठ शत्रु नाश	२२ द. कंकण स्थान धन स्वय
३ भोवः राजमान्य	१३ स्तन दुर्भाग्य	२३ बा. कंकण स्थान कीर्ति ध-
४ ऊपर का ओठ धन स्वय	१४ पेट शुभ मंडन	२४ नख धान्य लाभ
५ नीचे का ओठ धन ऐश्वर्य	१५ पीठ बुद्धि नाश	२५ मुख मिष्टान्न भोजन
६ नाक व्याधि पीडा	१६ जानु शुभ	२६ गुल्फ बंधन
७ दक्षिण कान आयुष्य	१७ जंघा शुभ	२७ केश मरण
८ वाम कान बहुलाभ	१८ हाथ वस्त्र लाभ	२८ दक्षिण पाद गमन
९ नेत्र वंधन	१९ स्कंध विजई	२९ वाम पाद वंधु नाश
१० भुजा राजा समान	२० नाभि बहु धन	३० पाव का मध्य स्त्री नाश

टी० आगे पल्ली शरीर पर गिरे और सरट चढ़े तो तत्काल वस्त्र सहित
स्नान करना और ब्राह्मण को तिल उडि दान देना और महादेव का
दर्शन करना षडक्षर मंत्र का १०० शत अथवा १००० जप करना सर्व दो-
ष नाश होने के वास्ते शिवालय में दीपलगावना शुभ-

अंगस्फुरण॥ ॥ ब्रूहि मे त्वं निमित्तानि अशुभानि शुभा-
नि च॥ सर्व धर्म भृत्यैः त्वं हि सर्व विबुध्यसे॥१०९॥

टी० मनु मत्स्य को प्रश्न करते हैं हे सर्व धर्म भृत्य सब धर्म के जानने वा-
ले हो इस कारण अंगस्फुरण का शुभाशुभ कथन करो--

अंगस्य दक्षिणे भागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत्॥

अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च॥११०॥

टी० शरीर के दक्षिण भाग में पुरुष को स्फुरण होय तो शुभ और वाम

भागमेष्टहृदयस्फुरण होघतो भशुभजानना —

अंगस्फुरणफल ॥ ॥ अंगानां स्पंदनं चैव शुभाशुभवि
चेष्टितं ॥ तन्नेत्रिस्तारतो ब्रूहि येन स्थानं तद्दिपं सुवि ॥
१११॥ पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्निललाटे रविनन्दन ॥ स्थानं
विवर्द्धिमायातिभूनसोः प्रियसंगमः ॥ ११२॥ मृत्युलब्धि
आसिदेशो हृदयान्ते धनागमः ॥ उत्कंठोपगमामध्ये ह
एराजनिचस्योः ॥ ११३॥ दृग्वंधने संगरे च जयशीघ्रम
वा पुयात् ॥ योपिल्लाभो पांगदे शो अवणां ते प्रियश्रुतिः ॥
११४॥ नासिकायां प्रीति सौख्यं प्रिया प्रियरोष्ठयोः
॥ कंठे तु भोगलाभस्याङ्गो गृहद्विरथां सयोः ॥ ११५॥
मुहुरतश्च अबाहुभ्यां हस्ते चैव धनागमः ॥ पृष्ठे पराज
यो मुहुर्जयो वक्षस्थले भवेत् ॥ ११६॥ कुक्षिभ्यां प्रीति
रुद्दिशस्त्रियाः प्रजननं प्रयोगः ॥ स्थानभ्रंशो नाभिदेशे
आत्रे चैव धनागमः ॥ ११७॥ ज्ञानसंधौ परैः संधिर्वैलव
झिर्भवेन्नृप ॥ एकदेशे भवेत्स्वामी जंघाभ्यां रविनन्दन
॥ ११८॥ उत्तमस्थानमान्येति पञ्चांगप्रस्फुरणो नृप ॥
अलाभंचाध्वगमनं भवेत्पाततले नृप ॥ ११९॥ ॥

टी० अंगकाशुभाशुभजोफल कथितं है सो विस्तारकर को शरीर
के स्थानसे यह जगत भेजाना —

१ मस्तकस्फुरण पृथ्वीला	१८ कान प्रियवाणी	१८ कोख प्रीति
२ ललाटे स्थानदृही	१९ नाक प्रीति सुख	१९ भग प्रसूती
३ भोवदे मध्यमे मित्रभेट	२० ओष्ठ प्रियकार वस्तु प्रा	२० लिंग स्त्री प्राप्ती
४ नेत्रकोणक मित्रभेट	२१ कंठ ऐश्वर्य प्राप्ती	२१ नाभी स्थानभ्रम
५ नेत्र धन प्राप्ती	२२ स्कंध भोगदृही	२२ आंत धन प्राप्ती
६ नेत्रकापलक १ रात प्राप्ती	२३ दाह मित्र प्राप्ती	२३ मोह की संधी बल
७ नेत्रकापलक २ संग्रा	२४ हाथ धन प्राप्ती	२४ वानराजा
८ नेत्रकापलक ३ संघा	२५ पीठ दूसरे से जव	२५ जंघा एक देशस्वामी
९ नेत्रकापलक ४ संघा	२६ पीठ दूसरे से जव	२६ पांव उत्तम स्थान
१० नेत्रकापलक ५ संघा	२७ छाती जय प्राप्ती	२७ शव का तल गमन

स्त्रीका अंगस्फुरण॥ ॥ लाञ्छनं पीठकं चैव ज्ञेयं स्फुर
णवत्तथा॥ विपर्ययेण विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः
॥१२०॥ दक्षिणे विप्रशस्ते गप्रशस्तं स्याद्विशेषतः॥

टी० मसातिल यह स्फुरण के स्थान मे जानना दूस्को उलटा करको
स्त्रीको वामांग शुभ और दक्षिणांग अशुभ जानना -

दुष्टस्थाने स्फुरणदान॥ ॥ अनन्यथा सिद्धि रजन्म
नस्य फलस्य शस्तस्य च निन्दितस्य॥ अनिष्टरिष्टे
पगमे हि जानां कार्यं सुवर्णेन तु तर्पणं स्यात्॥१२१॥

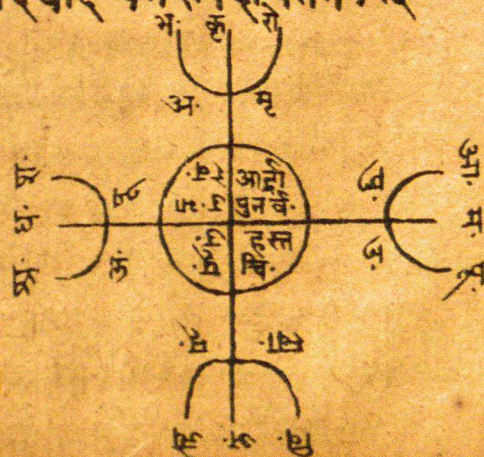
टी० यह जो अंग स्फुरण कहा सो राजाने अनिष्ट फल ना शहो ने के
वास्ते ब्राह्मण को सुवर्ण दान करना और ब्राह्मण भोजन करना -

नेत्रस्फुरण॥ ॥ नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मान
संदुःखजालं नेत्रोपांते दिशति च धनं नासिकांते
च मृत्युः॥ नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत्संगरे भंगहे
तुर्वामे चैतत्फलमविफलं दक्षिणे वैपरीत्यं॥१२२॥

टी० नेत्रस्फुरण का फल नेत्र के ऊपर स्फुरण होय तो मन के दुःख काना
शनेत्र के दूनो कोने मे स्फुरण होय तो धन प्राप्ती नाक के अग्र मे स्फुरण होय तो
मृत्यु नेत्र के नीचे स्फुरण होय तो संग्राम मे भंग होय यह पुरुष का वाम मे जान
ना दक्षिण मे विपरीत जानना स्त्री को दक्षिण मे जानना वाम मे विपरीत जाना०

त्रिशूलयंत्र॥ ॥ रोगिणो च कुजाद्यर्क्षदिनाद्यर्क्षचयु
द्धातः॥ कृतिकागमने दद्यादन्यत्र रवि दीयते॥१२३॥

टी० त्रिशूल चक्र का विचार ।
रोगी का प्रश्न होय तो मंगल के न
क्षत्र से स्थापन करना पुद्गल प्रश्न मे
चंद्रनक्षत्र से स्थापन करना औ
र यात्रा प्रश्न मे कृतिका से आरं
भ करना और अन्यत्र कार्य मे
सूर्यनक्षत्र से जानना यह स्था
पनक्रम आगे फल देखना -



रवावुत्तरतः कालः सोमेवायव्यभागके ॥ भौमे तु प
श्विमे भागे बुधे नैऋत्यकोणके ॥ १२७ ॥ जीवे तु याम्यदि
भागे शुक्रे चाग्नेयकोणके ॥ शनौ तु पूर्वदिभागे काल
चक्रं प्रवर्तितं ॥ १२८ ॥

टी० इस प्रकार से चक्र पर से का
ल का ज्ञान करना —

र.	चं	मं	बु.	गु.	शु.	श.
उ.	वा.	प.	ने.	द.	आ.	ह.

पाशज्ञान ॥ ॥ सौम्यादौ वाममार्गेण रवितः काल
संस्थितिः ॥ तत्संमुखे भवेत्पाशो रात्रौ ज्ञेयो विलोमतः
॥ १२९ ॥ दक्षिणस्थः स्थितः कालः पाशो वामदिगाश्रयः ॥

टी० उत्तरमार्ग से सूर्य से काल स्थि
ती सन्मुख जानना रात्री मे दक्षिण स्थि
ती काल होय तो वाम मे जानना —

पाशचक्रम्						
र	चं	मं	बु	गु	शु	श
द	आ	ह	ई	उ	वा	प

गमने लग्न शुद्धी.

चरलग्ने प्रयातव्यं हि स्वभावे तथा नरैः ॥

लग्ने स्थिरे न गंतव्यं यात्रायास्तममौ शुभिः ॥ १३० ॥

टी० यात्रा काल मे लग्न प्रकार चरलग्न मेष कर्क तुला मकर इस्ये या
त्रा करना और हिः स्वभाव लग्न मे यात्रा करना यह लग्न मे गमन क
थित है स्थिर लग्न मे यात्रा करना नही कल्याण की इच्छा होय तो ल
शुद्धी देख को गमन करना —

दूसरा प्रकार ॥ ॥ लग्ने कार्मुक मेष तो लिगमने कार्य
विलंबो नृणां पंचत्वं मकरे तथैव च घटे तद्दत्तं कलं वृश्चि
के ॥ सिंहे कर्कटके वृषे परिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत् क
न्यामी न गतस्तथैव मिथुने सौख्यं शुभान्नं वसुः ॥ १३१ ॥

टी० धन मेष तुला यह लग्न मे यात्रा करे तो कार्य विलंब से होगा और
मकर कुम्भ वृश्चिक यह लग्न मे यात्रा करे तो मृत्यु कारक और सिं ह
कर्क वृष यह लग्न मे गमन करे तो सर्व अर्थ सिद्धि कन्यामी न मिथु न
यह लग्न मे यात्रा करे तो सौख्य अन्न भूमी इस्की प्राप्ती जानना आ
ये यात्रा लग्न मे वारों स्थान का फल कहते हैं —

प्रथमस्थाना ॥ ॥ जन्मस्थानादष्टमं त्याज्यं लघुप्रेषादशमे
वच ॥ ग्रहाणां च नलं नीरुपगच्छेद्दिनिवृत्तये नृप ॥ १३१ ॥

टी० यात्राकालमेतन्मस्थानादष्टमं त्याज्यं लघुप्रेषादशमे
करना औद्यहवलदेखको गमनकरेतो राजा विजई होता है -

अन्यमत ॥ ॥ स्थाने यदा स्युर्गुरुसौम्यशुक्राः ति
ज्वनिका र्वाणि च पंचमोन्दि ॥ राज्यास्य दं वा सुख
देशलाभं मासस्य मध्ये गृहभावे युक्तम् ॥ १३३ ॥

टी० यात्राकालमेलग्रमे गुरु बुध शुक्र ग्रह होय तो सर्व कार्य पांच
दिनमे अथवा १ मासमे राज्यालाभ सुख प्राप्ती जानना -

द्वितीयस्थान ॥ ॥ जीवो बुधो वा भृगु नन्तो
वा स्थाने द्वितीये गमनस्य काले ॥ सुखसुखलाभं च
तुरंगलाभं मासस्य मध्ये च चतुर्दशीन्दि ॥ १३४ ॥

टी० यात्राकालमे द्वितीय स्थानमे गुरु अथवा बुध शुक्र होय तो
उत्तम वस्त्रलाभ घोडा प्राप्ती मासमे जानना या १४ दिनमे -

अन्यमत ॥ ॥ क्रूरधनस्थारविशतु भौमाः सौ
रिश्च केतुस्त्रिभिरेव मासैः ॥ चिनस्य नाशं च द
हाति मृत्युं सत्यं हि वा क्यं मुनयो वदन्ति ॥ १३५ ॥

टी० यात्राकालमे द्वितीयस्थानमे क्रूरग्रह रवि गुरु मंगलशनीकेतु रसोसे
कोई ग्रह होय तो मृत्युकारक धननाश जीवमासमे होय ऐसे साधुनी कहते हैं।

तृतीयस्थान ॥ ॥ स्थाने तृतीये गुरुभार्गवौ
च सौमस्य सुखं च निशा पतिश्च ॥ करोति कार्यं
सुफलं च स वै पक्षहयेनापि दिनत्रयेण ॥ १३६ ॥

टी० यात्राकालमे तृतीयस्थानमे गुरुशुक्र अथवा बुध चंद्र होय तो
महिने भरमे अथवा ३ दिनमे कार्य सुफल होय ऐसे जानना -

चतुर्थस्थान ॥ ॥ क्रूरध्वतुर्धनमने यदा तु नस्य
श्रुशेषाः शुभहिका र्पम् ॥ तत्रापि द्वे वैन भवेच्च
मिहिनी सत्रयेण पिदशा मध्ये ॥ १३७ ॥ ॥

टी० यात्राकालमे चतुर्थस्थानमे पापग्रह होय तो अशुभ शुभ ग्रह

होय तो दैव योग से कार्य सिद्धी ३ मास मे अथवा १० दिन मे जानना -

पंचम स्थान ॥ ॥ गुरु भृगु श्वत्तु बुधोपदा स्यात्

शुभे चल ग्रेतु सुते च युक्ताः ॥ कुर्वन्ति कार्यस्य च सि

द्धि मिश्रा मास ह ये नापि वदन्ति सत्यम् ॥ १३८ ॥

टी० यात्रा काल मे पंचम स्थान मे गुरु शुक्र चन्द्र बुध यह चारो मे से को
ई ग्रह होय तो सर्व कार्य सिद्धी २ मास मे जानना -

षष्ठ स्थान ॥ ॥ जीवश्च शुक्रश्च बुधश्च षष्ठे करो

नित्यात्रास फलां विलयात् ॥ पक्षद्वये नापि वदन्ति

सत्यं सौम्य र्संस्थः सबलश्चन्द्रः ॥ १३९ ॥ ॥

टी० यात्रा लग्रसे षष्ठ स्थान मे गुरु शुक्र अथवा बुध होय तो या
त्रा सफल जनना और मिथुन का चन्द्र मा होय तो षष्ठ स्थान मे बल
वान् होय तो १ मास मे कार्य सिद्धि जानना -

सप्तम स्थान ॥ ॥ चेत्सप्तमस्था गुरु सौम्य सौम्याः

कुर्वन्ति यात्रा विजयं नृपाणां ॥ सर्वे नृपास्तस्य भ

वन्ति वश्या मास ह ये नापि वपंच भिदि नैः ॥ १४० ॥

टी० यात्रा लग्रसे सप्तम स्थान मे गुरु चन्द्र अथवा बुध होय और रा
जा यात्रा करे तो विजय प्राप्ती और उसको सब राजा वश होय २ मास मे
अथवा ५ दिन मे से सा जानना -

अष्टम स्थान ॥ ॥ क्रूरश्च सर्वे यदि लग्रकाले मृत्यु

स्थिता मृत्यु कर भवन्ति ॥ सौम्यो गुरु र्वा भृगु नन्द

नश्च दीर्घा युषं मृत्यु करश्चन्द्रः ॥ १४१ ॥ ॥

टी० यात्रा लग्रसे अष्टम स्थान मे क्रूर ग्रह होय तो मृत्यु कारक औ
र बुध गुरु शुक्र यह अष्टम स्थान मे होय तो आयुष्य युक्त चंद्र मा
होय तो मृत्यु कारक से जा जानना -

नवम स्थान ॥ ॥ धर्म स्थिता यदि भवन्ति हि पाप

खेत्त प्रयाण काले च तथैव चन्द्र माः ॥ तदा जप वै स

बले च चन्द्रे मास त्रयेणापि दिनैश्च तुर्भिः ॥ १४२ ॥

टी० यात्रा लग्रसे नवम स्थान मे पाप ग्रह होय और उसी स्थान मे च

पाहोयपरतुवल्लवानचंद्रहोयतो ३ मासमे अथवा ४ दिने जयप्राप्ती जान

अन्यमत ॥ ॥ धर्मस्थितौ वा यदि नीचशुभौ सो

मस्थसुतुर्बदितप्रकाले ॥ रुपेचरे वा यदि वा

स्थिरे वा कार्यस्थितिश्च भवेच्च लाभः ॥ १४३ ॥

टी० यात्रालप्रसेनवमस्थानमे गुरुशुक्र अथवा बुधवहचरलप्रमेहो
यअथवा हिस्व भावरुप्रमेहोयतो कार्यस्थिति औपद्रव्यलाभजानना-

दद्यावस्थान ॥ ॥ कर्मस्थिता पापरवगास्तु शौम्याः

कुर्वन्ति कार्ये शनिवर्जिताश्च ॥ रुपेचरे वा यदि वा

स्थिरे वा सासत्रयेणापि चैकमासतः ॥ १४४ ॥ ॥ ॥

टी० यात्रालप्रसेदशमस्थानमेषापग्रह नीलोदको अशुभ और शु
भग्रहचरलप्रमे अथवा स्थिरलप्रमेहोयतो ३ महिनेमे अथवा १ म

हिनेमे कार्यस्थिति जानना -

एकादशस्थान ॥ ॥ लाभस्थितौ गुरुशुभौ भृगुन

न्दो वा क्रूरश्च सर्वेषु शिष्ये च युक्ताः ॥ सद्यः फला

प्तिश्च भवेद्दिवात्रापहैकमध्ये दिवसनयेच ॥ १४५ ॥

टी० यात्रालप्रसे एकादशस्थानमे गुरुशुभशुक्र अथवा क्रूरग्रह
चंद्रकरको युक्त होयतो १ पसमे अथवा ३ दिनमे फलप्राप्ती जानना -

द्वादशस्थान ॥ ॥ सर्वेषु भाद्रादशमस्थिताश्च

यात्राभवेन त्रिविचित्रलाभः ॥ पापाश्च सर्वे व्यय

सुभवन्ति वा जाफलगर्गसुनिवर्णीत ॥ १४६ ॥ ॥

टी० यात्रालप्रसे द्वादशस्थानमे सर्व शुभग्रह होयतो विचित्र लाभ
और सब पाप ग्रह होयतो खर्ची करावे ऐसा यात्राफल गर्गसुनीने क
थित किया है सो जानना -

अन्यमत ॥ ॥ सुक्रे चास्मंगते जीवे च न्देवास्तु पागते

॥ तयोर्चास्ते चार्धके च सायात्रा भय रोगदा ॥ १४७ ॥

टी० यात्राकालमे शुक्रवा अस्तहोय शुक्रका अस्तहोय अथवा
चन्द्रका अस्तहोय और रविका कालमे रविवह होय और यात्रा करे
तो भय रोगदायक होती है

गमनेत्याज्य॥ ॥ निंदो निरिवल यात्रा सुघटल प्रघटां

शकं॥ वक्रः पंथा मीनलग्नये यातुर्मीनां शकेपि वा॥ १४८

टी० यात्राकालमे कुम्भलग्न और कुंभलग्नकानवमांशनिंद्य है त्याग करना कारण द्रव्यनाश और मीनलग्न और मीनलग्नकानवमांश इस्का त्याग करना कारणर स्ताजलदी घूमता है कार्य हो तानही सो चक्र मे देखना -

११	११	१२	१२	ल अं
द्रव्य नाश	द्रव्य नाश	वक्रः पंथा	वक्रः पंथा	इस्का त्याग करना

गमने शाह्य॥ ॥ वर्गेत्तमांशगे ल ग्रेत्त्वथवापि सुधा

करे॥ यात्रा काम दुघा यातुर्मीना पुत्रस्य वै यथा॥ १४९॥

टी० यात्राकालमे लग्न वर्गेत्तम होय अथवा चन्द्रमा वर्गेत्तम होय और यात्रा करे तो सर्व सुख प्राप्ती जैसी पुत्र को माता से सुख प्राप्ती -

दिग्हारमाह॥ ॥ पूर्वादिदिशु मे षाद्यैः क्रमादिग्हाररा

शयः॥ दिग्हाररा शयः सर्वे तदिज्ञातुः शुभप्रदाः॥ १५०॥

टी० पूर्वदिशामे दिग्हार की राशी मे षादी से जानना और जिस दिशा मे गमन करना हो यतो उस दिशा की जो राशी उ स्वे गमन करना -

पूर्वादीनां स्वामी

१	२	३	४	५
१	२	३	४	
५	६	७	८	
९	१०	११	१२	
अशु	अशु	अशु	अशु	
५	६	७	८	

दिगीश्वरा भास्कर शुक्र भौम

रहर्किचंद्रसुगार्चितास्युः॥

टी० आठदिशा के स्वामी सूर्य शुक्र

मंगल राहु शनि चन्द्र बुध गुरु

यह दिशापनी चक्र मे देखना -

लालादि योग

गमनचक्रम्॥

इ	उ	सूर्य	दि	शु	आ
गु	उ	सूर्य	दि	शु	आ
बुध	दि	शु	दि	शु	आ
ना	चं	शनी	दि	रा	ने

लग्ने भानुः सुतरिपुगनश्चंद्र आरोनभस्थः पातालस्थो हिमकर

सुतः स्वन्निगो देवमन्त्री॥ तद् दृच्छुको व्यपभगवतो भास्करिः

सप्तमस्थो राहुर्नित्यनिधननवगः स्वादिशं वारयन्ति॥ १५१

टी० यात्रारुग्ने मे सूर्य होय तो लालादि योग होसा है तो पूर्व मे यात्रा कर

नानही चन्द्रमा अथवा पशु होय तो वायुदिशामे लालादि योग या

आकरानही मंगल १० स्थानमे होय तो ला० दक्षिणदिशामे यात्रा
वर्ज्य ४ स्थानमे बुध होय तो ला० उत्तरदिशामे यात्रा करानही
२ स्थानमे ३ स्थानमे गुरु होय तो ला० ईशान्यमे यात्रा करानही
१२ स्थानमे शुक्र होय तो ला० अग्निदिशा
मे यात्रा करानही ७ स्थानमे शनि होय तो
ला० पश्चिममे यात्रा करानही ८ स्थान
मे ९ स्थानमे राहु होय तो ला० लाटि योग
मे र्जनी दिशामे यात्रा करानही -



यात्राविचार॥ ॥ उपः काले विना पूर्वांगे पूर्यो पश्चिमां वि
ना॥ विनोत्तरां निशीथश्च याने पश्चिमां विना भिक्षित् ॥ १५२
टी० यात्राविचार प्रातः कालमे पूर्वमे यात्रा करानही सायंकालमे
पश्चिममे यात्रा करानही और आधी रातमे उत्तरमे यात्रा करना
नही मध्याह्नमे दक्षिणदिशामे यात्रा करानही -

सर्वेषां विचार॥ ॥ फलसिद्धिर्योगवशात्तामो विप्रस्यधि
ष्यतः॥ मुहूर्तशान्तिर्न्योशकुनैस्तस्वरस्य च ॥ १५३
टी० यात्रासजाको योगवत्तसे फलसिद्धि ब्राह्मणको नष्ट बलसे
सिद्धि और अन्य प्रनुष्यको मुहूर्तबलसे सिद्धि और कोशकुन
से सिद्धि ऐसा जातीसे विचार करना यात्रासिद्धिदेवास्ते -

यात्रायोग॥ ॥ लग्ने गुरुर्बुधभृगूहिबुकात्पञ्चस्थौष
हौकुजाकेतनयौ दिनकृत्तृतीयः॥ चंद्रस्य परस्य दश
मे भवति प्रयातुस्तस्याभिवांक्षितफलान्निरलं नृपस्य ॥ १५४
टी० ऐसे यात्रा कालमे कुंडली मे ग्रह हो
य और यात्रा करे तो अपना वांछित फल
प्राप्ती जानना यह पांच कुण्डली मे मे
बल प्रसे सोनही लोलग्रहोप वस्तु प्र
हृत्तरीतसे होय ऐसा जानना -



शुक्रवाक्पनिबुधैर्धनमुत्प्रेक्ष्य प्रप्रेषादिनिरुग्रतेऽर्केन
निर्गतो नृपतिरेतिकायां धनतेयवद्वीनि निहत्य ॥ १५५॥

टी० यात्राकालमें ऐसा ग्रह हो प
और राजा यात्रा करे तो शत्रु को बहु
तजल दीजी तेजैसा गरुड सर्प को
जीनता है यह फल जान ना —

यात्रायोगचक्रं

३	३३.३३	१२	११
४	१३.	१०	
५	१०.	९	

अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हिबुक्सहोदरला

भगवत्स्थैः॥ कविरिहकेन्द्रगगीष्पतिरुष्टौवसु

चयलाभकरः खलु योगः ॥ १५६ ॥ यात्रायोगचक्रं

टी० यह प्रकारसे ग्रह होय यात्रा
करे तो द्रव्य लाभ सुख हो पैसे सा
जानना —

२	१	१२
१०	११	१३
५	७	९

सितेलग्नगतेसूर्यलाभ

मेन्बुस्थितेविधौ॥ततोराजारिपून्हंनिकेस

शिवेभसंहतिम्॥१५७॥

यात्रायोगचक्रं

टी० ऐसे योग मे पावा करै तो जै
सा सिंह गज के समूह को नाश
करता है उसी रीत से राजा शत्रु
का नाश करता है -

रविषष्ठे सितः छिद्रे तृतीये भूमि नन्दने ॥ पिनाकि

योगो विरज्यतो या तुर्विजयकारकः ॥१५८॥ यात्रायोगचक्रं

टी० ऐसे योग में पात्रा करै तो वह
 पिना कि नाम योग होता है सो
 गमन करनेवाले को विजय कार
 क जानना —

4	9	2
3	5	7
8	6	1

गुरौकर्कटगेलग्रेभानावेकादशस्थिते॥पुंडरीकोम

हायोगः शत्रुपक्षविनाशकृत ॥१५९॥ पुंडरीकयोगचक्रं

टी० यात्राकाल मेक कैल ग्रमे गुरु होय और ११
स्थान मे सूर्य होय तो वह पुंजरी क नाम योग हो
ता है यात्रा करे तो शत्रु पक्ष का नाश जान ना -

६	५	३	३	३
	७	४	९	९३
८		९०	९९	९३
	८			

रश्मिशिगतैर्चंद्रैरामस्थेकेंद्रमेगुहो॥ कामधेनुयोगनं
कामधेनुरचंगोः कामदीपाधि
नारणे॥ १६०॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

ली० यात्राकालमें रश्मिशिगतैर्चंद्रैरामस्थेकेंद्रमेगुहोय तो
२१ स्थानमें होय और केंद्रमेगुहोय तो का
मधेनुयोग होता है रणमेकामदेता है -

त्रिषष्ठलाभगे ज्येष्ठुरविमंदकुजेष्टुव॥ पूर्णचन्द्रोम

हायोगः पूर्णराज्यप्रदः सदा॥ १६१॥ पूर्णचंद्रयोगचक्रं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

ली० यात्राकालमें लग्नमें ३ स्थानमें स्त
र्षहोय और ६ स्थानमें शनीहोग और
११ स्थानमें मंगलहोय यह योगमें पा
त्राकरे तो राज्यलग्नकजानना -

लग्नेष्टुत्रशशीर्षधौकर्मस्थानेगुरुर्वदा॥ मृगेष्टुयो

गोविरव्यातोयातुःसर्वायसाधकः॥ १६२॥ मृगेष्टुचक्रं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

ली० यात्राकालमें लग्नमें शुक्रहो
य ४ स्थानमें चन्द्र और ११ स्थानमें
गुरुहोय तो मृगेष्टुयोगहोता है य
मनको तो सर्वसिद्धीजानना -

आपोक्ष्मगतेचन्द्रेकेंद्रस्थेसुरपूजिते॥ योगकेन्द्र

तिगव्यातोयातुरिष्टार्थसूचकः॥ १६३॥ केन्द्रयोगचक्रं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

ली० यात्राकालमें ३१६११२ इतने
स्थानमें चंद्रमाहोय और केंद्र ११४१०१
१० इतने स्थानमें गुरुहोय तो केंद्रनाम
योगस्तोगमनकरे तो दुष्टसिद्धिजानना -

लग्नेशौम्योरवौषट्केलाभमेदेवपूजिते॥ महा

पाशुपतोयोगः शत्रुवर्गविनाशहृत्॥ १६४॥

ली० यात्राकालमें लग्नमें बुधहोय और स्तर्षपक्षस्थानमें होय
११ स्थानमें गुरुहोय तो महापाशुपतयोगहोता है यात्राकरे तो

शत्रुवर्णकानाशजानना -

पाशुपतयोगचक्रम् ॥

प्रस्थानमुहूर्तः ॥ सुमुहूर्तेस्वयंगमना

संभवेप्रस्थानं कार्यं ॥ शूलो बज्रोपवीतः

कंशस्त्रं मधुचस्थाययेत्फलं ॥ विप्रादि

क्रमतः सर्वस्वर्णधान्यांबरादिकं ॥ १६५ ॥

३	२	१	१२
	४	बु	११ गु
५		७	१०
६	८		९

टी० सुमुहूर्तेमेयात्रानकरसकेतो प्रस्थानरखना ब्राह्मणनेप्रस्थानयज्ञो
पवीतकरना क्षत्रियनेप्रस्थानशस्त्रकरनावैश्यनेप्रस्थानमधुकर
ना शूद्रनेप्रस्थानफलकरना यहचारोवर्णकाप्रस्थानऔरसुव
र्णधान्यवस्त्रयहसबकोकथितहै -

अन्यमतः ॥ ॥ राजादृष्टाहंपंचाहमन्योन्यप्रस्थितोव

सेत् ॥ अंगप्रस्थानेसम्पूर्णवस्तुप्रस्थानकेऽर्धकं ॥ १६६ ॥

टी० राजानेप्रस्थानरखनेपर१०दिनरहना औरअन्यको५दिन और
अंगप्रस्थानकरेतोसंपूर्णफलवस्तुप्रस्थानकरेतोअर्धफलजानना

अन्यमतः ॥ ॥ गेहाहेहान्तरंगर्गः सीमः सीमांत

रोभृगुः ॥ बाणक्षेपंभरद्वाजोवसिष्ठो नगराद्दहिः ॥ १६७ ॥

प्रस्थानेपि कृतेनोयान्महादोषान्वितेदिने ॥ १ ॥ ॥

टी० प्रस्थानप्रकारगर्गकावचन प्रस्थानअपनेघरसेदूसरेकेघर
मेरखना भृगुकावचन प्रस्थानशहरकेसीमापररखनाभरद्वा
जकावचन प्रस्थानजितनेदूरबाणजायउतनेदूररखना वसि
ष्ठकावचन प्रस्थानशहरकेबाहररखना औरप्रस्थानकियाक
दाचित्त उसदिनमहादुष्टयोगहोयतोयात्राकरनानही -

यात्राकेदिनवर्ज्यः ॥ ॥ क्रोधक्षौररतिश्रमाभिषगुडद्युता

श्रुदुग्धासवसारभ्यंगभयासितांवरवभिस्तैलंकटू र्ये

जमे ॥ क्षौरक्षौररतीः क्रमास्त्रिशरसन्नाहंपरंतेदिनेरोगं

स्त्र्यार्तेवकंसितान्यतिलकंप्रस्थानकेपीतिच ॥ १६८ ॥

टी० यात्राकरनेकेदिनत्याग कोपक्षौरस्त्रीसंग महिनतमांसगुडचूत-तो
रन दूध-मद्य-सार-सुगंधतैल-भय-कृष्णवस्त्र-वमन तैल-कडुवापदार्थ
यहगन्नाकेदिनत्यागकरना औरदूधक्षौरस्त्रीसंग यहतीनक्रमसेया

आके पहिले ३।५।७ इतने दिन त्याग करना और रोग चिंता विषय
चिंता और खेत तिलक से अन्य तिलक गृह प्रस्थान के दिन करना
यात्रा में बाह्य विचार ॥ प्राच्यां गच्छेत्तु जैव दक्षिण ही
स्मारये नहि ॥ दिशि प्रतीक्या यस्वेन यो दीर्घा नैव पः ॥ १७८
टी० पूर्व दिशा में यात्रा की पर बैठ को करना और दक्षिण दिशा में
पर बैठ को करना और पश्चिम दिशा में घोड़ा पर बैठ को करना और
उत्तर दिशा में पालू की पर बैठ को यात्रा करना शुभ -

अन्य मत ॥ ॥ पूर्व दिक्षिण मुख त्याग पाद यात्रा न रा
धियः ॥ हा त्रिंशत् पद गत्वा घानमास्त्य संजनेत् ॥ १७९ ॥

टी० यात्रा करके राजा ने पहिले दक्षिण चरण आगे रखना और ३२
गोड चलना फिर सवारी पर बैठना अब बागोड़ से यात्रा करना -

अन्य मत ॥ ॥ ताग्रपात्रे तिलान्कृत्वा संपुता नैव
संशुनान् ॥ निवेशपुरव्यविधाय देवताय विशेषतः ॥ १८० ॥

टी० यात्रा करके ताग्रपात्र तिल युक्त घृत मुचर्ज युक्त उत्तम ब्राह्म
ण को देना पर नु ज्योतिषी को देना कल्याण के वास्ते ॥

यात्रा से आये को गृह प्रवेश ॥ ॥ शुभः प्रवेशो धूमि
ध्रुवाख्यैः द्विप्रैश्चरैः स्यात्स नरेव यात्रा ॥ इधैर्नृपो दारुण
नैः कुमारो राज्ञी विशाखास्तु विनाशमिति ॥ १८१ ॥

टी० यात्रा करके आये ही गृह प्रवेश करने के वास्ते चक्र पर से शुभाशुभ
नक्षत्र जानना -

अन्य मत ॥

निर्गमान् वसेमा
सिप्रवेशो नैव शोभ
नः ॥ एवमेदिव सेनै
व प्रवेशो नैव कार
येत् ॥ १८२ ॥ ॥

घट्ट	न	र	वि	अ	यहनक्षत्रमेव नक्षत्र
शुभ	उ. पा.	उ. पा.	उ. पा.	रे	यहनक्षत्रमेव गृह प्रवेश
सिप्र	ह	अ	पु	अभि	यहनक्षत्रमेव गृह प्रवेश
चर	स्व	उन	प्र	प. रा	यहनक्षत्रमेव नृप आश्रय
उग्र	ह. पा.	ह. पा.	ह. पा.	अ. म	यहनक्षत्रमेव मरण
रावण	क	न्ये	आर्द्र	श्ले	यहनक्षत्रमेव नृप नाश
•	नि	•	•	•	स्त्री नाश
•	क	•	•	•	गृह दाह

टी० यात्रा के बाद नवम मास में गृह प्रवेश करना नहीं और नवम दि
न में प्रवेश करना नहीं शुभ लोग नहीं -

- मत्स्यकथितदुष्टशकुन॥ औषध्याचनिपुक्तोहिधान्यंरु
 ष्यां तु यद्भवेत्॥ कार्पासश्चतुर्गंशुष्कंशुष्कं गोमयमेवच॥१७४
- टी० यात्राकालमेघरसेनिकस्तेहीदुष्टशकुन औषधी युक्तमनुष्य
 काला अन्न कपास भूसा गोइठा यह सामने अशुभ
 दन्धनंचतथांगारंगुडंसर्पिस्तथाशुभं॥ अन्य
 तोमलिनोमन्दस्तथानग्नश्चमानवः॥१७५॥
- टी० काष्ठ अग्नि गुड घीव और दुष्टपदार्थ तैललगायापुरुष मलिन
 मूर्ख नग्न पुरुष यह यात्रामेनिकस्तेहीसामने आवेतो अशुभ -
 मुक्तकेशोरुजार्त्तश्चकाषायंवरधारिणः॥
- उन्मत्तःकंथितोसत्वोदीनोवाथनपुंसकः॥१७६
- टी० पुरुषबालखोले रोगी सन्यासी उन्मत्तगुड्डालपेदे पुरुष पा
 पी पुरुष नपुंसक यह यात्रामेनिकस्तेहीसामने अशुभ -
 आयःपंकस्तथाचर्मकेशबंधनमेवच॥ तथै
 वोद्धृतसाराणिपिण्याकादितथैवच॥१७७
- टी० लोहा कीचड चमडा बालबांधतेहोय तक्रखडी यह यात्रा
 मेनिकस्तेहीसामने अशुभजानना -
 चाण्डालस्यशवंचैवराजबंधनपालकाः॥
 वधकाःपाककर्माणोगर्भिणीस्त्रीतथैवच॥१७८
- टी० डोमकाप्रेत बेडीवान् नाशकरनेवाले पापकर्मीगर्भिणीस्त्री
 यह यात्रामेनिकस्तेहीसामने अशुभजानना -
 तुषंभस्मकपालास्थिभिन्नभांडानिधानिच॥
 रक्तानिचैवभांडानिमृतस्त्रारंगस्तथैवच॥१७९
 एवमादीनिचान्यानित्यप्रशस्तानिदर्शने॥१८०॥
- टी० भूसा भस्मकपालहाडजूदाजूदाबरतन तांबेकाबरतन मृ
 त्तिकाकाबरतन अथवा रांगेकाबरतन यहत्यागकरना औरभी
 दुष्टपदार्थत्यागकरना सो यात्राकालमेसामने अशुभ -
 कयासितिष्ठ आगच्छ किंतेतत्रगतस्यतु॥
 अन्यशब्दाश्चयेनिष्ठास्तेविपत्तिकराअपि॥१८०॥

टी० यात्राकालमेनिकस्तेही कोई पृष्ठेनुपकहासे आयेखड़ेर हो कहा
जाओगे और ऐसे अन्य शब्द होय तो विपत्तिकारक होना है ऐसा जान
ध्वजादौ वायसास्थानं क्रम्य दानं विगर्हितं ॥

स्वर्लनं वाहनानां च वस्त्रासंगस्तथैव च ॥ १८१ ॥

टी० पताका के रूप रकौ वा बेंठना अगिले को पुस्तक आवना वाहन पर से नि
रना वस्त्र पहिरना पुरुष यद्वा वागेनिकस्तेही सामने अशुभ जानना
दुष्टे निमित्त प्रथमे अमंगल्य चिनाशनम् ॥

केशवंपूजयेद्दिहान्स्तवेन मधुस्तूदनम् ॥ १८२ ॥

टी० यात्राकालमें पूर्वमें शकुन कहा है निस्ते दुष्ट शकुन पहिले दे
खेतो होपनिवारण के वास्ते विष्णु पूजन करना मधुस्तूदन का स्त
वन करना शुभ फिर यात्रा करना -

हिनी ये च ततो दृष्टे प्रतीपे प्रविशेद्गृहं ॥

अथेष्टानि प्रवक्ष्यामि मेघास्त्रानि नयानघ ॥ १८३ ॥

टी० दूसरे यात्राकालमें दुष्ट शकुन होय तो चरमें आवना फिर
शुभ शकुन आवेतो गमन करना सो शुभ शकुन कहते हैं -

यात्राकालमे उत्तम शकुन ॥ ॥ प्रशस्तो वायुशब्दस्तु
भिन्नमेरीरवास्तथा ॥ पुरतः शब्द एही ति शस्यते न तु
पृष्ठतः ॥ १८४ ॥ यच्छेनि चैव यश्चाद्यः पुरस्ताद्भुवि गर्हितः ॥

टी० यात्राकालमें उत्तम शकुन वायुशब्द नगारेका शब्द अपने अ
ग्रभाग आओरे सा शब्द होय तो उत्तम जानना यह शब्द पीछे
अशुभ और जाओ यह शब्द पीछे अच्छा आगे अशुभ -

अन्यमतः ॥ ॥ श्वेताः सुमनसः श्रेष्ठः पूर्णकुम्भास्तथैव
च ॥ जलजाः पक्षिणश्चैव मांसं मत्स्यं चार्थिनः ॥ १८५ ॥

टी० यात्राकालमें निकस्तेही सामने सफेद फूल उत्तम पूर्ण कुम्भ
मच्छ पक्षी मच्छ का मांस यह शुभ जानना -

गावस्तुंगमोना गोहृद्दृष्टः पशुस्तवजा ॥

त्रिदशाः सुहृदो विद्याः ज्वलितवह्निनाशनः ॥ १८६ ॥

टी० यात्रा में निकस्तेही सामने गो घोड़ा हाथी एक वृद्ध पशु बकरी दे

वनाकीमूर्तीमित्रब्राह्मण २ प्रज्वलितअग्निग्रहशुभजानना-
गणिकाचमहाभागादूर्वाश्वाद्राश्वगोमयं॥

रुक्मंस्तृप्यचनाग्रंचसर्वज्ञानिचाप्यथ॥१८७

टी० यात्राकालमे—निकस्तेहीसामने वेश्यादूर्वा ओदागे
वर सुवर्णरौप्यताम्र और सर्वप्रकारकेरत्नग्रहशुभजानना-

औषधानिचसर्वज्ञायवाःसर्वार्थकास्तथा॥

खड्गपात्रपताकाचमृत्तिकायुधपीठकं॥१८८

टी० यात्राकालमेनिकस्तेहीसामने औषधीउत्तमपंडितसफेद
सरसोखड्गपात्रपताका मृत्तिका शस्त्रआसनग्रहशुभजानना—

राजलिंगानिसर्वाणिशवंरुदितवर्जितम्॥

घृतंरधिपयश्चैवफलानिविविधानिच॥१८९॥

टी० यात्रामेनिकस्तेहीसामने राजचिन्हदेखे प्रेतरोदनवर्जित
घीवदहीदूध औरनानाप्रकारकेफलग्रहशुभ—

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्वबद्यावर्तःसकौस्तभः॥

वादित्राणांशुभःशब्दोगंभीरःसुमनोहरः॥१९०

टी० यात्रामेनिकस्तेहीसामने स्वस्तीआशीरवादवचनकाशब्दकौस्तुभ
पणिपुक्तमाला औरनानाप्रकारकेउत्तमवाद्यकेशब्दगंभीरसुमनोहरग्रह

गांधारषड्जक्रषभायेगीताःसुस्वराःस्वराः॥
(शुभजानना)

वायुःसशर्करोत्पुष्पाःसर्वविघ्नविनाशकृत्॥१९१

टी० यात्रामेनिकस्तेहीसामनेउत्तमप्रकारकागायनस्वरसहि
तवायुमधुरअथवाउष्णग्रहहोघनोसर्वविघ्ननाशजानना-

प्रतिलोमस्तथानीचोविज्ञेयोभयकृद्भिजः॥

अनुकुलोमृदुःस्निग्धोसुखस्पर्शःसुखावहः॥१९२

टी० यात्रामेवर्णसंकरवैसानीचपवनब्राह्मणभयंकरअपने
कोअनुकूलपदार्थउत्तमसुखसंग औरसबसुखावहजानना-

शस्तान्येतानिधर्मज्ञयत्रस्यान्यनसःप्रियं॥

मनसस्तुष्टिरेवात्रपरमंजयलक्षणम्॥१९३॥

टी० यहजोपूर्वमेकचित्तकियाशकुनसोउत्तमपरन्तुमनकोप्रिय

होयतवयात्राकरना जयप्राप्तीजानना —

मनोत्सुखत्वं मनसः प्रहर्षः शुभस्य लाभो विजयप्रवादः॥

मांगल्यरुद्धिः श्रवणं च राज्ञां ते यानि नित्यं विजयावहानि ॥

टी० मनसु हर्षनेयात्राकरनेसेवादमेविजय मांगल्यप्राप्ती श्रवणराजानेविचारकरकोयात्राकरना — शुभ

क्षेमं करा नीलकण्ठाः श्वेतकृत्वा वरजं बुकाः॥

प्रस्थाने वामतः श्रेष्ठाः प्रवेशे दक्षिणाः शुभाः ॥ १९५ ॥

टी० यात्रामेनिकस्तेही अपनेबाएतरफ औरकुत्तारलूपक्षी गदहासियारबहकल्याणकारकजानना औरप्रवेशकालमेदहिनेशुभ जानना

नौशानमिष्टं जलराशिलयेतदंशकेवान्यग्रहोदयेपि ॥

टी० नावकीयात्रासबयात्राकेऐसीविशेषजलराशीकालम औरजलराशीकाअंशहोयसंकटमेअन्यग्रहकेराशीमेभीकरजा इनियात्राप्रकर

अथपिप्रकरणम् ॥

पं॥

आनंदादियोगः ॥ ॥ स्वरैश्चिभालुहिनरौचिविबंद्रधिष्णया

त्तापीचभूमितनयेचक्षुषेचहस्तात ॥ मैत्रादुरौभृगुसुतेखलु

वैश्वदेवाज्यासुतेवरुणभाक्रमशःस्मुरेव ॥ १ ॥ आनंदःका

लदंष्ट्रधूम्राख्योयप्रजापतिः ॥ सौम्यो ज्योत्स्नो ध्वजो नाका

श्रीवत्सो वज्रमुद्गरः ॥ २ ॥ रुद्रं मैत्रोमानसश्चपक्षारख्योलुंबक

स्तथा ॥ उत्पातो मृत्युकाणारख्यः सिद्धिश्चैव शुभो मृतः ॥ ३ ॥ सुस

लोचगद्वारख्यश्चमातंगोराक्षसश्चरः ॥ स्थिरः प्रवर्धमानश्चश

मोः श्राविंशतिः क्रमात् ॥ ४ ॥ फलः ॥ आनंदे लभते सिद्धिं काल

दण्डे मूर्तिं तथा ॥ धूम्राख्ये च सुखं शोके सौभाग्यं च प्रजापतौ

॥ ५ ॥ सौम्ये चैव महत्सौख्यं ज्योत्स्ने चैव धनस्ययं ॥ ध्वजनाम्नि

च सौभाग्यं श्रीवत्से सौख्यं संपदः ॥ ६ ॥ वज्रेण यो मुद्गरे च श्री

नाशस्तु तथैव च ॥ रुद्रे च राजसन्धाने मैत्रे च हि न सशयः ॥ ७

मानसे चैव सौभाग्यं पक्षारख्ये च धनागमः ॥ लुंबके च महानि

श्चाद्वर्यास्ते प्राणनाशनः ॥ ८ ॥ मृत्युयोगे भवेन्मृत्युः काणे च

क्रूरमादिशेत् ॥ सिद्धियोगे भवेत्सिद्धिः शुभे कल्याणमेव च ॥

॥९॥ अमृते राजसन्मानो मुसले च धनस्यः ॥ गदाख्ये च
 स्याद्विद्यामातंगे कुलवर्धनं ॥ १० ॥ राससे तु महत्कष्टं च रेका
 र्ये च सिध्यति ॥ स्थिरयोगो गृहारंभे प्रवृद्धे पाणिपीडनं ॥ ११ ॥
 टी० आनन्दादि अट्टाईस योग इत्ये एकेकयोगमेव वार और ७
 नक्षत्रक्रमसेचक्रमे देवना.

योगनाम	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	फल
१ आनन्द	अभि	मृग	आश्ले	हं	अनु	उ.बा	श	सिद्धि
२ कालदंड	भर	आश्ले	मं	चि	ज्ये	अभि	पू.भा	मृत्यु
३ धूम्र	रु	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	श्रव	उ.भा	असुरव
४ प्रजापती	रो	पुष्य	उ.फा	वि	रू.बा	धनि	रेव	सौभाग्य
५ सौम्य	मृ	आश्ले	हं	अनु	उ.बा	शत	अभि	बहुतसुख
६ ध्वांस	आश्ले	मं	चि	ज्ये	अभि	पू.भा	भ	धनस्य
७ ध्वज	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	श्र	उ.भा	रु	सौभाग्य
८ श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा	वि	रू.बा	ध	रेव	रो	सौख्यसंपत्ती
९ वज्र	आश्ले	हं	अनु	उ.बा	शत	अभि	मृ	स्य
१० सुज्ञर	मं	चि	ज्ये	अभि	पू.भा	भ	आश्ले	रुद्धीनाश
११ छत्र	रू.फा	स्वा	मू	श्र	उ.भा	रु	पुनर्व	राजसन्मान
१२ मैत्र	उ.फा	वि	रू.बा	ध	रेव	रो	पुष्य	पुष्टी
१३ मानस	हं	अनु	उ.बा	शत	अभि	मृ	आश्ले	सौभाग्य
१४ पद्मारव्य	चि	ज्ये	अभि	रू.भा	भर	आश्ले	मं	धनप्राप्ती
१५ लुम्बक	स्वा	मू	श्र	उ.भा	रु	पुनर्व	रू.फा	धनस्य
१६ उत्थात	वि	रू.बा	ध	रे	रो	पुष्य	उ.फा	प्राणनाश
१७ मृत्क	अनु	उ.बा	श	अभि	मृ	आश्ले	हं	मृत्यु
१८ काणारव्य	ज्ये	अभि	रू.भा	भर	आ	मं	चि	केश
१९ सिद्धि	मू	श्र	उ.भा	रु	पुनर्व	रू.फा	स्वा	कार्यसिद्धि
२० शुभ	रू.बा	ध	रे	रो	पुष्य	उ.फा	वि	कल्याण
२१ अमृत	उ.बा	श	अभि	मृ	आश्ले	हं	अनु	राजसन्मान
२२ मुसल	अभि	रू.भा	भ	आश्ले	मं	चि	ज्ये	धनस्य
२३ गदाख्य	श्र	उ.भा	रु	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	अस्यपभविष्य
२४ मातंग	ध	रे	रो	पुष्य	उ.फा	वि	रू.बा	कुलवर्द्धी
२५ रासस	श	अभि	मृ	आश्ले	हं	अनु	उ.बा	महाकष्ट
२६ वर	रू.भा	भ	आश्ले	मं	चि	ज्ये	अभि	कार्यसिद्धि
२७ स्थिर	उ.भा	रु	पुनर्व	रू.फा	स्वा	मू	श्रव	गृहारंभ
२८ प्रवर्धमान	रे	रो	पुष्य	उ.फा	वि	रू.बा	धनि	विवाह

चरयोग॥ ॥ रवौ पूर्वागुरौ पुष्यः शनौ मूलं भृगौ मघा॥ सोम्य
 ब्राह्मं विशा भौ मे चंद्रो चरयोगकः॥ १२॥ ककचयोग॥ रवौ
 तुलादशी प्रोक्ता भौ मे च दशमी तथा॥ चंद्रो चैकादशी प्रोक्ता
 नवमी बुधवासरे॥ १३॥ शुक्रे च सप्तमी जेयाशनौ चैव तु
 षष्टिका॥ गुरौ चाष्टमिका जेयायोगस्तु ककचो बुधैः॥ १४
 ॥ हगधयोग॥ बुधतृतीयाशुजपंचमी च षष्ठ्यां गुरोरष्टमि
 शुक्रवारे॥ एकादशी सोमशनिर्नवम्यां द्वादश्यमको मि
 ति हगधयोगः॥ १५॥ मृत्युदायोग॥ रवौ भौ मे भवे चंद्रा भ
 द्रा जीवशशांकयोः॥ जयाशुके बुधेरिक्ताशनौ पूर्णा च मृत्यु
 दा॥ १६॥ सिद्धि योग॥ शुक्रे नंदा बुधे भद्रा जवा भौ मे प्रकी
 र्तिता॥ शनौरिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धि योगा उत्तुहनाः॥ १७॥
 उत्पातादियोगा॥ विशाखादि चतुष्कं तु भास्करादि क्रमेण
 तु॥ उत्पत्ति मृत्यु कालारव्य सिद्धि योगाः प्रकीर्तिताः॥ १८॥
 यमदंष्ट्रयोग॥ मघा धनिष्ठा मूर्धे तु चंद्रो मूल विशाखके॥ कृति
 का भरणी भौ मे सोम्ये पूषा पुनर्वसुः॥ १९॥ गुरौ पूषाश्विनी
 शुक्रे रोहिणी चानुराधका॥ शनौ विष्णुः शतभिषक यम
 दंष्ट्रः प्रकीर्तिताः॥ २०॥ यमघंटयोग॥ रवौ मघा बुधे मूलं ग
 रौ चैव चरुतिका॥ भौ मे चार्द्रा शनौ हस्तः शुक्रे चैव तुरोहि
 णी॥ २१॥ चंद्रो विशाखा योगो यमघंटः प्रकीर्तिताः॥ सुस
 लव्रजयोग॥ चंद्रो चित्रा भृगो ज्येष्ठा शनौ चैव तुरेवती॥ चार्द्र
 जेतु धनिष्ठा कारवौ तु भरणी तथा॥ उषाश्चैव तु भौ मे च ग
 रौ चैव कोनरा तथा॥ अयं सुसलवज्जारव्य योगो वर्ज्यः शुभो
 बुधैः॥ २३॥ अमृत सिद्धि योगः॥ ॥ आदित्यहस्ते गुरुपु
 ष्ययोगे बुधानु राधा शनिरोहिणी च॥ सोमे च विष्णु मृग
 रेवती च भौ याश्विनी चामृत सिद्धि योगः॥ २४॥ ॥ ॥

टी० चरयोग १२ और ७ बार यह चक्र मे देखना और बार नक्षत्र ति
 थी जो आवे तो चरादि १३ योग जानना -- योग चक्रम् ॥ ॥

योगनाम	भानुवार	इंदुवार	भौमवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१ चरयोग	पूर्वषा	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
२ क्रकचयोग	१२ ति	११ ति	१० ति	९ ति	८ ति	७ ति	६ तिथी
३ दग्धयोग	१२ ति	११ ति	५ ति	३ ति	६ ति	८ ति	९ ति
४ मृत्युयो	१६१०ति	१७१२ति	१६११ति	१६१४ति	१७१२ति	१८११ति	१९११ति
५ सिद्धियो	० ति	० ति	३८१३ति	३७१२ति	३९११ति	३९११ति	४०१४ति
६ उत्तातयो	विशाखा	पूर्वा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा
७ मृत्युयो	अनुरा	उत्तरा	शतता	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त
८ कारुयो	ज्येष्ठा	अ	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९ सिद्धियो	मूल	श्रवण	उत्तरा	रुक्मि	पुनर्व	पूर्वा	स्वाती
१० यमदंष्ट्रयो	मघा-ध	मूल-वि	रु-भ	पूर्वा-पुन	उ-षा-अ	रो-अनु	श्र-शत
११ यमदंष्ट्रयो	मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	रुक्मि	रोहिणी	हस्त
१२ सुसलव	भरणी	चित्रा	उ-षा	धनिष्ठा	उत्तरा	ज्येष्ठा	रेवती
१३ अमृत	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुरा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

दासचक्र ॥ ॥ नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थं मृत्युसंश्र
हे ॥ शीर्षे त्रीण्यर्शलाभस्यान्मुखे त्रीणि विनाशनं ॥ २५ ॥
हृदि पंचधनं धान्यपादेषट्कंदरिद्रता ॥ पृष्ठे द्वे प्राणसंदे
होना भौवेदाः शुभावहं ॥ २६ ॥ गुदे द्वे भयपीडाचदसहस्रै
कमर्शकं ॥ एकं चामेनाशकरं मृत्युभात्सामिभांतकं ॥ २७ ॥

टी० नौकररखनेकेवास्तेसुहर्तमनुष्य
केआकारचक्रलिखनाउत्तरनक्षत्रका
न्यासकरनानौकरकेनक्षत्रसेमालिक
केनक्षत्रतकगिननाप्रथममस्तकपर
नक्षत्रफलद्रव्यलाभमुखपर३नक्षत्र
फलनाशहृदपर५नक्षत्रफलधनधान्य
पादपर६नक्षत्रफलदरिद्रपीठपर२
नक्षत्रफलप्राणसंदेहनाभीपर४नक्षत्र
फलशुभगुदापर२नक्षत्रफलभय

दास



पीडा दक्षिणहस्तपर १ नक्षत्रफलद्रव्यप्राप्ती नामहस्तपर १ न
क्षत्र फल नाशकारक ऐसा दास चक्र जानना -

दासीचक्र ॥ दासीचक्रप्रवक्ष्यामिदा सीभास्वामिभां
तके ॥ श्रीर्वैश्रीणिमुखे श्रीणिस्कंधोऽयं हृदयं स्पृते ॥ २८ ॥
॥ हृदये पंचक्रहाणि भानौ पंच भगैककं ॥ जानुहृदये द्वये
जेयं पादयोश्च त्रयं त्रयं ॥ २९ ॥ फल ॥ शिरस्थाने भवेत्स्त्रा
भो मुखे हानिः प्रजायते ॥ स्कंधे च स्तामिनो मृत्युर्हृदये पु
ष्टि वर्धनं ॥ ३० ॥ नाभौ हानिः प्रदं प्रोक्तं भगे नैव पलाय
ना ॥ जानौ सेवाल भेनि स्यं पादयोस्तु धनक्षयः ॥ ३१ ॥ ॥

दासी



टी० दासीरखने का मुहूर्त स्त्री के आ
कार चक्र लिखना उत्तर नक्षत्र न्यास
करना दासी के नक्षत्र से स्वामी नक्षत्र
तक देखने का क्रम प्रथम मस्तक पर
१ नक्षत्र फल ला भमुख पर ३ नक्षत्र
फल हानि दूनों स्कंध पर २ नक्षत्र फल
स्वामी का मृत्यु हृदय पर ५ नक्षत्र फ
ल शरीर सुख नाभी पर ५ नक्षत्र फ
ल हानि भग पर १ नक्षत्र फल पलाय
न गोउके दूनों टेउने पर २ नक्षत्र फल सेवा प्राप्ती पाद पर ६ नक्षत्र
फल धनक्षय इस प्रकार से दासी चक्र जानना -

गोवृषमहिषीचक्र ॥ श्रीर्वैश्रीचयं मुखे हे च पादेष्वष्टौ विनि
र्दिशेत् ॥ हृदये पंचक्रहाणि स्तनेष्वष्टौ भगैककं ॥ ३२ ॥
फल ॥ शिरस्थाने भवेत्स्त्रा भो मुखे हानिः प्रजायते ॥ पादयो
रर्थला भवत्यात् हृदये सौख्य वर्धनं ॥ ३३ ॥ स्तनयोस्तु म
हाला भोगुस्थाने महद्वयं ॥ अर्यमादिगवां तेयं माहि
ष्यां सूर्य भान्यसेत् ॥ हृदये वृषे जेयं विशेषः पस्तुषोऽश ॥ ३४ ॥

टी० गो बैल भैंस लेने का मुहूर्त गो के आकार चक्र लिखना उत्तराफाल्गु
नी से हि नक्षत्र नक देखने का क्रम प्रथम मस्तक पर ३ नक्षत्र फल

लाभसुखपर २ नक्षत्रफलहानी पादपर ८ नक्षत्रफलद्रव्यलाभ हृद्
 यपर ५ नक्षत्रफलसुखवृद्धी स्तनपर ८ नक्षत्रफलमहालाभ भगपर
 १ नक्षत्रफलमहाभयपरंतु बैलकेचक्रमे पादपर १६ नक्षत्रजाननाभौर
 महिषीचक्रपर नक्षत्रन्याससूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतक्रयेसाक्रमजाव
 नौ



अश्वचक्र ॥ ॥ अश्वेतुसूर्यभाच्चैवसाभिजिज्ञा निविन्यसे
 त ॥ पंचस्कंधेजन्मभानपृष्ठेतुदशकन्यसेत ॥ ३५ ॥ पुच्छे
 ज्ञेयंदूयंप्राज्ञैश्चतुष्पादेचतुष्टयं ॥ उदरेपंचधिष्ण्यानिमु
 खेद्वेचप्रकीर्तिते ॥ ३६ ॥ फल ॥ सौभाग्यमर्थलाभश्चस्त्रीना
 शौरणभंगता ॥ नाशश्चअर्थलाभश्चफलं प्रोक्तंमनीषिभिः

॥ अश्व ॥ ॥ ३७ ॥

टी० घोडालेनेकामुहूर्तघोडाकेआकारच
 कलिखनासूर्यनक्षत्रसैअभिजितकेसहित
 जन्मनक्षत्रतकन्यासकरनाप्रथमस्कंधग
 रदनकेपीछेकाभागउसपर ५ नक्षत्रफलसौभा
 ग्यपीठपर १० नक्षत्रफलद्रव्यलाभ पुच्छपर
 २ नक्षत्रफलस्त्रीशश ४ पादपर ४ नक्षत्रफ
 लरणमेभंगपेटपर ५ नक्षत्रफलनाशसुखप
 र २ नक्षत्रफलद्रव्यलाभयेसाअश्वचक्रदेखना शुभआवेतोलेना -



गजचक्र ॥ ॥ गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभातं च सूर्यभात ॥
कर्णे शीर्षे हिजे पुच्छे दृगं सर्वत्र योजयेत् ॥ ३८ ॥ शृङ्गायां तु हयं
योज्यं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे ॥ षड्वै चतुर्भुजादिषु साधिति हैन्य
सेचक्रमात् ॥ ३९ ॥ फल ॥ कर्णे वै चमहालाभो मस्तके लाभ ए
व च ॥ दंते चैव भवेत्लाभो पुच्छे हातिः प्रजायते ॥ ४० ॥ शृङ्गायां
तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखं सन्पदः ॥ उदरे रोगसंभूतिर्युखे तु म
ध्यं स्मृतं ॥ ४१ ॥ पादयोश्च भवेत्लाभो ज्ञेयं विनिर्दिष्टोत् ॥

टी० हाथीले नेका मुहूर्त हाथी के आकार चक्र लिखना और पूर्व के ले
खाविधी सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक

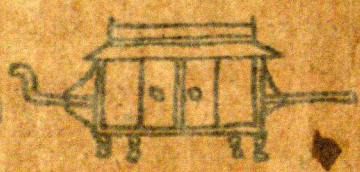
है खना प्रथम कान पर २ नक्षत्र फल म
हालाभ मस्तक पर २ नक्षत्र फल लाभ
दंत पर २ नक्षत्र फल लाभ पुच्छ पर दो
नक्षत्र फल हाथी शृङ्गा पर २ नक्षत्र फ
ल शुभ पीठ पर ४ नक्षत्र फल सुख सं
पत्ति पेट पर ४ नक्षत्र फल रोग प्रा
प्ती सुख पर ४ नक्षत्र फल मध्यम पाद पर ६ नक्षत्र फल लाभ इस
प्रकार से गजचक्र जानना शुभ आवेतो लेना -



पालकीचक्र ॥ ॥ सूर्यभादि नभं यावत् पंचपंचचतुर्दि
शि ॥ मध्ये तु सप्तदशानि चक्रं ते पं सुखा वहे ॥ ४२ ॥ फल
पूर्वभागे तु चारोग्यं दक्षिणे कष्टकारकं ॥ पश्चिमे कृशता
नैव उत्तरे व्यापि संभवः ॥ मध्यस्थं च शुभं प्रोक्तमायुर्द्व
द्विकरं परं ॥ पर्वकारोपणं चैतद्दालकस्य बुधैर्हि नम् ॥ १

टी० पालकीले नेका मुहूर्त पालकी के
आकार चक्र लिखना और उसो चार
दिशा कल्पना करना पालकी के पूर्व भा
गमे ५ नक्षत्र फल आरोग्यता पालकी
के दक्षिण भागमे ५ नक्षत्र फल दुःख
कारक पालकी के पश्चिम मे ५ नक्षत्र फ

पालकी ॥



लक्ष्मणकारकपालकीकेउत्तरमे५नक्षत्रफलरोगकारकपा०मध्यभा
गमे७नक्षत्रफलशुभआयुष्यवृद्धिकारकऐसापालकीचक्रदेखना
औरबालककोपलंगकेऊपरप्रथमवैठावनेकोयहीचक्रविचारकरना।

छत्रचक्र॥ ॥ अचरारोहिणीरौद्रपुष्पश्चशततारका
॥ धनिष्ठाश्रवणश्चैवशुभनिष्ठत्रधारणे॥ फल॥ मूलेत्री
णिसप्तदण्डकंठेचैवतुपंचकं॥ मध्येवसुप्रदातयंशि-
खरेवेदसवच॥ ४५॥ मूलेचजायतेनाशोदंडेहानिर्धन
क्षयः॥ कंठेचराजसन्धानौमध्येछत्रपतिर्भवेत्॥ ४६॥ शि-
खरेकीर्तिवृद्धिश्चजन्मभात्सूर्यभोगकं॥ ४७॥ ॥ छत्र॥

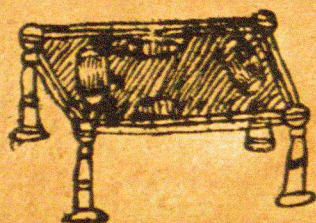
टी० प्रथमसूत्रधारणमुहूर्त्त तीनोंउत्तरा.
रोहिणी. आर्द्रा. पुष्य. शनवारका. धनि
ष्ठा. श्रवण. यहनक्षत्रमेराजानेसूत्रधार
णकरनाऔरसूत्रकेआकारचक्रलिखना
जन्मनक्षत्रसेसूर्यनक्षत्रतकदेखनेकाक



मप्रथमसूत्रकेमूलमें ३ नसूत्रफलनाशकारकदण्डमें ७ नसूत्रफल
हानीकंठमें ५ नसूत्रफलराजासेप्रतिष्ठाप्यमें ८ नसूत्रफलसूत्र
तीराजाहोयकलशपर ४ नसूत्रफलकीर्त्तिकीरुद्धिसेसाचक्रजानना

मंचकचक्र॥ ॥सूर्यभाङ्गणयेच्चांद्रमंचमूलेष्वतुश्चतुः
॥गात्रेषुत्वेकविंध्यामुमध्येसप्तविनिर्दिशेत्॥४७॥फल
॥मूलेतुसुखसौभाग्यगात्रेप्रोक्तंभयंमहत्॥मध्येसत्
पुत्रलाभायआसुरैर्द्विकरंपरं॥४८॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

टी० पलंग अथ वा खदिया का मुहूर्त
पलंग के आकार चक्र लिखना और
सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक देखने
का क्रम प्रथम मूल चारो गोड मे चार २
नक्षत्र १६ फल सुख सौभाग्य युक्त गा
ना मे ४ नक्षत्र फल महा भय और मध्य
मे ७ नक्षत्र फल पुत्र लाभ सुख रे



॥ पलंग ॥

बाणधनुषचक्र॥ ॥सूर्यभाज्जन्मभातंचधनुष्येचैव यो
जयेत्॥चापाग्रेबाणसंख्याकंशराग्रेपंचयोजयेत्॥४९
शरमूलेतथापंचपंचसंधौप्रकीर्तयेत्॥दंडद्वयंतुदद्या
द्वैधनुषश्चक्रमुत्तमं॥५०॥फल॥अग्रेहानिःशरेलाभो
शरमूलेजयस्तथा॥चापसंधौतुशौर्षेस्वादंडेभंगप्रजायते५१
टी० धनुषबाणमुहूर्ते धनुषकेआकारचक्रलिखना सूर्यनक्षत्रसे
जन्मनक्षत्रतकदेखनेकाक्रमप्रथमधनुषकेअग्रपर ५ नक्षत्रफल
हानीबाणकेअग्रपर ५ नक्षत्रफललाभ
बाणकेमूलपर ५ नक्षत्रफलजय धनुष
केदूनेसंधीपर ५ ५ नक्षत्रफलशूरता
बाणकेमध्यपर २ नक्षत्रफलसंग्राममेंभंग
ऐसेप्रकारसेधनुषचक्रजानना॥ ४८॥



रथचक्र॥ ॥रथाकारंलिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जनिभंन्यसेत्॥
रथाग्रेत्रीणिचक्राणिषड्चक्रेषुतोन्यसेत्॥५२॥रथसत्र
यंमध्यदंडेरथाग्रेभजयेत्तथा॥यूपेचभत्रयंतेयंषडुर्ध्वान्य
तिमेध्वनि॥५३॥शेषमृत्सत्रयंयोज्यंचक्रज्ञैःसर्वनीरथे॥
फल॥शृंगेमृत्पुर्जयश्चक्रैसिद्धिर्तेयचदंडके॥५४॥रथाग्रे
दंडअध्याजंमध्येचैवसुखंमुभं॥बुधैरेवंफलंज्ञेयंजन्म
भातंचक्रमेणच॥गर्गेणोक्तानिचक्राणिविज्ञेयानिसराबुधैः॥

टी० रथचक्रकामुहूर्ते रथकेआकारचक्रलिखना सूर्यनक्षत्रसे
जन्मनक्षत्रतकदेखनेकाक्रमप्रथमरथकेशृंगपर ३ नक्षत्रफलस
त्यु चक्रपर ३ नक्षत्रफलजय मध्यदंडे
उपर ३ नक्षत्रफलसिद्धिरथके अग्रपर
३ नक्षत्रफल राजदण्ड जूयेपर
३ नक्षत्रफल ऊपर मार्ग पर ३
नक्षत्रफलमुभ और शेष ३ नक्षत्र
सोसबदिशामेंफलमुभऐसाग
र्गचक्रोनेचक्रकथितकियाहै -

॥रथ॥



॥ तेलकाचक्र ॥ ॥ घाणाचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेव च
 त्रीणि त्रीणि त्रयं त्रीणि त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा ॥ ५६ ॥ त्रीणि त्रीणि तु
 भान्यत्र योजयेद्वाण केशु मे ॥ फल ॥ हानि रैश्वर्यमारोग्यं विना
 शो द्रव्यमेव च ॥ स्वामिघातो निर्धनता मृत्युरेव सुखं क्रमात् ।
 टी० तेलनिकालनेकाचक्र सूर्यनक्षत्र
 सेदिननक्षत्रतकगिननेकाक्रम तेलके
 यंत्रमेनो ९ भाग कल्पना करना नक्षत्र
 औरचक्रकेक्रमसेफलजानना ॥ ॥



ऊखकाचक्र ॥

वेदहिनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाः क्रमा
 त ॥ फल ॥ प्रथमंचलभेलुस्मीहिनीये
 हानिमेव च ॥ तृतीयेसर्वलाभंचतुर्थेक्षयंतथा ॥ ५७ ॥ पं
 चमेचभवेन्मृत्युः षष्ठस्थानेश्चभंस्मृतं ॥ सप्तमेचैवपीडास्या
 दृष्टमेधनधान्यदं ॥ ५८ ॥ सूर्यभाङ्गणयेच्चांद्रमिसुयंत्रेनियोजयेत्
 टी० ऊखकारसनिकालनेकाचक्र
 सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रतकगिन
 नेकाक्रम ऊखनिकालनेकेयंत्रमे-
 भागकल्पना करना नक्षत्रऔरच
 क्रकेक्रमसेफलजानना -



॥ घाणाचक्र ॥

कोल्हचक्र ॥

१ प्रथमभाग
 ३ भाग
 ३ भाग
 ३ भाग
 ३ भाग
 ३ भाग
 ३ भाग
 ३ भाग
 ३ भाग

हानि
 रैश्वर्य
 आरोग्य
 नाश
 द्रव्य
 स्वामिघात
 निर्धन
 मृत्यु
 सुख

४ प्रथमभाग
 २ भाग
 २ भाग
 १ भाग
 ५ भाग
 ५ भाग
 २ भाग
 ६ भाग

लक्ष्मी
 हानि
 सर्वलाभ
 क्षय
 मृत्यु
 शुभ
 पीडा
 धनधान्य

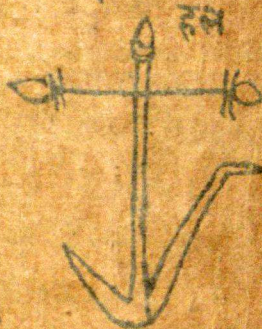
इसमेजिसदिनशुभफल आवेउसदिनकरना -

रविमुहूर्तः ॥ ॥ स्वानीया ह्यमृगोत्तरादिति युगेरधा
चतुष्कं मथारेवत्पुनरविष्णु मंकीषि विधौ क्षेत्रादिवापे
विधौ ॥ गोकन्या मृगमनाथा मृगमनाथाराः कुजा कीर्त
रं पृथीहा दशिरिक्तपर्वसु तथा वर्ज्यहिनीयाह पं ॥ ६० ॥

टी० स्वती रोहिणी मृग उत्तरा पुनर्वसु पुष्य अनुशुभा ज्येष्ठा मू
ल पूषा मघा रेवती उषा श्रवण चहनक्षत्र मे औरवृष कन्या
मीन मिथुन पहल प्रमे रेती करनेको आरंभ करना चतुर्वल दे
खका आगे मंगल शनी इसवारका त्याग करना और तिथी पृथीहा
दशिरिक्ता तिथी ४१/१४ पर और हितीयाह स्फारु विकर्ममे त्याग कर
हुलचक्र ॥ ॥ त्रिकं त्रिकं त्रिकं पंच त्रिकं पंच त्रिकं त्रिकं ॥ सू

मया दणये चान्द्रमसु भं च भु मं क्रमात् ॥ ६१ ॥ अ ॥

टी० प्रथम पहल करनेको मुहूर्त सू र्यनक्षत्रसे दि
ननक्षत्र तक गिनने का क्रय हुलचक्र मे आठ
भाग करने का करना प्रथम २ नक्षत्र फल अ
शुभ द्वितीय २ नक्षत्र फल शुभ तृतीय २ न
क्षत्र फल अशुभ चतुर्थ २ नक्षत्र फल शुभ
पंचम २ नक्षत्र फल अशुभ षष्ठ २ नक्षत्र फल



शुभ सप्तम २ नक्षत्र फल अशुभ अष्टम २ नक्षत्र फल शुभ हेसा
हुलचक्र जानना - जिसदिन शुभ नक्षत्र आये तब हुल जौत मा

नौका मुहूर्तः ॥ ॥ शौण्यादिति स्तुरगवारुण मित्र चित्रा शी
तोष्णारविमवसु जीवक भान्य पूनि ॥ गारे च जीव भृगु नन्दन
के प्रशास्ते नौकादिसंघटनवाहनमे पुकुर्यात् ॥ ६२ ॥

टी० रेवती पुनर्वसु अश्विनी शततारका अनुशुभा चित्रा मृग ह
स्त धनिष्ठा पुष्य पहल क्षत्र मे गुरु शुक्र बह्वार मे नौका बनावने
को आरंभ करना अथ राजरु मे लोडना - नौका चक्र

रविमुहूर्तः मारभ्य कुर्यात् श्री ण्युदये च सट ॥ नारत्यां त्रीणि हृदि त्री
णि पृष्ठे भूषा र्त्तं च ॥ ६३ ॥ शुक्लां त्रीणि पद्म मध्ये नौका चक्रे
असंस्थितिः ॥ उपरस्थं च पद्म मध्ये पद्म त्रैलोक्यं च परं न सत् ॥ ६४ ॥

टी० सूर्यनक्षत्रसे गिनने का क्रम ऊपर
स्तंभ पर ६ नक्षत्र नाली में तीन नक्षत्र
हृदय पर तीन नक्षत्र पीठ पर १ नक्षत्र
बाजू पर ३ नक्षत्र कान पर ३ नक्षत्र म
ध्य में ६ नक्षत्र ऐसे नौ का पर नक्षत्र



न्यास करना उपरस्थ मध्यस्थ नक्षत्र शुभ और अन्य अशुभ जान
नौ का को लग्न बल ॥ ॥ त्रिषडा यगतः सूर्यश्चंद्रो द्वि

त्र्या यगः शुभः ॥ कुजा कीं त्रिषडा यस्थौ त्रिषट्खेतरे
गोगुरुः ॥ ६५ ॥ हि सुतास्ता शूरिः फायरि पुसंस्थो बुधः स्मृ
तः ॥ सुखां त्यारी त्विनायत्र नौ याने शुभदः सितः ॥ ६६ ॥

टी० नौ का में बैठना अथ बाजल में छोड़ना तो ग्रह बल तृतीय पक्ष
एकादश इतने स्थान में सूर्य शुभ और २३/११ इतने स्थान में चंद्र
शुभ और मंगल शनी यह ३६/११ इतने स्थान में शुभ और ३६/१०
इतने स्थान में वर्जित कर को गुरु शुभ और २५/७८/१२/११/६ इ
तने स्थान में बुध शुभ ४/१२/६ इतने स्थान में वर्जित कर को शुक शु
भ ऐसा नौ का गमन में लग्न बल देखना —

नौ का के स्थान में ग्रह ॥ ॥ नात्यां पापरवगाः सौम्याः

शुक्लाणे शुभकारकाः ॥ व्यस्ता मृत्युकराः क्रूरः पृष्ठे कू
र्षे च भीतिरुत् ॥ ६७ ॥ अंते बाह्ये स्थितास्ते च ह्यलाभा

यस्मृता बुधैः ॥ एवं विचार्य देव तौ नौ यान समये वदेत् ॥ ६८

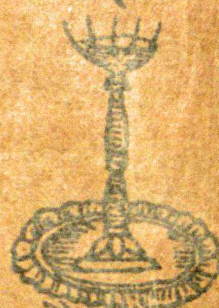
टी० प्रथम नाव की कुण्डली लिखना जो ग्रह जिस स्थान में होय उसका
फल नाली में पाप ग्रह शुभ और शुक्लाण पर शुभ ग्रह शुभ बह विपरी
त होय तो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठ पर अथवा कूस्व पर आवे तो भय
दायक होने है और भीतर अथवा बाहर आवे तो द्रव्य लाभ होय
ऐसा जानना यह नौ का गमन में विचार करना चाहिये ।

दीपिका चक्र ॥ ॥ दीपिका या मुखे पंचला भसन्मान

लाभदाः ॥ कंठे नवधन प्राप्तिर्मध्ये शैस्वामि मृत्यु

दाः ॥ ६९ ॥ दंडे पंच भवेद्राज्यं अग्निं कृत्वा च दीपिकं ॥

॥ दीप ॥



मि० दीपकचक्रकासुहूर्त दीपक के आकारच
क्रूरिखना और वृत्तिका नक्षत्रसे दिन नक्षत्रत
कन्यासकरना प्रथमसुरव पर ५ नक्षत्र फल रा
जमानलाभ कंड पर ९ नक्षत्र फल धनप्राप्ती म
ध्यमे ० नक्षत्र फल स्वामि मृत्यु देह पर ५ नक्षत्र
फल राजपदपदक ऐ सादीपक चक्र जानना -

कूपचक्र ॥ ॥ कूपवाप्यास्तुचक्रं चैविदेयं विबुधैः शुभ ॥

रोहिणी नक्षत्रमेतस्य त्रिजिह्वकसाणि चंद्रमं ॥ ७० ॥ मध्ये

पूर्वे तथा प्रेयेयाम्ये चैव नूनैर्कते ॥ पश्चिमे चैव वा प

र्यां सौम्यशूलदिशि क्रमात् ॥ ७१ ॥ फल ॥ शीघ्रं जलं

न जलं मध्यमजलं मजलं बहुजलं च ॥ अमृतं जलं व

हुसारं सजलं मध्यजलं क्रमात् ज्ञेयं ॥ ७२ ॥ मत्स्ये कुली

रेशकरे जलं बहुतथैव सा ईदृषकुं भयोश्च ॥ अलौच

तौ लौचजलापतामता शेषाश्च स वै जलदाप्रकीर्तिताः ७३

टी० कूपवाव लौखोदने के वास्ते सुहूर्त कूपके आकारचक्र क्रूरिखना
रोहिणी नक्षत्रसे दिन नक्षत्रत क देखने का क्रम प्रथम मध्यमे ३ नक्षत्र फल
जलकुंदी जलल गंगा पूर्वमे ३ नक्षत्र फल जल नही अग्निदिशामे ३ न
क्षत्र फल मध्यमजल दक्षिणदिशामे ३ नक्षत्र जल नही नैर्ऋतीदि
शामे ३ नक्षत्र फल बहुजल पश्चिममे ३ नक्षत्र फल उत्तमजल वापु
दिशामे ३ नक्षत्र फल सारजल उत्तरमे ३ नक्षत्र फल जल पुक्त ईशान्य
मे ३ नक्षत्र फल मध्यमजल हे साल ग्रसे मीन कर्क मकर इसराशी के
चंद्रमामे जल बहुत और चक्र भद्रस्वो अर्धजल वृश्चिक तुला इसो
जल थोडा और शेष राशी के चंद्रमामे जल ल गेगा नही ऐसा जानना -

चगीचालगावनेकासुहूर्त

गोसिंहारिगतेषु चोत्तरिग

ते भानौ बुधादिवरे ॥ च

न्द्रा के च शुभातु धैर्यमिहि

ताराप्रतिष्ठाक्रिया ॥ ७४ ॥



टी० बगीचाल गावने कामुहूर्त वृषसिंह वृश्चिक यहराशी के सूर्य मे अथवा
उत्तरायण मे और बुध गुरु शुक चंद्र सूर्य इन के वार मे बगीचा की प्रतिष्ठा करना

अन्य मत ॥ ॥ आश्लेषा भरणी ह्रस्वशतभिषकुत्सत्काविषा

रवांकुहं रिक्तापसतिशीष्टमीपरिहरेत्स्त्रीपिद्वादशी ॥

टी० आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अयावास्था रि
क्तातिशी पक्षतिशी अष्टमी षष्ठी द्वादशी इतने का त्याग करना और ब
गीचाल गावना -

सिकाचलावने कामुहूर्त

मृदुध्रवक्षिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्ते शनिचंद्रवर्ज्ये ॥ वारे

तथा पूर्णजलाब्धे च सुद्वा प्रशस्ता शुभदा हिराजा ॥ ७६

टी० सिकाचलावने के वास्ते मुहूर्त मृदुनक्षत्र मे ध्रुवनक्षत्र मे क्षिप्रनक्ष
त्र मे चरनक्षत्र मे और उत्तमयोग मे शुभ शनिचंद्र यह वार त्याग करना
और पूर्णयोग या जलयोग मे राजाने रुपया बनावना -

त्रयोदशदिन पक्ष फल ॥ ॥ एकपक्षे यदांति निथयश्च

योदश ॥ त्रयस्तत्र यदांति वाजिनो मनुजा गजाः ॥ ७७ ॥

टी० एकपक्ष मे १३ तिथी आवेतो घोडा मनुष्य और गज इनका नाश जा
नना -

आषाढ १५ को वायु परीक्षा ॥

आषाढ मास स्य च पौर्णिमा स्यात्सूरीस्तकाले यदि वाति वातः ॥

पूर्वस्तदा सस्य युता च मेदिनी नंदं तिलोकाजलदायि नो घनाः ॥ ७८

टी० आषाढ मास मे पौर्णिमा के दिन सूरीस्तकाल मे वायु परीक्षा उत्का
प्रकार पूर्वदिशा का वायू होय तो पृथिवी धान्य युक्त लोक सुखी मेघ वृ
ष्टि करे गो ऐसा फल जानना -

रुशानुवाते मरणं प्रजानां अन्नस्य नाशः खलु वृष्टिनाशः ॥ या

स्ये मही सस्य विवर्जिता स्यात्परस्परं यांति नृपा विनाशः ॥ ७९

टी० अग्नि कोण का वायू होय तो प्रजा का मरण अन्न नाश और वृष्टि
नाश यह फल अग्नि कोण का दक्षिणदिशा का वायू होय तो पृथ्वी धा
न्य कर के वर्जित होय और परस्पर राजा लोक नाश को प्राप्त होय यह
फल दक्षिणदिशा का जानना -

त्रैशचरो वाति यदा त्रवातो नवारि दोयच्छति वारिभूरि ॥ तदा

महीसस्यविजिनास्याक्रंदंति लोकाः सुधया प्रपीडिताः॥
टी० निर्जनिकोणका वायू होय तो पृथ्वी स्वल्प और पृथ्वी धान्यकर के
विजित. सुधाकर के पीडित लोक रोदन करे. ऐसा फल जानना -

आषाढमासे यदि पौर्णिमा सूर्योस्तकाले यदि वा शुक्ले निलः॥

प्रवर्तिनित्यः सुखिनः प्रजास्युजैलान् बहुक्तावसुधातदास्यान्॥
टी० आषाढमासे पौर्णिमा १५ के दिन सूर्योस्तकाल में पश्चिमदिशा
का वायु होय तो प्रजासुखी रहे और पृथ्वी जल अन्न इस कर को युक्त
ऐसा फल पश्चिमदिशाका जानना -

वायव्यवाते जलदा गमः स्यादन्नस्य माहो प्रवृत्तौ दूता लौ॥ सो

धिनिले धान्यजलाकुलाधरानंदंति लोका भयदुःखवर्जिताः॥

टी० वायुकोणका वायू होय तो जलका आगमन. अन्ननाश. पृथ्वी
प्रचंड वायुकर को युक्त ऐसा फल वायुकोणका और उत्तरदिशाका वा
यू होय तो धान्यजल इस कर को पृथ्वी युक्त लोक सुखी भयदुःखकर
को वर्जित ऐसे फल उत्तरदिशाका जानना -

ऐशोनरुद्धिर्वह्वारि पूरिता धरा तत्रा बोध बुद्धि संसृताः॥ भ

वैतिरुक्षाफलं पुष्पदायिनो वाते भिनर्दंति रुपाः परस्परं॥ ८३॥

टी० ईशान्यकोणका वायू होय तो पृथ्वी जल पूरित गैदुग्धकर के पू
रित रुक्ष फल पुष्पदायक राजा का परस्पर युद्ध. ऐसा फल ईशान्यको
णका जानना -

रतिवायुपरीक्षा

केतूदयफलं॥ ॥ एकोत्तरशतं लेके सहस्रमपरे वि

दुः॥ एकम्बु बहुधा भानि ग्राह्ये नारदो मुनिः॥ ८४॥

टी० केतूदयका विचार कोई आचार्य कहते हैं कि १०० प्रकार के केतू हैं
कोई हजार प्रकार के कहते हैं. परन्तु नारद मुनी कहते हैं की केतू एक
ही हैं बहुत प्रकारका भास होता है -

अन्यमतः॥ ॥ यावन्त्यहानि हश्येत् वा सन्वासेः फलं भ

वेत्॥ मासेः समाश्रितेषा दत्तं शुभं यः वित॥ ८५॥

टी० केतू जितने दिन नजर पड़े उतने मास पर फल और जितने मास न
जर पड़े उतने वर्ष पर फल जानना -

अन्यमतः ॥ सुस्त्रिंशोरुचिरः सूर्योऽक्रतुः शुक्रः शु

भप्रदाः ॥ विपरीतोऽशुभः केतुस्त्रिंशिरं द्रधनुप्रभः ॥३॥

टी० केतुकेवर्णकाविचार चिकना शोभायमानमहीनसीपाश्वेतयहशुभ-
म-इत्सेविपरीतअशुभ-तीनशिरा-द्रधनुषकेऐसीकांती यहअशुभ

मुक्ताकनकसंकाशाः सशिराः पंचविंशतिः ॥

प्राक्परस्याचतेदृष्टाः सूर्यपुत्राभयप्रदाः ॥४॥

टी० मौनीसुवर्णऐसावर्णशिरायुक्तऐसे२५सूर्यपुत्रयहपूर्वमेअ-
शवापश्चिममे उदयहोयतो भयकारकजानना -

बहुवर्णानिसंकाशाः पंचविंशतिसंख्याकाः ॥

आग्नेयादिशिसंदृष्टास्तेऽग्निपुत्राभयप्रदाः ॥५॥

टी० बहुतप्रकारकावर्णऐसे२५अग्निपुत्र-यहअग्निदिशामे उ-
दयहोयतो भयकारकजानना -

अन्यमतः ॥ याम्याशाः संस्थिताः रुष्णाः सूर्यमावक्र

शिरास्तथा ॥ तावतो वै सूर्यसुताः प्रजाः क्षयकराः स्मृताः ॥

टी० दक्षिणदिशामेस्थितरुष्णवर्ण-महीन-टेढीशिराऐसे२५य-
मपुत्रइत्येप्रजाकाक्षयऐसाफलजानना -

अन्यमतः ॥ वृताकाराश्चिशिराजलतैलसमप्रभाः

॥ द्वाविंशदुमितनया दुर्भिक्षापेशदिग्गताः ॥७॥

टी० गोलाकार शिरारहित-जल-तैलकेसमानकांति-ऐसे३९भूमि-
पुत्रयहईशान्यदिशामे उदयहोयतो दुर्भिक्षजानना -

अन्यमतः ॥ हिमरश्मिहिरण्याभास्त्रयश्चंद्रसुताः

स्मृताः ॥ उत्तरस्यां यदा दृष्टास्तदा शुभफलप्रदाः ॥८॥

टी० श्वेतकिरण-सुवर्णकांतिऐसे३चंद्रपुत्रउत्तरदिशामे उदयहोयतो शुभफल

अन्यमतः ॥ क्रूरस्त्रिवर्णस्त्रिशिर एको ब्रह्मसुतः (जानना-

स्मृतः ॥ सर्वास्वाशासुसंदृष्टो ब्रह्मदंडस्यावहः ॥९॥

टी० क्रूर-तीनप्रकारकेवर्णतीनशिराऐसाएकब्रह्मपुत्र-सर्वदिश-
मे उदयहोयतो महाप्रलुब्धकारकजानना -

अन्यमतः ॥ विसर्पाख्यः शुक्रसुताः सुस्त्रिधाः श्वेतता

रकाः॥ चतुराशीतिसंख्याकाः पुरोदृष्टाभयप्रदाः॥११॥

टी० विसर्पनाम चिकना श्वेतनक्षत्र ऐसे ५४ शुक्रके पुत्रय हू
वये उदय होय तो भयकारक जानना -

सुस्तिग्धा विशिखाश्चैषषष्टिश्चकनका ज्ञेयाः॥

शनेश्वरसुताघोरादुःखदाकेतुनारकाः॥११॥

टी० चिकना शिखारहित ऐसे ६० कनकनाम शनी पुत्र घोर दुःख
कारक केतुनारका जानना -

एकतारामहारूपाः श्वेततारामहाप्रभाः॥ वि

शिखारुहसंतेजुवाः प्रायशो दक्षिणाश्रयाः॥१२॥

टी० एकतारा महानरूप श्वेततारा महाप्रभा शिखारहित
बृहस्पतीके पुत्र इनका प्रायः दक्षिणादिशमे उदय जानना -

नामतोधिकचाघोराः षष्टिपंचाधिकास्तृताः॥

सौम्यसुतास्तारकारकाः सर्वदिक्प्रभवाश्च ते॥१३॥

टी० नाममे अधिक घोर ऐसे ६५ पुत्रके पुत्रय हनारका का सर्वदिशमे उदय

नानिव्यक्ताश्च नृणां श्वेत रूपा भयावहाः॥ (होता है-

आदित्ये शक्रनाथं च पुष्ये च मघाधिपं॥१४॥

टी० बहुत स्पष्ट नही कर श्वेत रूप भयकारक पुनर्वसु नक्षत्र पर
उदय होय तो पर्वतसम्बन्धी देश के राजा को भयकारक पुष्यमे उ
दय होय तो मगध देश के राजा को भयकारक जानना -

अशिकेशं च भोजंगे मघापांचालनायकं॥ भगे

भेषां दुनाथं च अर्यम्यो योजुयिन्धकं॥१५॥

टी० आश्लेषामे उदय होय तो अहिदेश के राजा को भयकारक मघा
मे उदय होय तो पंचाल देश के राजा को भयकारक पूष्यमे उदय
होय तो पांडु देश के राजा को भयकारक उज्जयिनी मे उदय होय तो
उज्जयिन देश के राजा को भयकारक जानना -

कुरुक्षेत्रादिकं त्वाष्ट्रहस्ते दंडकनायकं॥ स्वा

नौकाश्मीरकं योजौहिदैवैकोशलाधिपं॥१६॥

टी० चित्रमे उदय होय तो कुरुक्षेत्र के राजा को भयकारक हस्तमे उदय

होय तो दण्डकदेश के राजा को भयकारक स्वामी मे उदय होय तो
काश्मीर और कांबोज देश के राजा को भयकारक विशाखा मे उदय
होय तो कोशल देश के राजा को भयकारक जानना -

मैत्रेपुंड्रादि नाथं च सार्वभौमपुरंदरे ॥

मूले भद्रादि नाथं च जलदेवे च काशिपं ॥ १७

टी० अनुराधा मे उदय होय तो पुंड्र देश के राजा को भयकारक ज्येष्ठ मे उ
दय होय तो सार्वभौम को भयकारक मूल मे उदय होय तो भद्र देश के रा
जा को भयकारक पूर्वाषाढा मे उदय होय तो काशी के राजा को भयकारक

गौधे मार्जन वैद्यांश्च वैश्वदेवौ शिवं तथा ॥ (जानना)

वासवेयं च नदयश्च वणैकैक्याधिपं ॥ १८ ॥

टी० उत्तराषाढा मे उदय होय तो गौध देश मार्जन देश वैद्य देश शिवि द
त्ते देश के राजा को भयकारक जानना और धनिष्ठा मे उदय होय तो पंचन
द देश के राजा को भयकारक और श्रवण मे होय तो कैकेय देश के राजा को

वारुणे सिंहल प्रांते पूर्वभाद्रे च वंगपं ॥ (भयकारक जानना)

अहिर्बुध्रे नैमिष पंरे वत्या च किरातपं ॥ १९ ॥

टी० शततारका मे उदय होय तो सिंहल देश के राजा को भयकारक
पूर्वभाद्रपदा मे उदय होय तो वंग देश के राजा को भयकारक उ
त्तराभाद्रपदा मे उदय होय तो नैमिषारण्य देश के राजा को भयका
रक रेवती मे उदय होय तो किरात देश के राजा को भयकारक जानना

यस्यांदिश्युदयं याति केतुस्त्रानाभियोजयेत् ॥

यतो यतः शिखायाति राजा गच्छेन्न तस्ततः ॥ २०

टी० जिसदिशा मे केतू का उदय होय उसदिशा सम्बन्धी तीर्थ मे स्नान
न करना जिसदिशा से जिसदिशा मे केतू का पुच्छ जाय उसदिशा मे
राजा ने गमन करना ऐसा जानना -

पंचोत्तरशतं त्वेकैकेशवं प्रवदन्ति च ॥ चतुर्द

शरवेः सुत्रावरुणस्य दशैव तु ॥ २१ ॥ ४ ॥

टी० कोई आचार्य कहते हैं कि १०५ प्रकार के केतू हैं केशव आचार्य भी
कहते हैं कि १०५ प्रकार के केतू हैं उसमे १४ स्वर्य पुत्र १० वरुण पुत्र जानना

अग्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशद्य प्रस्थनवकीर्तिनाः॥

अष्टादशकुबेरस्यवायोर्विशतिरीरिताः॥२२॥

टी० अग्निनीकुमारके ३० पुत्र. यमके २० पुत्र. कुबेरके १८ पुत्र. वायूके २० पुत्र।

आग्निनेकीर्तिवै. कार्यपुत्रायांत्युदयकिल॥

मेघाजलं नमुंचति दुर्भिक्षं च स्यादिशेत्॥२३॥

टी० आग्निनमे. कीर्तिकमे. वृषके पुत्र. अथवा चंद्रहस्यनीके पुत्र उदयहोयतो वृष्टि न होगी. दुर्भिक्षकारक जानना -

चतुष्पदा विनश्यन्ति राजानः कलहप्रियाः॥

वारुणा उदयं यांति श्रावणे च न भस्यते॥२४॥

टी० श्रावण और भाद्रपद मे वरुणके पुत्र का उदय होय तो नाना प्रकारके प्रभूकानाश और परस्पर राजालोभ का कलह जानना -

पृथिवीजलसस्यादपालोकाश्चानंदसंयुताः॥

मार्गमासितथा पौषे दृश्यन्ते वन्ति पुत्रकाः॥२५॥

टी० मार्गशीर्षमे और पौषमे अग्नीके पुत्र का उदय होय तो पृथ्वीजल अश्वसे युक्त और लोकवहुत आनंदसे युक्त ऐसा जानना -

अग्निचौरभयं पुनः प्रजानां शं प्रयांति च॥ पृथिवी

भी भयसं युक्ता प्राणिनां व्याधिमादिशेत्॥२६॥

टी० माघमे और फाल्गुनमे चमके पुत्र का उदय होय तो अग्निभय और चौरभय और पुत्रकानाश और प्रजाकानाश पृथ्वीभयसे युक्त और सब प्राणिको शरीर पीडाऐसा जानना -

चैत्रे माधवमासे तु कौबेरस्यात्मजाः रत्नलाः॥

यास्तु नृमेतदा मेघा बहुवारिप्रदामताः॥२७॥

टी० चैत्रमे और वैशाखमे कुबेरके पुत्र का उदय होय तो मेघबहुत जल की वृष्टि करेगा ऐसा जानना -

धनधान्ययुता पृथ्वी प्रजाश्चानंदसंयुताः॥ या

पुत्राः प्रदृश्यन्ते ज्येष्ठे मासे शुचीतथा॥२८॥॥

टी० ज्येष्ठमे और आषाढमे वायूके पुत्र का उदय होय तो धनधान्यसे युक्त पृथिवी और सब प्रजा आनंदसे युक्त होगी ऐसा जानना -

क्रूरकेतूदयफलं ॥ ॥ उद्धूतोवांतिवाताश्चदिशश्चरं
जसावृताः ॥ पतन्तिगिरिभृङ्गाणिनिपतन्तिमहीरुहाः

॥ २९ ॥ चोराग्निजनितापीडाराजानः कलहप्रियाः ॥

टी० जिस वर्ष में क्रूरकेतू का उदय होय उस वर्ष में बहुत वायू चले
गा और दसो दिशा धूर से व्याप्त रहेंगी और पर्वत के शृंग का पतन हो
गा और बहुत से पेड़ भी गिरेंगे और चोर-अग्नि इन से लोक को पीडा हो
गी और राजा लोक पर स्पर कलह माने बैर करेंगे ऐसा जानना इतिकेतु

(फलम्)

॥ अथ अंगविद्या ॥

देवजेन शुभाशुभं दिगुदितस्था बाहता नीक्षता वाच्यं प्रष्टुनि
जापरांग घटनां चालोक्य कालं धिया ॥ सर्वज्ञो हि चराचरात्मक
तया सौ सर्वदर्शी विभुश्चेष्टा व्याहृतिभिः शुभाशुभफलं संदर्शय
टी० पूर्वादिदिशा पृच्छक का भाषण स्थान पृच्छक ने कुछ (त्यर्थिनां ?
ले आया पदार्थ इस्को देखने वाले ज्योतिषी ने पृच्छक अन्य मनुष्य इस्के अं
ग की घटना (स्पर्शादिक) यह और काल (वरवत) इस्को देख के पृच्छक
को शुभाशुभ कथन करना जिसके कारण यह काल स्थावर जंगम जगत
का आत्मा है इस वास्ते सर्व जानने वाला सर्व देखने वाला सर्व व्यापक है
इस वास्ते प्रश्न करने वाले को स्पर्शादि चेष्टा और भाषण इन कर के शुभाशुभ दे

स्थानं पुष्पमुहासि भूरिफलभृत्सुस्त्रिगुह्यकृत्ति (खावते है)

च्छदा सत्यसिच्युतशस्तसंज्ञिततरुच्छा योपगूढं

समं ॥ देवर्षिद्विजसाधुसिद्धनिलयं सत्युषसस्योसि

तंस त्वादुदकनिर्मलत्वजनिताल्हादंच सच्छादुलं २

टी० प्रफुल्लित पुष्प से हास्य करने वाले बहुत फल से युक्त ओरी छाल और प
ताइन से युक्त का कोलू कादि अशुभ पक्षिरहित ऐसे पलास पीपल वरु
इत्यादि शुभ नाम के जो वृक्ष उन के छाया से आच्छादित सम (ऊँचा छोटा न
है) देव ऋषि ब्राह्मण साधु सिद्ध इन के रहने के स्थान उत्तम पुष्प औ
र पान्य इन से युक्त मीठे जल के निर्मलत्व से आनंददायक दूर्वादि हरे तण
से युक्त ऐसा स्थान प्रश्न करने वाले को शुभ होता है ॥ ३० ॥

द्विचभिन्नरूपितानकंदकिपुष्टरूपाकुटिलैर्न सतुजैः ॥

भूरपक्षिपुतनिधनामभिः शुक्रशीर्षे बह्वर्णचर्मभिः ॥ ३॥

श्मशानभून्प्रायतनंचनुष्यं नशामनो ज्ञेयविषयं सदोषर ॥

अवस्करांगारकपालभस्मभिर्विवृतं नुचैः शुष्कतृणैर्वेशोभनं ४

टी० कृत्स्नभिन्नकांटेनेखाकांटेकाजलाकूटदेहाकाकादिभूर
पक्षीसेयुक्तवेहाडादिनिधनामकशुष्कऔरगलितहैबहुतपर्णऔर
रत्नचाजिनकीऐसेवृक्षसेयुक्तस्थानप्रश्नकोशुभनहीं ॥ ३॥ श्मशान

भून्प्रायतनदेवगृहबबहटाआनंदकारकनहीं ऊंचानीचासर्वकाल
रेतीसेयुक्तअवस्कर(विष्टाकतवार)कोइलाहाडभस्मइनकरके
व्याहृधान्यत्वचा(भूरी)औरशुष्कतृणइनकरकेव्यापरेसेस्थानप्रश्नको
प्रव्रजितनग्रनापितरिपुवंपनसूनिक्केस्तथाशुपत्नेः ॥ (शुभनहीं)

कितवयति पीडितैर्युतवायुपमाध्वी कविं कथैर्न शुभं ॥ ५॥

टी० तपस्वीनग्रनापितशुष्कवंपनशलापशुधानीकांडालकपटीसत्याही
तोगीआसुधगृहमद्यविक्रयइनकरकेयुक्तस्थानप्रश्नकोशुभनहीं ॥ ५॥

शायुतैरेशश्चदिशः प्रशस्ताश्चैते वाय्वं बुधमागिरक्षः ॥

पूर्वाण्डकालेस्ति शुभं न रात्रौ संध्यादये प्रभुल्लोपराण्डे ॥ ६॥

टी० पूर्वोत्तरदिशानयदिशानेतरफप्रभुल्लोपराण्डेकासुसहोयनोशुभहै
वायव्यपश्चिमनैर्ऋतीइसनरफहोयनोअशुभदिनकेप्रथमभागमेंप्रभु
शुभरात्रीजातः सायंसंध्यासमयमेंऔरअपराण्डमेंअशुभहोताहैदि

यात्राविधाने हि शुभाशुभं यत्कृतं निमित्तं तद्दिह विवाच्य ॥

दृष्ट्वा पुरोवाजमत्ताहृतं कृपणस्थितं पाणितले यवत् ॥ ७॥

टी० यात्राप्रकरणमेंजोशुभाशुभकृतनिमित्तकथनकियासोभीप्रभुस
मयमेंदेखनाऔरअपनेआगेकापदार्थऔरकोईदेआयापदार्थऔरप्र
श्नकर्तैवालेकेहाथमेंअथवावस्त्रमेंलेयसोपदार्थदेसकेशुभाशुभकहना ॥

अथांगान्यूर्वाष्टस्तनवृषणपादंचतुशानाभुजौहस्तौमंडौ

कचगलनरवांगुष्ठमपिपत् ॥ सशंखकक्षासश्च वणमुद

संधीति पुरुषेस्त्रिपां भूना सास्त्रिगुलिकादिमुलेखांगुलि

चयं ॥ ८॥ जिह्वायीवापिदिकेपाणिंयुग्यंजंथैनाभिः कर्णौ

पालीकृत्वाही ॥ बभ्रंश्चैव जघनस्थिपार्श्वहस्तात्तुहरी

मेहनोरस्त्रिकंच॥९॥नपुंसकारव्यंचशिरोरुलाटं
आशवाद्यसंज्ञैरपरैश्चिरेण॥सिद्धिर्भवेज्जातुनपुं
सकैर्नोरुससतैर्भग्नकृशैश्चपूर्वैः॥१०॥ ॥ ॥

टी० जंघा० औष्ठ० स्तन० वृषण० पाद० दंत० भुजहस्त० गालकेश० कण्ठ० न
ख० हस्तपादाङ्गुष्ठ० बगल० स्कंध० कान० गुद० सर्वांगकीसंधी० शंख० य
ह सर्व अवयव० पुरुषसंज्ञक है० भौ० नासिका० चूतार० बली० उदरकी
त्रिवली० कमर० हस्तादिककी उत्तमरेषा० अंगुलिसमूह॥१०॥ जिह्वा
गरदन० पेंडुरी० दूनोरुडी० पोटरी० नाभी० कानकी पाली० कृकाटी० ग
रदनकासीधभाग० यह अवयव स्त्रीसंज्ञक० मुख० पृष्ठ० जत्रु० बाहु
और कंठ इनकी संधी० हसुली० केहुनी हाड० पार्श्व० (पसुली) हृद
य० तालु० नेत्र० लिंग० वक्षस्थल० त्रिक० (पीठके दंडके नीचे मिला जो
तीन हाड सो)॥९॥ शिर० ललाट० यह अवयव नपुंसकसंज्ञक० आ
द्य कहिये पुरुषसंज्ञक० अवयव से शीघ्र कार्य सिद्धि होती है० अप
र क० स्त्रीसंज्ञक से बहुत काल से कार्य सिद्धि० नपुंसक से सिद्धि हो
तीन ही० और रुस० क्षत० भग्न० कृश० ऐसे पुरुषसंज्ञक और स्त्रीसंज्ञक अ
वयव होय तो सिद्धि होतीन ही यह फल स्पर्शदिकका जानना० -

स्पृष्टे वा चािलिने वापि पादांगुष्ठे स्मिरुग्भवेत्॥

अंगुल्यांदुहितुः शोकं शिरोघातेनृणाङ्गयं॥ ११॥

टी० पांवके अंगूठेको स्पर्श करे वा हिलावे तो पृच्छकको नेत्ररोग हो
ता है० अंगुलीको स्पर्श करके पूछे तो कन्याका नाश होता है० मस्त
कको ताडन करके पूछे तो राजा से पृच्छकको भय होता है० - ॥११॥

विप्रयोगपुरसिस्वगात्रतः कर्पटाहतिरनर्थदा भवेत्॥

स्यात्प्रियाग्निरभिगृह्य कर्पटं पृच्छतश्चरणपादयोजितुः १२

टी० पृच्छक हृदयमे स्पर्श करके प्रश्न करे तो कोई काभी बियोग होता है
स्वशरीर से बचछो डे तो अनर्थ होता है० वस्त्र लेके गोड पर गोड रखके
पृच्छक प्रश्न करे तो प्रियवस्तु की प्राप्ति होगी ऐसा कहना॥१२॥ ॥ ॥

पादांगुष्ठेन विलिखेद्भूमिं होत्रेत्यचिंतया॥

हस्तेन पादौ कंडूयेन स्य दासी मया च सा॥ १३॥ +

टी० पादंगुष्ठसे भूमीपरदेशानिवाले तो वह पृच्छक को क्षेप्योत्पन्न चिं
ता कहना-हस्तसे पांव खजवावे तो उसको दासीकृत चिंता कहना ॥१३॥

तालभूर्जपरदर्शनेन्युक्चिंतयेत्तच्चतुष्पाप्तिभस्मगं ॥

व्याधिराश्रयनिरज्जुजालकं वल्कलं च समवेक्ष्य बंधनं ॥१४॥

टी० तादुपत्र और भूर्जपत्र इनका दर्शन होय तो पृच्छक को वस्त्रकी चिं
ता कहना-केशभूसाहाड भस्म इनका दर्शन होय तो व्याधी होती है-डो
री-जाल-वल्कल यह प्रश्नकालमें दर्शन होय तो बंधन होता है- ॥१४॥

पिप्पली मरिचधुंठिवारिदैरोध्रकुष्ठवसनाम्वुजीरकैः ॥

गंधमांसि शतपुष्पावदेत्यृच्छतस्मिन् गरकेण चिंतयेत् ॥१५॥

स्त्रीपुरुषदोषपीडितसर्वाधनुतार्थधान्यतनयानां ॥

द्विचतुष्पदसितोनां चिनाशतः कीर्तिर्नैर्दृष्टैः ॥१६॥ ॥

टी० प्रश्नसमयमें पिपर देखे तो सतोषस्त्रीविषयक चिंता-मरिचवा
पिरचादे-सतोषपुरुषवि-चिंता-होठदे-व्याधितवायुतवि-चिंता-
नागरमोघादे-सर्वनाशवि-चिंता-सोभ्रदे-मार्गनाशवि-चिंता-कुट्ट
वाकुलंजनदे-पुत्रनाशवि-चिंता-वक्रदे-अर्धनाशवि-चिंता-जलदे-
धान्यनाशकृतचिंता-जीरादेखे तो पुत्रनाशकृतचिंता-जटाभासि देखे तो
द्विशफनाशकृतचिंता-शतपुष्पा (सौफ) दे-चतुष्पादनाशकृतचिंता-
तगरदे-भूमिनाशकृतचिंता-यह चिंता प्रश्न करनेवाले को है ऐसा कहना-

न्यग्रोधमधुकर्तिदुकर्तुं बुद्ध्या प्रवदति जनिफलैः ॥ १७॥

धनवानकपुरुषलोहांशुकस्तु दुर्बरातिरपिकरगैः ॥१८॥

टी० प्रश्न करनेवाले के हाथ में बड़का फल होय तो धनप्राप्ति-मौहाका फल
होय तो सुवर्णप्राप्ति-दूका फल होय तो पुरुषप्राप्ति-जासुनका फल हो
य तो लोहप्राप्ति-पाकरका फल होय तो वस्त्रप्राप्ति-आमका फल होय
तो रौप्यप्राप्ति-जायफल होय तो नाशप्राप्ति-हो गी ऐसा कहना- ॥१८॥

धान्यपरिपूर्णापात्रं कुंभः पूर्णः कुटुंबवृद्धिकरौ ॥

गजगोशुनोपुरी बंधनयुवति सुहृदिनाशकरौ ॥१९॥

टी० प्रश्न करनेवाले के हाथ में धान्यसे पूरित पात्र वा जलपूर्ण कुंभ होय तो
कुटुंबकी वृद्धि होती है-हाथी की विद्या होय तो धननाश-गौ की विद्या हो

यतोस्त्रियों का व्यभिचार कुत्ते की बिछा होय तो मित्रनाश यह होता है ऐसा

पशुहस्तिमहिषपंकजरजतव्याघ्रैर्लभेत सदृष्टे ॥

अविधननिवसनमलयजकौशेयाभरणसंघातं ॥१९॥

टी० प्रश्नकालमे पशुनजरपडे तो कंबलकालाभ हाथी नजरपडे तो धनलाभ महिषन० वस्त्रलाभ कमलन० मलयज (चंदन) लाभ सौप्यन० कौशेयवस्त्र (पीतांबर) लाभ व्याघ्रनजरपडे तो अलंकारलाभ यह प्रश्न करने वाले को मिलेगा ऐसा कहना ॥१९॥ ॥

पृच्छावृद्धश्रावकसुपरिव्राड्दर्शनेनृभिर्विहिता ॥

मित्रद्युतार्थभवागणिकानृपसूतिका र्यरुता ॥२०॥

टी० प्रश्नकालमे वृद्धश्रावक (कापालिक जैन मती) इनका दर्शन होय तो मित्रार्थवाद्युतार्थ पुरुषने प्रश्न किया उन्नमसंन्यासीका दर्शन होय तो वेश्या राजा सूतिका इस विषयमे प्रश्न किया ऐसा कहना २०

शाक्योपाध्यायार्हतनिर्ग्रथनिमित्तनिगमकैवर्तैः ॥

चौरचमूपतिवणिजां दासीयोधापणस्थवध्यानां ॥२१॥

टी० शाक्य (बौद्धमतस्थापनकर्ता) नजरपडे तो चौरविषयक प्रश्न उपाध्याय नजर सेनापतिवि० अर्हत (बौद्धमतानुसारी) न० व्यापारवि० निर्ग्रथ (दिगंबरसाधु) न० दासीवि० निमित्त (दैवज्ञ ज्योतिषी) न० योद्धावि० निगम (व्यापारी का समूह काफला) न० अमणस्थ कु ---

लपरम्परागतशिल्पज्ञकिंवा बजारमे रहनेवाला विषयक० जो लहान० वध्यप्राणि विषयक प्रश्न है ऐसा कहना ॥२१॥

तापसे शौडिके दृष्टे प्रोषितः पशुपालनं ॥

हृत्ततंपृच्छकस्य स्यादुच्छरुतौ विपन्नता ॥२२॥

टी० प्रश्न समयमे तपस्वी नजरपडे तो कोई प्रवासमे गया उस्की चिंता प्रश्न करने वाले के मनमे है मद्यपी न० पशुपालनरुतचिंता उच्छरुति (खेतमे सेका देने के बाद अन्धबीन ल्यावे सो) न० विपत्ति विषयक चिंता पृच्छक के मनमे है ऐसा कहना ॥२२॥ ॥

इच्छामि प्रष्टुं भणपश्यत्वार्थः समादिशेत्सुक्ते ॥

संयोगकुटुबोत्थालाभैश्वर्यो हताचिंता ॥२३॥ ॥

टी० प्रश्न करने को इच्छा करते हैं ऐसी प्रश्नकर्ता भाषण करते तो संयोग
(भेट) विषयक चिन्ता भण (कहो) ऐसी बोले तो कुटुंबोत्पन्न चिन्ता
पश्यतु आर्यः (सत्सुखदेखो) ऐसी बोले तो लाभोत्पन्न चिन्ता समा
दिश (आशा करो) ऐसी बोले तो ऐश्वर्योत्पन्न चिन्ता प्रश्न करने वा
ले के मन में है ऐसी कहना ॥ २२ ॥

निर्दिशेति गदिते जया ध्वजा प्रत्यवेक्ष्य मम चिन्तितं वद ॥

आमु सर्वजनमध्यगतं त्वया दृश्यतामिति चतुर्वधुचौरजा ॥ २४

टी० निर्दिश (स्पष्ट कहो) ऐसी इच्छा क भाषण करते तो जया ध्वजा मार्गे
विषयक चिन्ता प्रत्यवेक्ष्य मम चिन्तितं वद (देख के हमारा चिन्तित
कहो) ऐसी भा० चतुर्वधु विषयक चिन्ता सर्वजनमध्यगतं देखने वाले
को आमु त्वया दृश्यतां (प्रीति प्रत्युपदेखो) ऐसी पूछे तो चौर विषयक
चिन्ता प्रश्न करने वाले को है ऐसी कहना ॥ २४ ॥

अंतस्थे गे स्वजन उदितो बाह्यजे बाह्य एवं पादां गुष्ठां

गुलिकलुनया दासदासीजनः स्थात् ॥ जंघे प्रेष्ठ्या भ

वति भगिनी नाभितो हृत्तन् भायी पाण्यं गुष्ठां गुलिक

चयकृतस्पर्शने पुनः कन्ये ॥ २५ ॥ आतां जठरे पृष्ठिगुत्तं

दक्षिण वामको ॥ बाहू आताय वत्सली स्पृष्ट्वे च चौरमादिशत् ॥ २६

टी० प्रश्न समय में प्रश्नकर्ता अंतस्थ (गुप्त) अंग को स्पर्श करे तो स्वत
न चौर कथनीकथा बाह्य अंग में स्पर्श करे तो बाह्य कथा चौर कथन क
रना पादां गुष्ठ स्पर्श मे दास० पादां गुली स्पर्श मे दासी० जंघा स्पर्श
मे सेवक० नाभि स्पर्श मे भगिनी० हृत् स्पर्श मे स्वस्त्री० हस्तां गुष्ठ
स्पर्श मे पुत्र० हस्तां गुली स्पर्श मे स्वकन्या ॥ २५ ॥ उदर स्पर्श मे माना
शिवरस्य० गुरु० दक्षिण बाहुस्य० आता वाम बाहुस्य० आत पत्नी
इसरीति से स्पर्श पर से चौर कथन करना ॥ २६ ॥

अंतरंगमवमुच्य बाह्यगस्पर्शनं यदि करोति पृच्छकः ॥

लेपमूत्रशकृतस्य जन्मधः पातयेत् करतलं स्थवस्तु नेत्र

॥ भृशमवनामितां परिमोहन तोष्य शवाज न धृत रिक्ते

आहुमवलो क्य च चौरजनं ॥ हतपतितस्तता स्पृत्त विनष्ट

विभग्नगतोन्मुषितमृनाद्यनिष्टरवतोलभतेनहतं॥२८॥

टी० प्रश्नकर्ता अंतरंग (गुप्त) अवयव छोड़के बाह्य अवयव को प्रश्न कालमें स्पर्श करे अथवा श्लेष्मा (कफ) मूत्र विषा यह नीचे छोड़े वा हाथमें की कोई वस्तु नीचे गिरावे॥२७॥ अंगपरिमोटन कहिये स रीरमोडे हाडतोडे लोकने धारण किया खाली पात्र वा चोर इसको देखे वाले गयो गिरा व्रण भूले टंगरा तूटा गया उखाड़ कैले गये मरा यह शब्द किंवा ऐसे अर्थ के तीनों लिंगमें अनिष्ट शब्द प्रश्न करनेवाले को सुनाई पड़े तो नष्ट वस्तु मिलेगी नही॥२८॥

निगदितमिदं यत्तत्सर्वं तुषास्थिविषादिकैः सह मृत्तिकरं पीडानानां समरुदितस्तुतैः॥ अवयवमपि स्पृष्ट्वा तः स्थं दृढं मरुदाहरेदतिबहुतदा भुक्तानं संस्थितः सुहितो वदेत्॥२९॥

टी० २७।२८ श्लोकमें नष्ट वस्तु विषे कथन किया सो सर्व तुष (धान्य का भूसा) हाड विष रोदन छीक इनके सहित होय तो रोगी को (रोग विषयक प्रश्न होय तो) मृत्यु कारक होता है अंतः स्थ स्थिर अवयव को स्पर्श करके वायु वाहर निकालते रहते प्रश्न करे तो प्रश्नकर्ता बहुत अन्न खाये के तृप्त होय के प्रश्न करता है ऐसा कहना २९ ललाटस्पर्शनाच्छूकदर्शनाच्छूलिजौदनं॥

उरःस्पर्शात्पृष्ठकान्ते ग्रीवास्पर्शश्च यावत्॥३०॥

टी० प्रश्नकर्ता ललाटस्पर्श करे किंवा शुक (सुगा) धान्य देखे तो भात भक्षण करके प्रश्न करता है हृदय स्पर्श करे तो साठी चावल का अन्न और कंठ में स्पर्श करे तो पवान्न भक्षण किया ऐसा कहना - ॥३०॥

कुक्षिकुचजठरजानुस्पर्शमाषाः पयस्तिलयवाग्वः॥

आस्वादयत्तश्चैष्टौ लिहतो मधुरं संज्ञेयम्॥३१॥

टी० कुक्षिस्तन उदर जानु इनको स्पर्श करे तो क्रमसे माष दुग्ध तिल पवागू (भात की कांजी) यह भक्षण किया और आस्वादन (मीठा सलोना) करे वा चाहे तो मीठारस प्रश्न करनेवाले ने भक्षण किया

विस्पृक्के स्फोटयेज्जिह्वामास्ते वच्चं विकूणयेत् (ऐसा कहना) ॥ कुटुतिक्तकषायोद्योर्हिक्केतुश्चैव च सैधवे॥३२॥

टी० जीभचलावेतो विस्तृक् एह पदार्थस्वाया सूटेठा करे तो स्व
 द्या स्वाया उचकी आवे तो निक्त कहुआ और कषाय पदार्थ स्वाया है
 थूके तो संधववा स्वाया पदार्थ स्वाया है ऐसा कहना ॥३३॥

स्नेहात्यागे शुष्कति नंतदल्पशुत्वा कव्याद्रे
 ह्यवा मांसमिग्र ॥ भूगण्डौ हृस्पर्शने शकुने न
 दुक्ततेनेत्युक्तमेतन्निमित्तम् ॥३३॥ छ ॥ ३४ ॥

टी० दृच्छक कफत्याग करे तो शुष्क और कटु ऐसा अल्प भक्षण किया
 मांस भक्षण करने वाले प्राणी को देखे वा श्रवण करे तो मांस पुक्त भ
 क्षण किया भोगारु ओष्ट दूध को स्पर्श करे तो पक्षि मांस दृच्छक
 ने भक्षण किया ऐसा पहनिमित्त (चिन्ह) कहना ॥३३॥

मूर्धगलकेशहनुशंखकर्णजघंबस्तिचस्पृष्टा ॥
 गजमहिषवेषशूकरगोशशमृगमांसपुष्पुक्तं ॥३४॥

टी० मस्तक गल केश हनु शंख कान घोटरी बस्ती लाभी के नी
 चे का भाग गर्भाशय इनको स्पर्श करे तो क्रम से गज महीहव ये
 हा सूहार गौ खर गौस मृग इनके मांस से पुक्त भोजन दृच्छक ने कि
 दृष्टे श्रुते वा शकुने गो धामत्यागिषं वदेदुक्तं (यऐसा कहना)

॥ गर्भिणीगर्भस्य च निषत नये व प्रकल्पयेत्पशू ॥३५॥ ३४

टी० दुग्धाकुन देखे वा सुने तो प्रशकारने वाले ने गोहवा मतलब इनका मांस
 भक्षण किया ऐसा कहना गर्भिणी के प्रशनिषय के भी ऐसे ही कल्पना क
 ला दुग्धाकुन दृष्ट श्रुत होय तो गर्भपात होना ऐसा दृच्छक को कहना ॥३५॥

उंस्त्रीनपुंसकाव्येदृष्टेनुमिते पुरःस्थिते स्पृष्टे ॥

तज्जन्यवर्तिषानान्नपुष्पफलदर्शने न शुभं ॥३६॥

टी० गर्भप्रशसमय मे पुरुष दृष्ट अनुमित पुरःस्थित वा स्पृष्ट होय
 तो पुरुष जन्य स्त्री दृष्टादि होय तो स्त्री जन्य नपुंसक दृष्टादि होय
 तो नपुंसक जन्य होगा ऐसा प्रशकर्ता को कहना मद्य अन्न पुष्प
 फल यह प्रशसमय मे होय तो सुख से प्रसूति होगी ऐसा कहना ॥३६॥

अपुष्टेन भूदरे वा गृहि वा स्पृष्टा पृच्छेद्भवेति नातदा स्यात् ॥

मध्याज्यादि मरुत प्रगात्तर ग्रसेय वा मातृधात्र्यात्वा जैश्च ॥३७॥

टी० स्त्री अंगुष्ठ करके भों अथवा उदर वा अंगुली इस्को स्पर्श करके प्र
श्र करे तो गर्भ के विषे प्रश्र ऐसा कहना अथवा मधु घृत पुरुष नाम क
उत्तम फल सुवर्ण रत्न मूंगा माता धात्री (दायी) पुत्र यह आगे होय
और प्रश्र करे तो गर्भ के विषे प्रश्र ऐसा कहना -

गर्भयुता जठरे कर गे स्याद्दुष्ट निमित्त वशात्तदुदासः॥

कर्षति तज्जठरं यदि पीठोत्तौ डनतः करगे च करेपि ३८

टी० गर्भयुक्त स्त्री उदर पर हाथ रख के प्रश्र करे और उस काल मे छीक इत्यादि
दुर्निमित्त होय तो गर्भ पात होगा ऐसा कहना अथवा आसन का मर्दन करे उदर र
जवावे किंवा हाथ से हाथ धर के प्रश्र करे तो गर्भ पात होगा ऐसा कहना ॥ ३८

घ्राणाद्यादक्षिणे द्वारे स्पृष्टे मासोत्तरं वदेत्॥

वामे द्वौ कर्ण एवं माद्विचतुर्ध्रः श्रुतिस्तने ॥ ३९ ॥

टी० नाक के दहिने तरफ स्पर्श करके स्त्री गर्भ के विषे प्रश्र करे तो एक
महिने से गर्भ ग्रहण होगा बाए तरफ स्पर्श करे तो दो वर्ष से बाए कान
को स्पर्श करे तो दो वर्ष से दहिने कान को स्प० दो महिने से स्नान का
स्पर्श करे तो चार महिने से गर्भ धारण होगा ऐसा कहना - ॥ ३९ ॥

वेणीमूले त्रीन्सुतान्कन्यके द्वे कर्णे पुत्रान्यंच हस्ते त्रयंच॥

अंगुष्ठान्ते पंचकंचानुपूर्व्या पादांगुष्ठे पार्श्वे युग्मेपि कन्यां ४०

टी० स्त्री वेणी मूल को स्पर्श करके प्रश्र करे तो तीन पुत्र और दो कन्या
होगी कान को स्पर्श० पांच पुत्र हाथ से हाथ को स्प० तीन पुत्र हाथ के क
निष्ठिका को स्प० १ पुत्र अनामिका को स्प० २ पुत्र मध्य को स्पर्श० ३
पुत्र तर्जनी स्पर्श करे तो ४ पुत्र अंगुष्ठ को स्प० ५ पुत्र होंगे पाँव का
अंगुष्ठ दूनों एडी इन को स्पर्श करे तो १ कन्या होगी ऐसा कहना ॥ ४०

सव्या सव्यो रुसं स्पर्शं सूते कन्या सुतद्वयं॥

स्पृष्टे ललाट मध्यांते चतुस्त्रितनया भवेत् ॥ ४१ ॥

टी० बाए वा दहिने जंघा को स्पर्श करे तो दो कन्या और दो पुत्र होंगे
ललाट के मध्य मे स्पर्श करे तो ४ पुत्र ललाट के अंत मे स्पर्श करे तो
तीन पुत्र होंगे ऐसा कहना ॥ ४१ ॥

शिरो ललार भ्रू कर्ण गंडहनुर दागलं ॥ सव्या पस

व्यस्कंधश्च हस्तो निबुक्कनालकं ॥४२॥ उरः कुचं दक्षि
पामव्यसं व्यहता र्वमंजु उरं कटिश्च ॥ शिक्कनासु
संभूरु पुगं वज्रा नूजं घेषपाद विनिकृत्तिकादौ ॥४३॥

टी० प्रश्नसमयधेनर्गिणी स्त्री० शिरादि अवयवोको स्पर्शकरेनो बहस्वी
 कृत्तिकादिनक्षत्रमे प्रसूतहोनी हेमाजानना शिरस्पर्शकरेनो कृत्तिका
 रुलादस्य० रोहिणी० भुक्रुटीस्य० पूगशिर० कर्णस्पर्श० आर्द्रा० गालस्य०
 पुनर्वसु० हनुस्य० पुष्य० दंतस्य० आश्लेषा० कंठ० मघा० दहिनाखंडा०
 पूर्वा० बाबासंदा० उत्तरा० हाथ० हस्त० त्रिबुक् (ओठकेनीचेका भाग) दि
 या० कंठकीनली० स्वाती॥ ४२॥ उर० विशाखा० दहिमास्तन० अनुराधा०
 बाएस्तन० ज्येष्ठा० हृदय० मूल० दक्षिणपाश्वर्य० पूर्वाषाढा० बायपाश्वर्य०
 उत्तराषाढा० उदर० श्रवण० कटि० धनिष्ठा० चूतडु औरगुदइस्कीसंधी
 बायोनि० शततारका० दहिनीजंघा० पूर्वाभा० वामजंघा० उत्तराभा०
 ठेउभा० देवती० पेडुरी० अश्विनी० पादस्पर्श० भरणी० इसप्रमाणसेजानना

इतिनिगदितमेतत्तान्नसंज्ञाशैलद्वयप्रकृतमभिमता

सर्वे जीवस्य शारदाणि सन्त्यहं विपुलपतिरुद्धारोवेति ५

सर्वमेतन्नरयतिजननाभिः पूज्यते सौमदैव ॥ ५४ ॥

दी-वृक्ष प्रकार के बहुत शगुन देव के इच्छित मनोरथ की प्राप्ति हो परस
नामेशरीर स्पर्श लक्षण स्पष्ट कथन कि सायह सर्व-बहुत बुद्धिमान और
उदार (निर्लोभ) ऐसा जो ज्योतिषी जानता है सोर। जाको और बहुत
लोकको सर्वकाल पूज्य होता है ॥४४॥ ॥ इति अंगविद्या ॥ ॥ ॥

वर्षफल वृत्तावनेकाप्रकार ॥

शैलज्योमस्वचंद्रैश्चगुणोभुक्ताब्दपिंडकना अष्टात्याजने

सुखं जनिवासरदष्टयुक् ॥ सायनस्यनुवारादिसुदंस्याः सप्रशेषितं ।

टी० प्रथम वर्ष का वारा दिह दृष्टना बनेका प्रकार शैल ७ ज्योम १२०
द्व॥ १००७ सेगताब्द को गुण देना ५०० सैंसे भाग लेना जो लब्धी आये
सो वारादि उस्मे लग्न काल का वार और दृष्ट घटी ग्रह जोड देना और
वार स्थान मे ७ से दीक्षित करना तो वर्ष का वार और दृष्ट घटी ग्रह स्प
ष्ट हो ने है उदाहरण सबत १९०८ शके १७७१ आश्विन शुक्ल १२ औसवार प ११

ज्योतिषसार २३९

पल ५४ मृगशिर नक्षत्र घ० ५४ प० ६ वृद्धि योग घ० २ पल २ स्तूपोदयसे
 गत घटी ५५ पल ३५ यह कि सी का जन्म काल इस्का वर्ष प्रवेश साधन
 यह शके १७७१ इस्को वर्तमान शक १८०२ इस्मे घटा दिया तो शेष ३१
 यह गताब्द इस्को १००० से गुण दिया तो यह ३१२१७ भया इस्को ८००
 सै से भाग लेने से फल वारादि आया सो यह ३९११७६३० इस्मे जन्म वा
 रादि युक्त किया ३५५३५ तो यह फल ४३५६५१३० भया इस्को वा
 र स्थान मे ७ से शेषित किया तो ०५५६५१३० यह सावयव वर्ष प्रवेश
 भया शानि वार दृष्ट ५६५१ इस प्रकार से वर्ष फल का इष्ट बनावना स्त ३३।
 यदा स्तूपो जन्म समो तदा वर्ष प्रवेशनं ॥ ११॥

टी० जिस --- दिन मे जन्म काल के सूर्य समान सूर्य जिस दिन आ
 वेगा उस दिन यह पूर्वोक्त वारादि दृष्ट काल जानना तिथी मे कही १
 हीन करना अथवा युक्त करना

तिथ्यानयनमाह ॥ शिव ११ प्रोब्दोः ब्द भू पां १६ शाब्दो जन्म
 तिथि संयुतः ॥ खाग्रि ३० तष्टः शेष तुल्य तिथा ब्द प्रवेशनं ॥ २ ॥
 टी० वर्ष की तिथी बनावने का प्रकार गताब्द को ११ से गुण के उस्मे गता
 ब्द का षोडशांश युक्त करना और जन्म तिथी युक्त करना नंतर ३० से शेष
 षित करना जो शेष रहे उस्के तुल्य तिथी अब्द प्रवेश मे जानना उदा
 हरण गताब्द ३१ इस्को ११ से गुणा तो यह ३४१ इस्मे गताब्द का षोड
 शांश २ युक्त किया तो यह ३४३ भया इस्मे जन्म तिथी युक्त किया तो य
 ह ३७० भया इस्को ३० से शेषित किया तो शेष १० यह अब्द प्रवेश
 की तिथी इस प्रकार से अब्द प्रवेश तिथी बनावना ॥ २ ॥

वर्ष प्रवेश समये नक्षत्र योगानयनमाह ।

रुद्र प्रोब्दः स्व भू पां १६ युग्मीनः स्वदिगंश १० कैः ॥

जन्मोदयोग युक्त तष्टो २७ भैः स्यातां भयुती क्रमात् ॥ ३ ॥

टी० गताब्द को ११ से गुण के उस्का षोडशांश उसी मे युक्त करना और
 उस्मे जन्म नक्षत्र युक्त करना २७ से शेषित करना तो अब्द प्रवेश का न
 क्षत्र होता है ११ से गुणित जो गताब्द उस्का दश मांश उसी मे ही नक
 ना और उस्मे जन्म योग युक्त कर के २७ से शेषित करना तो वर्ष प्रवेश

समयका योग होता है ॥ उदाहरण गताब्द ३१ इस्को ११ से गुणा तो ३४१
यह इस्को दूसी का १६ दशांश २१ युक्त किया तो ३६२ यह इस्को जन्म न
सत्र ६ युक्त किया तो यह ३६८ इस्को २० से शेषित किया तो शेष १७
यह वर्ष प्रवेश नक्षत्र भया गताब्द ३१ इस्को ११ से गुणा तो ३४१ यह इ
स्का दशांश ३० दूसी में हीन किया तो यह ३७७ भया इस्को जन्म योग १२ युक्त
किया तो ३९९ यह इस्को २० शेषित किया तो शेष २२ यह वर्ष प्रवे
श योग भया इस प्रकार से नक्षत्र और योग करना ३

श्रीसंवत् १९३७ शके १९०० आषाढ शुक्ल १० मंदवा सरे प २३
प ५६ विशाख नक्षत्र प २४ प ४५ शुभ योग प २७ प ० तत्र सु
योद्यादिष्टमृधस्थ ५६ प ५९ श्रीमतां वर्ष प्रवेश ३२ गताब्द ३१
ग्रह चालन ॥ स्वेष्ट कालोपराप्रेस्था संक्ति चशोधये
द्वनम् ॥ पंक्ति श्रेयवदाऽप्रेस्थादिष्ट चशोधयेदृणम् ॥ ४॥

टी० चालन बनावने का प्रकार ॥ इष्ट काल पंचांग स्थ पंक्ती से आगे हो
य तो पंक्ती में इष्ट काल शोधन करना तो चालन बन होना है पंक्ती इ
ष्ट काल से आगे हो य तो इष्ट पंक्ती शोधन करना तो चालन बन हो
ता है इस रीति से चालन करना अथवा दूसरे प्रकार से करना ४ ॥

ग्रह साधन माह ॥ ॥ गतेष्वदि वसाद्येन गति निर्णीयवष
इह ता ॥ लब्धमंशादिकं शोभ्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रह ॥ ५॥

टी० गति दिन से अथवा आगत दिन से सूर्यादि ग्रहों की गती गुणा देना
और ६० से भाग देना लब्धि अंश दिजो आगे सी गत दिन का होय तो ग्रह
मेकम करना और आगत दिन का होय तो युक्त करना तो यह स्पष्ट हो
है उदाहरण गति दिन १ इसे सूर्य की ५६ ५७ गति गुणा तो यह ५६ ५७
इसे ६० से भाग दिया तो ५६ ५७ यह पंक्ति स्थ सूर्य मे ३ ४ ५ ५१ ही
न किया तो ३३ ५१ यह सूर्य स्थ भया इस प्रकार से भोगादि व
ह बनावना ५ ॥ ॥ भयात भोगावना करने की रीति ॥ ॥

गतर्षनाद्व्यारवसेषु शुद्धाः सूर्योदयादिष्ट घटीषु युक्ता ॥

अयुक्तमेतच्च निजसंज्ञादिकाः शुद्धाः सुयुक्ताश्च भोगसंज्ञकाः ॥

टी० गत नक्षत्र की घटी ६० में युक्त करना सर्वमे सूर्योदय से जो दृष्ट प्रती हो

यसोयुक्तकरना नो भयात होता है ६० मेषु ह्कि या जो नक्षत्र उस्ते वर्ते
माननक्षत्र की घड़ी युक्त करना तो भभोग होता है उदाहरण गतन
क्षत्र की घड़ी २४।४५ यह ६० मेषी नक्षत्र तो ३५।१५ यह इस्ते स्तेर्यो द
यसे इष्ट घटी ५६।५१ युक्त किया तो यह ३२।०६ भयात भया ६० मेषु
ह्कि या जो नक्षत्र ३५।१५ इस्ते वर्तमाननक्षत्र घड़ी युक्त किया तो ५७
।८ यह भभोग भया इस प्रकार से भयात और भभोग करना ॥६॥

वर्षप्रवेशे चन्द्रसाधनमाह.

रवषट्घ्नं भयातं भभोगो ह् तं सत्त्वतर्क ६० घ्रधिष्णोषु

युक्तं हि निघ्नं नवांशं शशी भाग पूर्वस्तु भुक्तिः रवखा

आष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥७॥ ७॥ ७॥ ७॥

टी० भयात को ६० से गुणके भभोग ६० से गुणना पुनः भयात को ६० से
गुणना जो लब्धी आवे उस्ते अश्विन्यादि गतनक्षत्रनक्षत्र जो संख्या हो
यसो ६० से गुणना पूर्व लब्धी मे युक्त करना नंतर उस्को हि गुणित
करके ९ से भाग लेना लब्धी अंशदि अंशस्थान मे ३० से भाग लेना
तो तात्कालिक राश्यादि चंद्र होता है ॥ उदाहरण वर्षप्रवेश समय
मे अत्र राधानक्षत्र की पूर्व मे घड़ी ३५।१५ यह इष्ट घटी मे ५६।५१ यु
क्त किया तो अत्र राधानक्षत्र की युक्त घटी ३५।६ यह भई यह ६० से
गुणा तो १९२६ यह भया नक्षत्र का भोग ५७।८ पुनः भाज्य १९२६
यह इस्को ६० से गुणा ११५५६० नंतर भाजक को ६० से गुणा तो ३४२८
यह इस्से भाग लेने से लब्धी ३३।४२।३८ अश्विन्यादि गतनक्षत्रनक्षत्र
संख्या १६ इस्को ६० से गुणतो ९६० यह पूर्व लब्धी मे ३३।४२।२८ युक्त किया तो
९९३।४२।३८ इस्को हि गुणित किया १९८७।२५।१६ इस्को ९ से भाग
दिया तो अंशदि लब्धी २२०।४९।२८ अंशस्थान मे ३० से भाग लिया
तो तात्कालिक राश्यादि चंद्र ७।१०।४९।२८ भया अथ गति ४८०००
इस्को ६० से गुणा तो २८८०००० यह भया इस्ते भभोग से भाग लिया
तो ८४०।८ यह चंद्र गति भई इस प्रकार से चंद्र और चंद्र गति स्पष्ट
करना ॥७॥

वर्षकाशीनग्रहभ्रमगणितिकाः

लग्नसाधन

सू	म	म	वृ	च	शु	श	ग	के
३	७	४	३	११	३	०	८	३
३	१०	५	२०	२०	५	६	१५	१२
८	६९	३१	५३	५१	३४	३१	१६	१६
५६	२८	१	५७	०	७	५२	३४	३४
१६	८४	३७	१२	३	७	२	५	३
५७	८	४०	३०	४२	३५	३९	११	११

समागणयन्तुरुशानु
निघ्नः खचन्द्रभक्तोजनि
लग्नयुक्तभातशोदिनेशैः
दिल्लवर्षलघुसामान्यतो
मान्यतैर्निरुक्तम् ॥८॥

टी० पूर्वमेलग्नसाधनकथितहैउसप्रकारसेकरना अथवा सूर्यके
विनासामान्य लग्नसाधनकरना गताब्दको ३१ सेगुणके १० सेभाग
लेना उसोजन्यलग्नयुक्तकरना १२ सेशेषितकरकेजोशेषरहेसोसा
मान्यरीतिसेवर्षलग्नजानना उदाहरण॥ समागण ३१ इस्को ३१ से
गुणातो ९६१ यहइस्को १० सेभागलियातो ९६ यहइस्कोजन्यलग्नयु
क्तकियातो ९९ यहइस्को १२ सेशेषितकियातो १ यहइसामान्यवर्षप्र
वेशलग्नभया ॥८॥

जन्म



वर्ष

सू. ४	३५	१३	१३
५६	५	१२	१३
६	१२	१३	१३
७	८	१०	११

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

सू. ५	३	१३	१३
५६	५	१२	१३
६	१२	१३	१३
७	८	१०	११

अथमुंशा ॥ ॥ सैकागताब्दाविहता पतं

मेस्तब्देषभावेसुयहाजनुर्भात ॥ ॥

टी० गताब्दमेयुक्तकरना १२ सेभागलेनाजोशेषरहेसोजन्यलग्नप्रसेमुं
थाकास्थानजानना

अथपंचाधिकारी

मुंशेशो १ वर्षलग्नेश २ स्तत्रैराशिकनायकः ३॥ दिवाकैराशिका

यप्ररावैचंद्रसनायकः ४॥ ९॥ जन्यलग्नप्रवर ५ स्तत्रैवर्षपंचाधिका

टी० वर्षमेपंचाधिकारीबनाबनेकाक्रम मुंशेश १ वर्षलग्नेश (रिण)

२ त्रिराशिपती ३ दिनमेवर्षप्रवेशहोयतोसूर्यकेराशीकास्वामी ४

त्रौमेवर्षप्रवेशहोयतोचंद्रकेराशीकास्वामी ५ जन्यलग्नप्रवर ५ वर्ष

मेयहपंचाधिकारीयुनाशुभफलकेवालेग्रहकेअधिकारदेखनाजि

स्के दोतीन अधिकार आवे सो बलवान जानना आगे वर्षे शका ज्ञान
एतेषु बलवान् लभं पश्येद्यः सो बलनायकः॥

हिंसादि वीर्यकृते तु दृगाधिक्या हि निर्णयः॥ १०॥

टी० यह पंचाधिकारी मे जो बलवान होय के ल प्रको देखता होय सो वर्ष प
ति जानना अथवा दोतीन ग्रह देखते होय तो उ स्मे जिस्की दृष्टी अधिक होय

अधिकाराधिक्ये तु बलाधिक्या हि निश्चयः॥ (सो वर्ष पति जान
बल साम्ये दिवा र्कः स्याद्वात्रौ रात्रीश्चरो ब्रूयः॥ ११॥

टी० अधिकार अधिक होय तो बल से निश्चय करना सर्व बल समान होय और
दिन मे वर्ष प्रवेश होय तो सूर्य वर्ष पति रात्री मे वर्ष प्रवेश होय तो चंद्र राशी श

पंचाधिकारिणो लभं पश्यंति यदा नदा॥ (वर्ष पति होना है
वर्ष ल प्रवेश रोयस्तु स एवा ब्रूयति भवेत्॥ १२॥

टी० यह पंचाधिकार मे वर्ष ल प्रको को ई न देखे जब तब वर्ष ल प्रेश
र उ स वर्ष का वर्ष पति होता है॥ १२॥

वर्षे शार्थं त्रिराशी शाः॥ ॥ त्रिराशिपाः सूर्यसिता
किं शुक्रादिने निशी ज्ये दु बुध समाजाः॥ मेघाच्चतुर्णा
हरी भादिलो मं नित्यं परे खार्कि कुजे ज्य चन्द्राः॥ १३॥

मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशीना
स्व	शु	श	शु	व	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दिनेशः
वृ	चं	बु	मं	स्व	शु	श	श	मं	वृ	चं	राशीना	

टी० वर्ष मे त्रिराशि पति
ज्ञानार्थ चक्रम्। स्व
हस्तोच्च स्वहृद् स्व

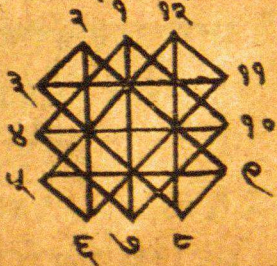
द्रेष्काण स्व नवमांश यह ५ अधिकार भी देखना—॥ १३॥ १४॥

वर्षेषु भाषु भजानार्थं त्रिपताकी चक्रम्

रेखात्रयंति र्गधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविज्ञा प्रकमीशकोणात्॥

स्मृतं बुधैस्तत्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रवर्षलग्नात्॥ १४॥

टी० रेखा ३ दे टी और ३ सीधी करना और प
र स्पर ईशान कोण से रेखा को वेध करना इ
स्को बुध त्रिपताकी चक्र कहते है इस्मे पू
र्व के मध्य रेखा पर वर्ष ल प्रका न्यास करना ॥ १४॥



तत्र ग्रह न्यासमाह

न्यसेद्वचक्रं किल तत्र से कांशानाब्दसंख्यां विभजेत्तत्र भोगे
॥ शेषो न्यते जन्म चंद्रराशौ स्तुत्ये च राशौ विलिते च राशौ ॥ १५ ॥
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वरशेषे च राशौ हेतुः ॥

टी० विपत्ता की चक्र पर १२ राशीका न्यास करना प्रहं न्यास का प्रकार
गत वर्ष ने १ युक्त करना ९ से भाग लेना शेष जो रहे वह संख्या जन्म का
हृके चंद्रमा से शेष स्थान पर चंद्रमालिखना अन्य ग्रह सैक जोगताब्द
उत्पेचार से भाग दे को जो शेष रहे उहा अपने स्थान से लिखना और राह
के तूपह अपने स्थान से पीछे लिखना तो विपत्ता की चक्र स्पष्ट होता है

विपत्ता की चक्रे वेध विचार

(॥ १५ ॥)

सर्वां विदेहि मणौ त्वरिषु तापो र्क विदेहि नो ह विदे ॥ नही
ज विदे तु शरीर पीडा शुभे प्रा विदे जय सौख्य लाभ ॥ सु
भा शुभ व्योम ग वीर्य तोत्र फलं तु वेध स्य वेदु पीमान् ॥ १६ ॥

टी० विपत्ता की चक्रमे वेधे स्वने का प्रकार सब ग्रह का वेध चंद्रमा हरेत
ना राह से चंद्र से वेध होय तो अरि जानना सूर्य से वेध होय तो ताप श
ने से वेध होय तो रोग मंगल से वेध होय तो शरीर पीडा शुभा राह से वेध
होय तो जप शस्त्री सौख्य लाभ और सुभा शुभ ग्रहा व कदे सको वेध पफल

मुहा दशा ॥ ॥ जन्म संख्या सहि भाग ताब्द

(॥ १६ ॥)

दृगू नितानंद हतावशे पात् ॥ आचं कुरु जीशु

के शु पूर्व भवन्ति मुहा दशिका क्रमो यम् ॥ १७ ॥

टी० मुहा दशा वनावे की शिनि जन्म संख्या की जो संख्या उत्पेगताब्द
की संख्या युक्त करना तो ने की जो संख्या होय उत्पे से दो २ कयती करना औ
१९ से भाग देना जो अंक शेष रहे सो दशा जानना १ शेष रहे तो सूर्य की
दशा २ शेष रहे तो चंद्र की दशा ३ शेष रहे तो मंगल की दशा ४ शेष र
हे तो राह की दशा ५ शेष रहे तो राह की दशा ६ शेष रहे तो शनी की द
शा ७ शेष रहे तो बुध की दशा ८ शेष रहे तो केतु की दशा ९ शेष रहे तो

शुक्र की दशा यह मुहा दशा
का क्रम जानना ॥ १७ ॥

मुहा दशा चक्रम ॥

सू	ह	मं	र	ग	बु	के	शु	शनि
०	१	०	१	१	१	१	०	२
१५	०	२१	२४	१५	१३	२१	०	२१

मुंथाफलमाह ॥ ॥ वर्षलघात्सुखा ४ स्तो ० त्य १२
रिपुर्द्धे ० स्वः शोभना ॥ पुण्य १० कर्मा १० य ११ गा
साम्यं दत्तेन्यत्रो २३ ५ यमाहनम् ॥ १॥ ॥ ॥

टी० मुंथावर्षलग्नसे चतुर्थः सप्तमः द्वादशः षष्ठः अष्टमः दत्तेन्यत्रो नमे अ
शुभः नवमः दशमः एकादः सप्त १२ ३ ५ यह स्थानमे उद्यमसे धनत्रा
तनुस्थान ॥ ॥ शत्रुक्षयमानसतुष्टिलाभं (ततोताहै)

प्रतापवृद्धिं नृपते प्रसादम् ॥ शरीरपुष्टिं विवि
धोद्यमांश्च ददाति विवि तं मुथहातनु १ स्थान ॥ २॥

टी० मुंथावर्षलग्नमे होयतो शत्रुक्षयः मनको संतोषः लाभः प्रताप
वृद्धिः राजाका प्रसादः शरीरपुष्टिः नाना प्रकारके उद्यमसे इव्य देता है
धनस्थान ॥ ॥ उत्साहतीर्थगमनं यशश्च (॥ २॥)

स्वबंधुसन्माननृपाश्रयाश्च ॥ मिश्रानभोगोव
लपुष्टिसौख्यं स्यादर्थ २ भावे मुथहायदा ५ व्दे ॥ ३॥

टी० मुंथाद्वितीयस्थानमे होयतो उत्साहतीर्थमे गमनः यशः स्वकीयबंधुसे
सन्मानः राजाका आश्रयः मिश्रानभोजनः बलपुष्टिः सौख्यः यह फल होता
तृतीयस्थान ॥ ॥ पराक्रमद्विजयशः सुखा (है ॥ ३॥)

निसोदर्यं सौख्यं द्विजदेवपूजा ॥ सर्वोपकारस्त
नुपुष्टिकांती नृपाश्रयश्च मुथहातृतीया ॥ ४॥

टी० मुंथातृतीयस्थानमे होयतो पराक्रमसे धनयशः सुख इस्ती
प्राप्तीः भ्रातृसुखः ब्राह्मण और देव इनकी भक्तीः सर्वोपकारिपुष्टशरी
रकान्तिपुक्तः राजाश्रय यह फल होते हैं ॥ ४॥

चतुर्थस्थान ॥ ॥ शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्गवै
रमनस्तापनिरुद्यमत्वे ॥ स्यात्मुंथायां सुख ४ भा
वगायां जनापवादा मपवृद्धि दुःखं ॥ ५॥ ॥ ॥

टी० मुंथाचतुर्थस्थानमे होयतो शरीरपीडाः शत्रुभयः स्ववर्गसे वैरः
मनको संतापः उद्यमरहितः जनापवादः रोगवृद्धिः दुःख यह फल हो
पञ्चमस्थान ॥ ॥ परिधिहापंचम ५ गाब्दे (तेहै ॥ ५॥)

शेसद्वि सौख्यात्मजवित्तलाभाः ॥ प्रतापवृद्धिं

विविधाविलासादेव हि जार्जो नृपतिप्रसादः ॥५॥

टी० मुंथापंचमस्थानमेहोयतो उन्नतबुद्धीः सुखः पुत्रः धनः इस्का
लाभः प्रतापकीरुद्धीः नानाप्रकारके विलासः देव और ब्राह्मण इन
की पूजा राजा का प्रसाद यह फल होते हैं ॥५॥

षष्ठस्थान ॥ ॥ कलत्रबन्धूव्यसनारिभीतिरु
स्तस्करतो नृपात् ॥ कार्यार्थनाशो मुद्यहाऽरिदु
गाचे दुर्बुद्धिरुद्दिः स्वकृतेनुतापः ॥६॥ ॥ ७ ॥

टी० मुंथा षष्ठस्थानमेहोयतो शरीरके विवेकशालाः शत्रूका उदयः रोग
और तस्कर इनसे भय अथवा राजासे भय कार्यनाश और अर्थना
श दुर्बुद्धी कीरुद्धी स्वकीयकृत संताप यह फल होते हैं ॥६॥ ॥

सप्तमस्थान ॥ ॥ कलत्रबन्धूव्यसनारिभीतिरु
त्साहभंगो धनधर्मनाशः ॥ दूनोऽपगाचे न्युद्य
हान्तो स्यादुज्जागमो मोहविरुद्धचेष्टा ॥७॥ ॥

टी० मुंथा सप्तमस्थानमेहोयतो स्त्रीसे भय बंधूसे भय व्यसनसे
भय शत्रूसे भय उत्साहभंग धन और धर्म इनका नाश रोग का आग
मन मोह विषादित चेष्टा यह फल होते हैं ॥७॥

अष्टमस्थान ॥ ॥ भयंरिपोस्तस्करतो विनाशो ध
र्मार्थयो दुर्व्यसनागमयश्च ॥ मृत्युस्थिता चेत्सुद्य
हान्तो राजा बलस्यः स्यात्तु गमनं सुदुरे ॥८॥ ॥

टी० मुंथा अष्टमस्थानमेहोयतो शत्रु भय और और भय धर्म और अर्थ
इसका नाश दुर्बुद्धि व्यसन रोग बलस्य दूर देश गमन यह फल मनुष्यको
नवमस्थान ॥ ॥ स्वाभित्वमर्थोपगमो नृपेभ्यो होते है

धर्मोत्सवः पुत्रकलत्रसौख्यं ॥ देवहिजा वीर्यमं
यशश्च भाग्योदयो भाग्य ९ गते शिवा स्यात् ॥९॥

टी० मुंथानवमस्थानमेहोयतो प्रभुत्व राजासे धनका आगमन धर्म उत्सव
पुत्र स्त्री इनका सुख देव ब्राह्मण भक्ति महान् यश भाग्योदय यह फल हो
दशमस्थान ॥ ॥ नृपप्रसादं स्वजनोपकारं (नेहै ९)
सत्कर्मविहिं हि जदेव भक्तिं ॥ शशोभिष्टीहं विवि

धार्यलाभंदनेंबर १० स्थामुग्रहापदाग्निं ॥ १० ॥

टी० मुंशादशमस्थानमेहोयतो राजा का प्रसाद स्वजनसे उपकार उ
त्तम कर्मकी सिद्धी हिज देव इनकी भक्ती यशकी रुद्धी नाना प्रकार के
द्रव्य कालाभ श्रेष्ठ पद प्राप्ती यह फल होते हैं-

एकादशस्थान ॥ ॥ यदिंशिलाभ ११ गता विला
ससौ भाग्यनैरुज्यमनः प्रसादाः ॥ भवन्ति राजाश्रयतो
धनानि सन्निवृत्ताभिमतानि यश्च ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥

टी० मुंशा एकादशस्थानमेहोयतो विलाससौ भाग्य निरोगता प्रसन्न मन रा
जाश्रयसे धन होय उत्तम भित्त और पुत्र इनकी इच्छित शक्ति यह फल होते हैं-

द्वादशस्थान ॥ ॥ व्ययोधिको दुष्टजनैश्च संगो
रुजातनौ विक्रम तोष्य सिद्धिः ॥ धर्मार्थहानिर्मु
खा हाव्यप १२ स्थायदातदा सज्जनतोपि वैरं ॥ १२ ॥

टी० मुंशा द्वादशस्थानमेहोयतो अधिक व्यय दुष्टजन का संग शरीर मे
रोग पराक्रमसे भी कार्य सिद्ध नही धर्म अर्थ इस्की हानी सज्जन से
वैर यह फल होते हैं इति मुंशा फल ॥ १२ ॥

द्वादशभावफलमाह ॥ जोभावः स्वामिसौम्याभ्यां दृष्टो युक्तो
यमेधने ॥ पापदृष्टयुतौ नाशो मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥ ११ ॥

टी० जोभाव अपने स्वामी सेवाशुभग्रहसे दृष्ट वा युक्त होय तो शुभ फल दे
ता है जोभाव पापग्रह दृष्ट वा युक्त होय तो नाश मिश्र होय तो मिश्र फल कह
स्वोच्चैर्मित्रभांशस्थो ग्रहो भावार्थि रुन्मत् ॥ (ना ॥ ११ ॥

उदासीनग्रहांशादावश्यं वध्यफलप्रदः ॥ २ ॥

टी० स्वकीय उच्चमे स्वक्षेत्रमे मित्रक्षेत्रमे मित्रके अंशमे स्थित ऐ
सा जो ग्रह सो भावकी रुद्धिकारक जानना उदासीन के ग्रह मे होय उ
दासीनके अंशमे स्थित ऐसा ग्रह अवश्य समफलदायक होता है २

नीचारिभास्तगः खेटो वश्यं भावविनाशकृत्

॥ वष्टाष्टव्ययभावानां विपरीतं फलं वदेत् ॥ ३ ॥

टी० नीच ग्रहमे शत्रुक्षेत्रमे अस्तंगत ऐसा ग्रह अवश्य भावका ना
शकरता है षष्ठ अष्टम द्वादश यह भावका फल विपरीत कहना ३

सौम्याः षष्ठे रिपुघ्नाः स्युः पापाश्वे द्विपुनो भयं ॥

मृतौ शुभाशुत्युहानि पापाशुत्युकरा मताः ॥४॥

टी० षष्ठस्थानमेषु भग्रहहोयतो शत्रुनाशः पापग्रहहोयतो शत्रुसे
अपः अष्टमस्थानमेषु भग्रहहोयतो मृत्युकानाशः और पापग्रह-
होयतो मृत्युकारक हे सा जानना -

व्ययनाशं व्ययसौम्याः पापाश्वे द्वायकारकाः ॥ षष्ठे रिघ्नाः शुभाः

पापाश्च नश्यं रिपुनाशकाः ॥ वराहमिहिरस्त्वाह सर्वेनेष्टव्यपापगाः

टी० द्वादशस्थानमेषु भग्रहहोयतो व्ययनाश और पापग्रहहोयतो व्ययका
रक षष्ठस्थानमेषु भहोयतो शत्रुनाशः पापग्रहहोयतो अवश्य शत्रुनाश
वराहमिहिरकहते हे कि सर्वग्रह १२ और ८ अशुभ जानना - ॥६॥ ॥

वर्षे गिषे वीर्ययुते सुखानि नैरुज्यनर्था गमनं विलासः ॥

अब्दांगपे मध्यबलेऽल्पसौख्यं रोगादिकंचाल्य धनस्य लाभः ॥७॥

टी० वर्षलग्नपती वीर्ययुक्तहोयतो सुख निरोगता धनलाभ
विलास ग्रहहोता है वर्षलग्नपती मध्यबलहोयतो अल्पसौख्य
रोगादि अल्पधन लाभ ग्रहहोता है ॥७॥

स्यादल्पवीर्ये विपदो र्थनाशो रोगादि वृद्धिर्वनितादिनाशः ॥

टी० वर्षलग्नपती अल्पबलहोयतो विपत् अर्थनाश रोगादि वृ
द्धि स्त्रीनाश ग्रहफल जानना -

लग्नं पापयुतं सौम्यैरदृष्टसहितं नृणाम् ॥

विवादे वचनादुद्धमशनं वारि विंदति ॥८॥

टी० वर्षलग्नपापग्रहयुक्तशुभग्रहसे अदृष्टहोयतो मनुष्यको व
चनसे विवाददृष्टभोजन ग्रहशत्रुहोता है ॥८॥

अरुर्विते शुभैर्दृष्टयुतो राज्यार्थसौख्यदः ॥

टी० अरुधनस्थानमेषु भहृष्टवायुनहोयतो राज्य अर्थसौख्यदेता है
शनी विने र कार्यनाशो लाभो लपो यधन व्ययः ॥

टी० वर्षलग्नसे शनी रस्थानमे होयतो कार्यनाश अल्पलाभ और
रधनका व्यय होता है ॥

शनी ज्यो धनगोश्रात सुखदौ वलि नो यदि ॥

धनेशनी ज्योत्स्न शुभैर्दृष्टौ बहु धनान्निदौ ॥१०॥

टी० वर्षलग्नसे शनी और गुरु धनस्थानमे होय तो आत्सुख
दायक बलवान् होय तो जानना धनस्थानमेशनी और गुरु
शुभग्रहसे दृष्ट होय तो बहुत धन प्राप्ति दायक जानना - ॥१०॥

अब्दे शोके पाप पुण्ड्रिणीने बलिनिविक्रमे ॥

सोदराणां मिथः सौख्यं व्यत्ययाद्यत्ययं वदेत् ॥११॥

टी० वर्षेशस्त्र्यपापपुक्त और दृष्टि रसकर के हीन बलवान् होय के ३
स्थानमे होय तो आताका परस्पर सौख्य होता है विपरीत होय तो विपरीत
वर्षेश भृगुजे पापहीने बलिनिविक्रमे ॥ (कहना ११)

सौख्यं मिथः सोदराणां व्यत्ययाद्यत्ययं भवेत् ॥१२॥

टी० वर्षेश और शुक्रपापग्रहसे हीन बलवान् होय के ३ स्थानमे
होय तो आताका परस्पर सुख होता है विपरीत होय तो विपरीत होना
सहजे ३ शोऽब्दे दुष्टस्थान ४। ८। १२। ६ गेस्तंगनेस (है ॥१२॥

ति ॥ कलिर्मिथः सोदराणां युद्धं वापि वदेदुधः ॥१३॥

टी० तृतीयस्थानपति और वर्षेश दुष्टस्थानमे ४। ८। १२। ६ होय अथ
वा अस्तंगत होय तो आतामे परस्पर कलह और युद्ध भी बुधने कहना
शनी सहोत्थे ३ भौम १। ८ रोगाः स्युर्भातृणां ध्रुवं ॥ (१३)

भौमे सहोत्थे ३ रक्ष ३। ६। स्थेऽनुजे मां दं स्युर्दं वदेत् ॥१४॥

टी० शनी भौमसेत्रका होय के ३ स्थानमे होय तो आताको निश्चय
से रोगादि जानना भौम बुधके सेत्रका होय के ३ स्थानमे होय तो
आताका मां द (थोडा) स्पष्ट कहना ॥१४॥

भौमे मंद १०। ११ भगे सौम्य पुत दृष्टेऽनुजे ३ सति ॥

सावीर्ये सहजानां तु मिथः सख्यं सुखं बहु ॥१५॥

कुजभे १। ८ शोऽनुजे ३ सौम्य पुत दृष्टेऽनुजात्सुखं ॥

टी० मंगल बलवान् शनीके सेत्रका होय के शुभग्रहसे युक्त दृष्ट ३
स्थानमे होय तो आताका परस्पर सौख्य और बहुत सुख कहना बुधभौ
मके सेत्रका होय के ३ स्थानमे शुभग्रह युक्त दृष्ट होय तो आतासे सुख होता
है १५
सहजे शस्त्र तीयस्थः सौम्य शुभपुते सितः ॥

तादृगब्दे नु जेशयेत्तोदराणां मुखाय हि ॥१६॥

टी० जैसे जन्म काल में तृतीये शत तीव्र मेष भग्रह युक्त दृष्ट होय तैसे वर्ष में तृतीये श होय तो आता का मुख होता है ॥१६॥ तृतीयः ॥

सुखे ४ शिवः पाप युते स्थितश्चेत्पितुः शरीरे जनयेच्च पीडां ॥

टी० वर्ष रुद्र से चतुर्थ स्थान में सूर्य पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट होय तो पिता के शरीर में पीडा उत्पन्न करता है और ४ स्थान में चंद्रमा पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट होय तो माता के शरीर में अति रोग से कष्ट होता है ॥१७॥

सूतौ सुखे शो ४ नष्टौ जायर्षे चारिष्टकृतयोः ॥

टी० जन्म काल में सुखे श ४ नष्टे न होय तो वह वर्ष में अरिष्टकारक होता है चरवौ वर्षे श्वरो लाभ ११ सुत ५ गः सन्मु पुत्र दः ॥ (तुर्थः)

भौमे ब्द पो लाभ सुते स्थितः पुत्र सुखावहः ॥१८॥

बुधो ब्द पश्चात् ११ सुते ५ प्राप्तः सत्पुत्र सौख्य कृत्

शुक्रो ब्द पः सुते ५ वा पे ११ पुत्र सौख्याय चैत्स्मृतः ॥१९॥

रव्यारौ ज्येष्ठा काश्चेद् ब्द पाः क्रूर पीडिताः ॥

दुःख प्रदाः पुत्रतः स्युरस्तं याताश्च ने तथा ॥२०॥

टी० सूखे वर्ष पति होय के ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र दायक भौम वर्ष पती होय के ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र सुख होता है बुध वर्ष पती होय के ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र सौख्यकारक होता है शुक्र वर्ष पती ११ वा ५ स्थान में होय तो पुत्र सुख जानना सूर्य भौम बुध गुरु शुक्र यह वर्ष पती पाप ग्रह से पीडित होय तो पुत्र से दुःख प्राप्ती और अस्तंगत होय तो भी पुत्र से दुःख प्राप्ती जानना ॥१८॥१९॥२०॥॥

रुद्र पुत्रेश्वरौ पुत्रे ५ पुत्रदौ च लिनो यदि ॥

चंद्रो जी वो य वा शुक्रः स्वोच्चगः सुतदः सुते ॥२१॥

टी० वर्ष रुद्र और चंद्र मेश यलवान होय के ५ होय तो पुत्र दायक चंद्र गुरु अथवा शुक्र लोच के होय के ५ स्थान में होय तो पुत्र दायक जानना ॥२१॥

मंदे ब्द पे ५ ननु गतौ पतिते रिद्धे च संपन्न पात भवभी

रुधिराग्नि शूलम् ॥ गुल्मासि रोग विषम ज्वर भी शुभे

श्वेतसंवीक्षिते सकल दोषविना शमाहुः ॥२२॥

टी० शनीवर्ष पती होय वक्रगति पापाक्रान्त होय के ६ स्थान में होय तो सन्निपात से भय रक्त पीडा शूल गुल्म नेत्र रोग विषम ज्वर से भय यह होता है शुभग्रह से दृष्ट होय तो सम्पूर्ण दोष कानाश होता है ॥२२॥

भौमोब्धपोऽनृजुगतिः क्रूरितोरिगतो हयदि ॥

रक्तजातविकारेण महान् रोगः प्रजायते ॥२३॥

टी० भौमवर्ष पती वक्रगती पापाक्रान्त होय के ६ स्थान में होय तो रक्त विकार से महान् रोग उत्पन्न होता है ॥२३॥

सूर्योब्धपः क्रूरितोरौ धिपितो द्रेकादुजस्तनौ ॥

सूर्योब्धपः क्रूरितोष्टगो हृच्छूल रुजार्निहः ॥२४॥

टी० सूर्यवर्ष पती पापाक्रान्त होय के ६ स्थान में होय तो पित्त से शरीर में रोग उत्पन्न होता है सूर्यवर्ष पती पापाक्रान्त होय के ८ स्थान में होय तो हृदय में शूल और रोग से पीडा होती है ॥२४॥

लग्नां गेशौ पापमध्यगतौ रोगप्रदावुभौ ॥

टी० वर्ष पती धनी पापग्रह के मध्य में होय तो दूनों रोगदायक होते हैं २५

बलीसिनोब्धाधिपतिः स्मरस्थः ७ स्त्री (बुधः ॥

पक्षतसौरव्यकरो विचिंत्यः ॥ ७ ॥

टी० शुक्रवर्ष पती बलवान् होय के ७ स्थान में होय तो स्त्री पक्ष से सौरव्यकार

शुक्रेब्देशे कुजदृशा विवाहः स्यात्सुखावहः (कहोता है ॥२६॥

टी० शुक्रवर्ष शोभन दृष्टि युक्त होय तो उस वर्ष में विवाह सुख हो गऐता जा

धनुः सिंहाजगे भौमेब्देशे रं प्रेप्रितो भयं ॥ (नना

टी० धनुः सिंह भेष इस्का वर्ष पति भौम होय के ८ स्थान में होय तो अग्नि

अब्देशो दिने सार्के कुजे नृपभयं दिशेत् ॥ (भय जानना

वर्षवेशो दिनेब्देशे कुजे सार्के नृपाद्भयं ॥१॥

टी० वर्ष प्रवेश दिन में होय भौम सूर्य के सहित होय वा अष्टम होय तो राजा

से भय वर्ष प्रवेश दिन में होय और वर्ष शोभन सूर्य के सहित होय तो राजा से

अधिकारी बुधः क्रूरदृशा दृष्टः कुजे नचेत् ॥ (भय जानना

रक्तदोषादि नारोगाः स्युरब्दे तत्र निश्चितं ॥२८॥

टी० वर्षके पंचाधिकारी मे बुध का अधिकार होय वह भूराग्रह से दृष्ट होय और भौम से दृष्ट होय तो रक्त दोष से रोगादि उस वर्ष में निश्चय से होगा।

भौम युक्ते बुधे सार्के विदेशे बंधनं मृतिः ॥ (३०)

मंदोधिकारी खे १० लोह हते पीडा करः स्यूतः ॥ ३१ ॥

भौमेष्टमे भयं वन्देः शास्त्रघातोनृपाद्वयं ॥

आरेख १० स्थे चतुष्पादः पातोदुःखरुजोः सृजः ॥ ३०

टी० वर्ष लग्ने स्थान भौम युक्त और बुध सूर्य के सहित होय तो देशान्तर मे बंधन और मृत्यु पंचाधिकारी मे शनी का अधिकार होय वह १० होय और भौम से ताडित होय तो पीडा कारक जानना भौम अष्टम होय तो अग्नी से भय शास्त्रघात राजा से भय भौम १० स्थान मे होय तो चतुष्पाद से पात (गिरा) दुःख रक्त विकार से रोग उस वर्ष मे जानना ॥ ३० ॥

विन्तारष्ट्र गोव्दपो जीवः खलदृष्टो धनापहा ॥

मंदेष्टूने ७ दुर्वचनोः पचादकलिभर्त्सना ३१ ॥

टी० वर्ष पत्नी गुरु २ वा होय और वापग्रह से दृष्ट होय तो धन नाश हो ता है वर्ष लग्ने से सप्तम स्थान मे शनी होय तो दुर्वचन अपवाद कलह विन्तारष्ट्र महफल होते है ॥ ३१ ॥

सर्वत्र शुभ युगदृष्ट्या शुभं बलवतः फलं ॥

टी० सर्व स्थान मे शुभ ग्रह युक्त और दृष्टि ग्रह शुभ जैसा बल होय तैसा फल शुकेन्द्र पेत्रिन चगे चूरा युक्ते बलान्विते ॥ (जानना अष्टम)

गमनं जायते मार्गे सौरव्यं लाभादिकंतः ॥ ३२ ॥

टी० वर्ष मे शुक्र वर्ष पत्नी ३१ स्थान मे होय क्रूरग्रह से दृष्ट होय बल युक्त होय तो मार्ग मे गमन होय सौरव्य लाभादिक होते है ॥ ३२ ॥

शुकेन्द्र पेत्रिन चगे वक्रिष्यस्तंगतेषु वा ॥

यंतव्यं देशाद्व्यात्र गमनं कार्यं नाशनं ॥ ३३ ॥

टी० वर्ष मे शुक्र वर्ष पत्नी ३१ स्थान मे होय और वक्रि अथवा अस्तंगत होय तो जिस देश मे गमन किया है उस देश से अन्य देश मे गमन और नाश महफल जानना ॥ ३३ ॥

बुधेष्टो विन चगे चूरा युक्ते बलान्विते ॥

देवयात्रा तथा तीर्थयात्रा स्याद्दुर्मसिद्धिदा ॥ ३४ ॥

टी० बुधवर्षे होयके ३९ स्थानमे और क्रूर ग्रह से दृष्ट होय बल युक्त होय तो देवयात्रा और तीर्थयात्रा यह धर्मसिद्धिदायक होती है ऐसा फल

जीवे देशे त्रिनवगे पापा युक्त बलान्विते ॥ (जानना)

देवोद्देशेन यात्रावातीर्थयात्रार्थसिद्धिदा ॥ ३५ ॥

टी० गुरुवर्षे होयके ३९ स्थानमे पाप ग्रह से अपुक्त बल युक्त होय तो देवके निमित्त यात्रावातीर्थके निमित्त यात्रा अर्थसिद्धिदायक होती है ऐसा फल जानना

धर्मे ९ शानिर्नाधिकारी चौरदुःखयुता ध्वदः ॥ (नाना)

टी० अधिकारहीन ९ स्थानमे शानी होय तो मार्गमे चौरादी से दुःख होता है

धर्मे ९ गुरुर्नाधिकारी वर्षे नवमगोयदि ॥

दूरयात्रा राजसंगो भूयात्प्राप्त्यादिजं सुखं ॥ ३६ ॥

टी० जन्ममे ९ स्थानमे अधिकारहीन गुरु रहते वर्षमे नवम होय तो दूर यात्रा राजसंग और नाना विध प्राप्ती से सुख होता है ॥ ३६ ॥ नवम ॥

सबले ब्दपतौ १० स्वस्थे राज्यप्राप्ति सुख कीर्तय ॥

बल्यब्दपः खो १० न केन्द्रन्यस्थानातिगृहप्राप्तयः ॥ ३७ ॥

टी० वर्षपती बल युक्त १० स्थानमे होय तो राज्य प्राप्ति सुख कीर्ति यह फल होता है वर्षपती बल युक्त १० स्थान विना अन्य केन्द्र स्थानमे होय तो गृह प्राप्ती ऐसा जानना ॥ ३७ ॥

सूर्यो ब्दपो वलीलाभे ११ स्त्रेहोऽमात्यनृपादिभिः ॥

रविस्थाने पृथिव्या लगे १२ स्त्रे १० वाराज्याप्ति सौख्यदा ॥ ३८ ॥

टी० सूर्यवर्षपती बल युक्त ११ स्थानमे होय तो मंत्री राजा इत्यादिकों से स्त्रेह यह फल ॥ सूर्यके स्थानमे मुंशा प्राप्ती का लग्नमे बा १० स्थानमे होय तो राज्य प्राप्ति सौख्यदायक फल होता है ॥ ३८ ॥

जीवे ० र्कः सखलः ख १० स्थो भूपाद्वंधवधेदिशेत् ॥

टी० वर्षमे तुलाका सूर्य प्राप युक्त १० स्थानमे होय तो राजा से बंधन बंध होय ऐसा कथन करना ॥ दशम ॥

वर्षेश्वरे लाभगते शुभग्रहयुते क्षिते ॥

पठनात्स्वे रवनात्लाभस्तत्रैव व्यवहारतः ॥ ४० ॥

टी० वर्षपती ११ स्थानमे होय शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट होय तो पठन कर
ने से हे स्वर्ग करने से लाभ जानना नैसे व्यवहार से भी जानना ॥४०॥

वर्षेशे जे कूरि ते त्या १२ र्यष्ट ८ गे पाप वीक्षिते ॥

व्यवहार न लाभः स्याच्छुभ दृष्टे लाभ लाभकृत् ॥४१॥

टी० वर्षशुभ कूरग्रह से युक्त १२ ६० स्थानमे पाप दृष्ट होय तो व्यव
हार से लाभ नही और शुभ दृष्ट होय तो अला लाभ कर क होना है ॥४१॥

जीवे ज्येष्ठ कूरि ते गो १५ न हानि भयं वृषात् ॥

टी० गुरु वर्षती पाप युक्त लग्नमे होय तो धन हानि और राजा से भय ॥४२॥

सर्वे पिला भोपगता ग्रहे द्राः सौरव्या र्यदा वी र्य यु नान दृष्टाः ॥

चोर्नर्बला स्ते धन सौरव्य लाभना शापदैव जवैर्निरुक्ताः ॥४२॥

टी० सर्वग्रह ११ स्थानमे वीर्य युक्त होय तो सौरव्य अर्थदायक होते है
अस्त गत न होय वह ग्रह निर्बल होय तो धन सौरव्य लाभ र स्ताना श
ऐसा ज्योतिषी ने कथन किया - ॥४२॥

व्ययस्थे वर्ष पे सं वि शुभ ग्रह युने क्षिते ॥

आवास निर्मिता भूमि प्राप्ति तत्र विनिर्दिशेत् ॥४३॥

टी० वर्षपती शनी ११ स्थानमे होय और शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट होय तो
उत्तम प्रकार के गृह सहित भूमि प्राप्ती जानना ॥४३॥

वर्षा गेशेष्ट ८ गे भौम युग्म दृष्टे स्व विपन्नुक्तिः ॥

वाब्दाष्टे शै गे भौम युग्म दृष्टे स्व विपन्नुक्तिः ॥४४॥

टी० वर्षलग्नपती ८ स्थानमे भौम युक्त वा दृष्ट होय तो शस्त्र विपत्ती से
मृत्यु जानना अथवा वर्षपती ८ पती लग्नमे भौम युक्त दृष्ट होय तो
शस्त्र से मृत्यु जानना ॥४४॥

अब्दलग्ने शरं ध्रे शौ व्ययाष्टि बुको पगौ ॥

सुथहा संयुतौ मृत्यु प्रदौ तद्वा तु कोपतः ॥४५॥

टी० वर्षलग्नश और अष्टमेश १२ ८ ४ स्थानमे सुथहा संयुक्त होय तो वह
ग्रह के धातु को पक्षे मृत्यु कर क जानना

॥४५॥ ग्रहों की प्रकृती-

स	च	म	बु	श	र	क	प्र	ल
वि	क	वि	वि	क	क	वा	वा	प्रकृती

त्रि ३४६ द्वाभो १११ गतैर सौख्यैः केन्द्रविको

णोपगतैश्चसौम्यैः॥१२॥त्वांवरस्वर्णयशःसु

खाप्तिर्नाशोप्यरिष्टस्यतनोश्चपुष्टिः॥४७॥

टी० वर्षलग्नसे ३६।११ पापग्रहहोय और केंद्र त्रिकोणमेषु भग्रहहोय तो
रत्न वस्त्र सुवर्ण यश सुख प्राप्ति अरिष्ट नाश और शरीर पुष्टि यह फल जा

केंद्र त्रिकोणगैः सौम्यैरिष्ट नाशः सुखाल्पता॥ (नना

त्रिषट्छाभोपगैः पापैरल्पं राज्यसुखं भवेत्॥४८॥

टी० केंद्रमे १।४।७।१० इत्येषु भग्रहोय तो अरिष्ट नाश और अल्प सुख ३।
६।११ स्थानमे पापग्रहहोय तो अल्प राज्य और सुख होता है ॥४८॥

चतुष्टये वातनये च धर्मे सौम्यास्त्रिषष्टापगताश्च पापाः॥

कुर्वन्तिलक्ष्मीं मणिवारणाश्चैः पूर्णा सुवर्णविरभूषणैश्च॥४९॥

टी० केंद्रमे वापंचमनवम इत्येषु भग्रह ३।६।११ इत्येषु पापग्रहहोय तो
मणि गज अश्व इनकरके पूर्ण लक्ष्मी करते है सुवर्ण वस्त्र भूषण यह भी

चंद्राशीश्वरोलग्रराशिपश्चस्वलैर्वियुक्त॥ (करते है

रिष्टं तदालयं याति यथा व्याधिः स दोषधैः॥५०॥

टी० चंद्राशीश्वर और लग्रराशिपती यह पापग्रह से युक्त न होय तो अरि
ष्ट नाश होते है जैसे उत्तम औषध से व्याधि नाश होती है ॥५०॥ इति वर्ष फल

अथ प्रश्न प्रकर्ण निष्ठा दियुक्त प्रश्न ॥ निधि प्रहर (रुविचारः

संयुक्ता तारका वारमिश्रिता ॥ अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं

सत्त्वरजस्तमः॥१॥ फल ॥ सिद्धि स्तात्कालिके सत्त्वरजसा

तु विलंबता ॥ तमसानिष्फलं कार्यं ज्ञात व्यं प्रश्न को विदैः॥२॥

टी० प्रश्न कालमे जो तिथी वार नक्षत्र और प्रहर जो होय उसको एक प्रक
रना ३ से भाग लेना शेषमे सत्त्वरजस्तम यह फल सहित जानना उदा
हरण तिथी ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर इत्येको एक क्रिया तो १७ भया
३ से भाग लिया शेष २ रहे तो रजो गुण जानना फल कार्यमे देरी होगी
यह प्रकारसे ३ शेष रहे तो तमो गुण फल कार्य निष्फल १ शेष रहे तो स
त्त्व गुण फल तत्काल सिद्धि इस प्रकारसे प्रश्न फल जानना

अपने छाया का प्रश्न ॥ आत्मछाया त्रिगुणिता त्रयोदश स

मन्विता ॥ वसुभिश्च हरेद्भागं शेषं चैव शुभाशुभं ॥ फल ॥ +

लाभाश्रेयकेप्रिके सिद्धिर्द्विपंचमसप्तके॥

हृयोर्हानिश्चतुःशोकं पञ्चाष्टमरणं ध्रुवम्॥४॥

टी० प्रश्नकरते ही अपनी क्वाय जितना मोड़ आवे उरमे और १३ मि
लावना ० से भागलेना जो शेष आवे सो फल देखना-

शेष १ शेष २ शेष ३ शेष ४ शेष ५ शेष ६ शेष ७ शेष ८
लाभ हानी मिट्टी शोक बूझी मरण बूझी मरण

पंथाप्रश्न॥ ॥ तिथिः ग्रहरसंयुक्तावारकावारमिश्रिता॥

सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु फलमादिशेत्॥५॥ वर्तमानं च

नक्षत्रं गणयेत्स्त्रिकादितः॥ सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्न

स्थलक्षणं॥६॥ प्रश्नाक्षरे रुद्रमुक्तं सप्तभिर्भोजितं तथा॥

फलमेवं क्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषां हि सुभासुभम्॥७॥ ॥४॥

टी० प्रश्नकरते ही जो तिथी ग्रहर और वार नक्षत्र होय सो एकत्र करना-

७ से भागलेना शेष जो रहे सो फल जानना दूसरा प्रकार कलिकानक्ष

त्रसे दिन नक्षत्र नक्षत्र गिनना ७ से भागलेना शेष फल जानना तीसरा

प्रकार प्रश्नके जो अक्षर होय उरमे ११ मिलावना ७ से भागलेना शेष आ

वे सो फल जानना तीनों उदाहरण का फल देखना-

शेषका फल॥ ॥ एकेशेषे तथा स्थाने हि तीये पथि

वर्तते॥ तृतीये पथि मार्गं तु चतुर्थे ग्राममादिशेत्

॥ पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधियुतं वदेत्॥ शून्यं

ज्ञेयं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्थलक्षणं॥९॥ ॥४॥ ॥

टी० पूर्वके प्रश्नका फल शेष १ रहे तो स्थान पर जानना शेष २ रहे तो रस्ते

मे शेष ३ रहे तो अर्धमार्ग मे शेष ४ रहे तो ग्राम के पास शेष ५ रहे तो रस्ते मे

से फिर गया शेष ६ रहे तो रोग युक्त शेष ७ रहे तो मृत्यु ऐसा पंथाप्रश्न ती

न प्रकार का क्रम से जानना-

दूसरा प्रकार॥ ॥ धनसहजगतौ सितामरे ज्यौ

कथयत रात्रि गमनं प्रवासिषु सां॥ तनुहि बुकग

नाविमौ न न हत इति निवृत्तां कुरुतो गृहप्रवेशं॥१०॥

टी० प्रश्नकार के द्वितीय स्थान मे ध्रुव होय और तृतीय स्थान मे पुरु होय

तोप्रवासीपुरुषकाआगमनकहनाअथवाप्रश्नलग्नमेषुक्रऔरच
तुर्घस्थानमेगुरुहोयतोप्रवासीपुरुषकाजलदीआगमनकहना

कार्यकार्यप्रश्न॥ ॥दिशाप्रहरसंयुक्तातारकावारमि
श्रिता॥अष्टभिस्तुहरेद्भागंशेषंप्रश्नस्यलक्षणं॥११

॥फल॥पंचैकेत्वरितासिद्धिःषट्त्वर्येचदिनत्रयं॥

त्रिसप्तकेविलंबश्चद्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ॥१२॥

टी० प्रश्नकरनेवालेकासुखजिसदिशामेहोयवहदिशाऔरप्रहरनक्ष
त्रवारइस्कोइकट्टाकरना८सेभागलेनाशेषमेषुभाशुभफलजाननाशेष
१अथवा५रहेतोजलदीकार्यसिद्धीशेष६अथवा४रहेतोतीनदिनमेका
र्यशेष३७रहेतोविलंबशेष२८रहेतोकार्यहोगानहीऐसाजानना

अंकप्रश्न॥ ॥अंकद्विगुणितंरुत्वाफलनामाक्षरैर्यु
तं॥त्रयोदशयुतंरुत्वा नवभिर्भागमाहरेत्॥१३॥फल

॥एकेहिधनवृद्धिश्चद्वितीयेचधनक्षयः॥तृतीयेक्षेम
मारोग्यंचतुर्थेव्याधिरेवहि॥१४॥पंचकेचस्त्रीलाभः

स्यात्पृष्ठेबंधुबिनाशनं॥सप्तमेर्दक्षितासिद्धिरष्टमेम
रणंधुवं॥१५॥नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंयथा॥

टी० प्रश्नकालमेष्टकसेकहना९अंकमेसेकोईअंककहोतबउत्ते
काजोअंकहोयउस्कोटूनाकरनाफिरकोईफलकानामउत्तेकहावना
तबफलकेनामकेजोअक्षरहोयउस्कोपूर्वमेदूनाकियाजोअंकहैउ
त्तेमिलावनाफिरउत्ते१३मिलावनाऐसासबएकत्रकरना९सेभा
गलेनाजोशेषआवेसोफलशुभाशुभजाननाशेष१रहेतोधनलाभ
शेष२रहेतोधनक्षयशेष३रहेतोआरोग्यताशेष४रहेतोरोगशेष५रहे
तोस्त्रीलाभशेष६रहेतोबंधुनाशशेष७रहेतोकार्यसिद्धीशेष८रहेतो
मरणशेष९रहेतोराज्यप्राप्तीऐसाअंकप्रश्नगर्गमुनीनेकथनकियाहै

नवग्रहयंत्र॥ ॥नवग्रहात्मकंयंत्रंरुत्वाप्रश्ननिरी
क्षयेत्॥फलपूर्वोक्तमेवान्नदृष्टव्यंप्रश्नकोविदैः॥१६॥

टी० प्रश्नदेखनेकेवास्तनवग्रहात्मकयंत्रलिखनापूर्वमेविधी

जो:कहाहैसोदेखना

॥अन्यमत॥

७	३	८
९	५	१
३	७	६

सप्तत्रयांकेकययंतिचातीनवैकपंचत्वारिंशदन्ति॥अ

शोहिनीयेनदिकार्यसिद्धिरसाश्वनेदृष्टिकाप्रयंच॥१७

टी० अश्वमतसे पूर्वमे अंक प्रश्न कहा है वैसे ही परंतु फल भिन्न शेष ७ अथ
१७ रहे तो बानी अवण होगी शेष १७ ॥ १७ रहे तो जल दो कार्य सिद्धी शेष ८

१८ रहे तो कार्य होगा नही शेष १८ रहे तो नी नदि न मे कार्य सिद्धी ऐसा जान
बार नक्षत्र युक्त पंचाश्व ॥ ॥ बुधे चंद्रे तथा मार्गेश

मीपे गुरु शुक्र यो ॥ रवौ भौ मेतया दूरे शनैश्च परि पी
ड्यते ॥ निजी वः सप्तत्रयाणि सजी वौ द्वादशे भवेत् ॥

व्याधितो न वक्राणि सूर्य धिष्यात्तु चान्द्रम ॥ १९

टी० प्रश्न बुध अथवा चंद्रवार को करे तो मार्ग में है गुरुवार को वा शुक्र
वार को करे तो समीप आया है और रवि मंगलवार को प्रवासी दूर है श
निवार को पीडित और विशेष सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक देखा न सो प्र
थम ७ नक्षत्र मे चंद्र होय तो निजी वृद्धि ती १२ नक्षत्र मे चंद्र या होय तो जी
व युक्त तृतीय ९ नक्षत्र मे चंद्र या होय तो निजी युक्त ऐसा पंचाश्व जानना

नष्टवस्तु प्रश्न ॥ ॥ निधिवार च नक्षत्र ल प्रवन्ति
विमिश्रितं ॥ पंचभिस्तु हरे द्वा गं शेषं तत्त्व विनिर्दि
शेत् ॥ २० ॥ फल ॥ पृथिवी तु स्थिरं ज्ञेयं असु व्योधि
न लभ्यते ॥ नेत्रस्तु जगं ज्ञेयं वा यो शोकं विमिर्दिशेत् ॥

टी० मया कर ते ही जो निधिवार नक्षत्र ल प्र होय उत्तम २ युक्त करना और
५ से भाग लेना और पंच तत्त्व पृथ्वी नल आकाश तेज वायु अह क्रय से नष्ट
वस्तु का स्थान जानना शेष १७ रहे तो पृथिवी पर स्थिर है शेष १८ रहे तो ज
ल मे प्राप्ति नही शेष १९ रहे तो आकाश पर प्राप्ति नही शेष २० रहे तो नेत्र राजा
के द्वा गं शेष २१ रहे तो वायु शोक प्राप्ति ऐसा नष्ट वस्तु का ज्ञान कर

गर्भिणी प्रश्न ॥ ॥ तत्त्व च्छत्तं प्रविजीव भौमे
तृतीय सप्तनव पंचमे च ॥ गर्भः पुमान्वै क्रयि
भिः प्रणीतं चान्य ग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीतं ॥ २१ ॥

टी० स्त्री गर्भ का प्रश्न कर ते ही जो प्रश्न ल प्र होय उत्तम २ ग्रह देखना ल प्र
से तृतीय अथवा सप्तम नव पंचम स्थान मे रवि गुरु मंगल होय तो गर्भ मे

पुत्रहोय और यह स्थान मे अन्य ग्रह होय तो गर्भ मे कन्या होय ऐसा जानना -
 मुष्टिप्रश्न ॥ ॥ मेषे रक्त रूषे पीत मिथुने नील वर्ण
 कम् ॥ कर्के चण्डूर जेयं सिंह धूम्र प्रकीर्तितम् ॥
 ॥ २३ ॥ कन्यायां नील मिश्रं तु तुलायां पीत मिश्रित
 म् ॥ वृश्चिके ताम्र मिश्रं च चापे पीतं विनिश्चितं ॥
 ॥ २४ ॥ नक्षत्रे कुंभे कृष्ण वर्णं मीने पीतं वदेत्सुधीः ॥

टी० एच्छ कके मूठी मे कोन चर्ण का पदार्थ है सो कहना उस्का क्रम मेष
 लग्न होय तो मूठी मे लाल पदार्थ कहना और वृष लग्न होय तो पीला पदार्थ
 कहना मिथुन होय तो नील वर्ण कर्क होय तो सफेद वर्ण सिंह होय तो
 धूम्र वर्ण कन्या होय तो नील मिश्रित तुला होय तो पीत मिश्रित वर्ण वृश्चि
 कहोय तो लाल मिश्रित वर्ण धन होय तो पीत वर्ण मकर और कुंभ होय
 तो कृष्ण वर्ण मीन होय तो पीत वर्ण ऐसा प्रश्न काल मे लग्न से वर्ण जानकरना -

लग्न से मन चिंतित प्रश्न ॥ ॥ मेषे च द्विपदा चिंता रूषे चिंता
 चतुष्पदः ॥ मिथुने गर्भ चिंता च व्यावसायस्य कर्कटे ॥ २५ ॥
 सिंहे च जीव चिंता स्यात्कन्यायां च स्त्रियंतथा ॥ तुले च धन
 चिंता च व्याधि चिंता च वृश्चिके ॥ २६ ॥ चापे च धन चिंता स्यात्कर्क
 रे शत्रु चिंतनं ॥ कुंभे स्थानस्य चिंता स्यान्मीने चिंता च दैविकी ॥

टी० लग्न से प्रश्न का उत्तर प्रश्न काल मे मेष लग्न होय तो मनुष्य की चिंता
 कहना वृष लग्न होय तो चतुष्पद की चिंता मिथुन लग्न होय तो गर्भ की
 चिंता कर्क लग्न होय तो उद्योग की चिंता सिंह लग्न होय तो जीव की चिंता
 कन्या लग्न होय तो स्त्री की चिंता तुलारु लग्न होय तो धन की चिंता वृश्चिक
 लग्न होय तो व्याधी की चिंता धन लग्न होय तो धन की चिंता मकर लग्न
 होय तो शत्रु की चिंता कुंभ लग्न होय तो स्थान की चिंता मीन लग्न होय तो दैव
 ता से बधि चिंता ऐसा प्रश्न काल मे प्रश्न लग्न से जानना -

द्वादशलग्न की संज्ञा ॥ धानुर्मूलं जीवश्चरस्थिरद्विस्वभाव
 श्व ॥ मेषादयः क्रमेण ज्ञातव्याः प्रश्नकोविदैः ॥ २७ ॥

टी० मेषादि क्रम से द्वादशलग्न की संज्ञा एक राशी मे २ नाम जानना - मे
 षलग्न मे धानु चिंता और चर संज्ञा वृषलग्न मे मूल चिंता स्थिर संज्ञा मि

धनलघुमेजीवचिंता हिः स्वभावसंज्ञाकरलघुमेधातुचिंता चर सं
ज्ञासिंहलघुमेमूलचिंता स्थिरसंज्ञा कन्यालघुमेजीवचिंता हिः स्व
भावसंज्ञा तुलालघुमेधातुचिंता चरसंज्ञा वज्रिकलघुमेमूलचिंता
स्थिरसंज्ञा धनलघुमेजीवचिंता हिः स्वभावसंज्ञा मकरलघुमेधातु
चिंता चरसंज्ञा कुंभलघुमेमूलचिंता स्थिरसंज्ञा मीनलघुमेजीव
चिंता हिः स्वभावसंज्ञा इस प्रकार से द्वादशराशीकी संज्ञा जानना -

अंकप्रश्न ॥ ॥ अष्टोत्तरशतं चैव प्रश्निको न्यूनमाचरेत्
॥ शेषं द्वादशभिर्भक्तं शेषं चैव श्रुत्वा शुभं ॥ २९ ॥ फल ॥ ए
कंदुर्गो सप्तके वै विलंबश्चांत्ये नुयैदि सुभूते पुनाशः ॥ रु

द्रेसिद्धिर्गुले रूढि रूता शीघ्रं कार्यं स्वाधिषट् द्वादशेषु ३०

टी० प्रश्नपृच्छक से अष्टोत्तरशत अंक मे से अंक कहवावना फिर जो अं
क आवे उसको १२ से भागलेना शेष रहहे सो फल जानना शेष ११ १० ७ २
हेनो कार्य विलंब शेष ८ ४ १ १ ५ रहे तो नाश शेष ११ २ रहे तो सिद्धि
शेष २ रहे तो रुद्धि और शेष ३ ५ १ २ रहे तो जल दी कार्य जानना -

रोगी प्रश्न ॥ ॥ तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर एव च ॥ अष्टभि

स्तु हरे ज्ञागं शेषं तु फल आदि शेष ॥ ३१ ॥ फल ॥ हयाग्री देवता का

धापे नीचि नेत्र दंतिषु ॥ षट्चतुर्षु भूतवाधानवा धाए कार्य के ॥ ३२

टी० प्रश्नपृच्छक कर से ही तिथी वार नक्षत्र लग्न प्रहर यह सब एकत्र क

रना ८ से भागलेना शेष फल जानना शेष १ ३ २ हे तो देव बाधा जान

ना शेष २ ८ रहे तो पितर संबंधी बाधा शेष ५ ४ रहे तो भूत बाधा शेष १ ५

रहे तो कोई भी बाधा न हो ऐसा जानना यह रोग प्रश्न विधी जानना -

रोग प्रश्न लग्न पर ले ॥ ॥ जे पेच देवी दोषः स्यात् त्रयो दोषश्च

पैत्रिकः ॥ मिथुने शाकिनी दोषः कर्कटे भूत दोषकः ॥ ३३ ॥ सिंह

सहोदराणां कन्या पांडुल मातृजः ॥ तुल दोषश्चंडिकाया

ना डी दोषो हि रूश्मिके ॥ ३४ ॥ चापे च यक्षिणी पीडा मकरे ग्रा

म देवतात् ॥ अशुजादृष्टिजः कुंभे मीने आकाश गामिनः ॥ ३५

टी० प्रथम रोग प्रश्न काल में पल घंटा पतो देवी संबंधी रोग वृष लग्न हो

य तो पित दोष से रोग मिथुन लग्न होय तो शाकिनी दोष से रोग कर्कल लग्न हो

पतो भूतदोषसेरोगः सिंह लग्नहोयतो आतदोषसेरोगः कन्या लग्नहोयतो
कुलमातृकादोषसेरोगः तुला लग्नहोयतो चंडिकादोषसेरोगः वृश्चिक
लग्नहोयतो नाडीदोषसेरोगः धन लग्नहोयतो यक्षिणीदोषसेरोगः मकर
लग्नहोयतो ग्रामदेवतादोषसेरोगः कुंभ लग्नहोयतो पुत्रहीन स्त्रीकेटु
द्विदोषसेरोगः मीन लग्नहोयतो आकाशदेवतादोषसेरोगः ऐसारोगप्रभृजा

पर्जन्यप्रश्नः ॥ ॥ आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादि (नवा)
दिनत्रये ॥ रोहिणीकालमारव्यातिसमदुर्भिक्षलक्ष
णं ॥ ३६ ॥ रात्रावैवनिरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघदंबरं ॥ म
ध्यान्ते जलबिन्दुः स्यात्तदा दुर्भिक्षलक्षणम् ॥ ३७ ॥

टी० पर्जन्यविचार आषाढशुक्लपक्षकी १०।११।१२ तिथीको रोहिणी
होयतो क्रमसे सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष यहती नोफलजानना और रा
त्रीमे मेघखुलजाना प्रातःकालमे मेघ आवना और मध्याह्नमे जल
बिन्दु गिरना यह दुर्भिक्षकालक्षणजानना-

वृष्टिलक्षणः ॥ ॥ प्रावृट्काले शीतः शिमर्षदा
स्याच्छुक्रादस्ते सौम्यदृष्टश्च मंदात् ॥ बुद्धिस्थाने
सप्तमे वा त्रिकोणे वृष्टिर्वाच्यादैवविद्धिः पुराणेः ॥ ३८ ॥

टी० वर्षाकालमे जो चंद्रमा शुक्रसे सप्तमस्थानमे और शुभग्रहसे दृष्टशनी
से पंचमस्थानमे होय अथवा ७ स्थानमे होय वा त्रिकोणमे होय तो वृष्टि

कुम्भः कर्कटेषौ मीनमकरौ वृश्चिकस्तु (लक्षणजानना)
ला ॥ जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभं

॥ ३९ ॥ ल भत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ॥

टी० जलकेन सप्तसूर्यमहानक्षत्रकुंभकर्क अथवा वृषमीन मकर
वृश्चिक तुला यह जल लग्न है इस लग्नमे होय तो वृष्टि उत्तमजानना-

नयदावानि पवनः स्थलं यांति द्वाषादयः ॥

शब्दं कुर्वन्ति मंडुकास्तदा स्याद्दृष्टिरुत्तमा ॥ ४० ॥

टी० वर्षाकालमे वृष्टिलक्षणे वायूनचले और जलसे वाहर मच्छनिक
से मेषुकाशब्द करे ऐसालक्षण होय तो उत्तम वृष्टिजानना-

पर्जन्यनक्षत्रः ॥ ॥ अश्विनी मृग पुष्येषु पूषविष्णुम +

यास्तु च॥ स्वात्मां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः॥४१॥

टी० अश्विनी-मृग-पुष्य-पूर्वाषाढा-श्रवण-मघा-स्वाती यत्नक्षत्रमेतत्सूर्यमहानक्षत्रको आवेतो उत्तमरुष्टिजानना -

स्त्रीनपुंसकपुरुषनक्षत्र॥ ॥ आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखाग्निनपुंसकं॥ मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणिक्रमादुभेः॥४२॥ वायुर्नपुंसकेभ्यस्त्रीणां भेदाभ्यर्शनं॥ स्त्रीणां पुरुषसंयोगे रुष्टिर्भवति निश्चितं॥४३॥

टी० प्रथम आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र स्वाती तक स्त्री संज्ञा विशाखा से ३ नक्षत्र ज्येष्ठा तक नपुंसक संज्ञा मूल से १४ नक्षत्र मृगतक पुरुष संज्ञा ऐसी २७ नक्षत्र की स्त्री नपुंसक पुरुष संज्ञा जानना -

अल्परुष्टिलक्षण॥ ॥ अग्रेयाति यदा भौमः पश्चाच्चल

ति भास्करः॥ तत्र रुष्टिर्न विपुला जायते नात्र संशयः॥४४॥

टी० योड़ी रुष्टि कालक्षण सूर्यसे आगे के राशी पर मंगल होय तो अल्प रुष्टि जा सूर्यनक्षत्र चंद्रनक्षत्र संज्ञा॥ ॥ अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रा

देः पंचकं तथा॥ पूर्वाषाढादि चत्वारिचो नरा रेवती हृष्यं॥४५॥

उत्तानिशिषिभान्यत्र प्रोच्यंते सूर्यभान्यथ॥ रोहिणी च मृग

श्रैव पूर्वाफल्गुनिकानथा॥४६॥ सूर्ये सूर्ये भवेत्तद्युष्यं द्रे

चंद्रे च वर्षति॥ चंद्रसूर्यो भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघघट ४७

टी० अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा

पूर्वा-उषा-श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती यह चंद्र नक्षत्र जानना और

रशेष सूर्य नक्षत्र जानना आगे फल चंद्रनक्षत्र और सूर्यनक्षत्र यह दू

नो सूर्यनक्षत्र होय तो वायू बहुत और दू गो चंद्रनक्षत्र होय तो पर्जन्य

नहीं जब चंद्रनक्षत्र और सूर्यनक्षत्र आवेतो रुष्टि होय ऐसा जानना

॥ घरसे पशुनिकस जायति स्कात्रथा॥

शुभणि भान्नवमे पुनने स्थितं न दनुषट् सुचकर्ण पथे स्थि

ते॥ अचल भेषु गतं गृहमागतं ह्यगने गतमेव मृते त्रिषु ४८

टी० सूर्यनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक देखने का क्रम प्रथम एनक्षत्रमे प

श्रुत नमे जानना नंतर ६ नक्षत्रमे गणीय आर्धमे जानना और ७ नक्षत्र

मेजलदीपिले २ नक्षत्रमेमिलेगानही ३ नक्षत्रमेमृत्युऐसापशू
घरमेसेनिकसजानेकाप्रश्नदेखना.

संक्रांतौवारफल॥ ॥संक्रांतिर्जायतेयत्रभास्करेभूसु
तेशनौ॥तस्मिन्मासेभयंघोरंतुर्भिस्सृष्टिचोरजं॥४०॥

टी० रविमंगल शनि इनकेवारमेसंक्रांतिलेतेउसमासमेभय
दुर्भिस अष्टिचोरभयजानना. —

ACC. No.

राजभंगादिकयोग॥ ॥ यदि भवति कदाचि
च्चाश्विनीनष्टचंद्राशनिरविकुजवारेस्वानिरासु
ष्मयोगे॥गगनचरपशूनांजंगमस्थावराणां
पतिजनविनाशोराज्यभंगस्तुचोक्तः॥५०॥ ॥

टी० कदाचित् अमावास्याकेदिन शनिवार रविवार मंगलवार औ
र अश्विनी अथवा स्वाती और आशुघान योग ऐसायोगहोयतोप
क्षिपशुजंगमस्थावर राजा जन इतनेकानाशजानना. —

सूर्यचंद्रकामंडलविचार॥ रविशशिपरिवेषेपूर्वयामेच
पीडारविशशिपरिवेषेमध्ययामेचवृष्टिः॥रविशशिपरिवे
षेधान्यनाशस्तृतीयेरविशशिपरिवेषेराज्यभंगश्चतुर्थे॥५१॥

टी० सूर्यऔरचंद्रइनकोमंडलपडेतिस्काविचारसूर्यकोअथवा चं
द्रमाकोमंडलप्रथमप्रहरमेहोयतोपीडा दूसरेप्रहरमेवृष्टितीसरेप्र
हरमेधान्यनाश चतुर्थप्रहरमेराज्यभंगऐसासूर्यचंद्रकेमंडलकाविचार

इन्द्रधनुष्यादियोग॥ ॥ रात्रौ धनुर्दिनेउल्काता (करना
रात्रौचधूमकेतुश्चभूकंपश्चतथैव

हि॥एतानिदुष्टचिन्हानिदेशक्षयकराणिच॥५२॥ ॥

टी० रात्रौमेइन्द्रधनुषनिकसेऔरदिनमेउल्कापातनक्षत्रपातऔर
रात्रौमेधूमकेतुऔरभूकंपयहसबदुष्टचिन्हहोयतोदेशनाशहोतेहै

अथग्रहचक्रप्रकरणम्॥ (ऐसाजानना.

॥सूर्य॥ऋसेसंक्रमणंयत्रहेवक्रेविनिपोजयेत्॥चत्वार

रिदक्षिणेबाहौत्रीणित्रीणिचपादयोः॥५३॥चत्वारिवा

मबाहौचहृदयेपंचनिर्दिशेत्॥अक्षोर्द्वयंयंयोज्यंमूर्ध्नि

चैकैककंगु दे ॥ ५५ ॥ फल ॥ रोगोलाभस्तथाध्यानबंधन
लाभएवच ॥ ऐश्वर्यराजपूजाचअपमृत्युरितिकमात् ॥
५५ ॥ चंद्र ॥ चंद्रचक्रप्रवक्ष्यामिनराकारं सुशोभनं ॥ श्री
वैषहकं मुखे त्वेकं त्रीणि दक्षिणे द्वस्तके ॥ ५६ ॥ हृदये तु
कंप्रदानं चामहस्तेन पंतथा ॥ कुक्षयोः षट्कंच दानं च
पादौ कैकं विनिर्दिशेत् ॥ ५७ ॥ फल ॥ मुखे चंद्रव्यहरणं
श्रीवैलाभकरं स्मृतं ॥ हानिदं दक्षिणे हस्ते हृदये च सुखा
वहं ॥ कामहस्ते तु रागाश्च कुक्षयोः शोकस्तथैव च ॥ पाद
योर्हानि रोगौ च जन्मधिष्ययादिचंद्रभं ॥ ५९ ॥ भौम ॥
भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मधिष्ययादिभौमभं ॥ श्रीवैष
हकं मुखे त्रीणि त्रीणि वै दक्षिणे करे ॥ पादयोः षट्प्रदात्
चामहस्तेन पंतथा ॥ कुक्षौ चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये च समे
वच ॥ ६१ ॥ फल ॥ विजयश्चेन्नरोगश्च लक्ष्मीः पंथाभ
यंतथा ॥ मृत्युलाभः सुखं चापि फलं जैयं विचक्षणैः ॥ ६२

सूर्य			चन्द्र			मंगल		
सूर्यसंक्रान्तिनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतदेखना स्थानसेफलमुभाशुभजाना			जन्मनक्षत्रसेचंद्रनक्ष त्रतकदेखनास्थानसे मुभाशुभफलजानना			जन्मनक्षत्रसे मंगलके नक्षत्रतकदेखनास्थाव सिमुभाशुभफलजानना		
स्थान	न	फल	स्थान	न	फल	स्थान	न	फल
मुख	३	रोगप्रति	मस्तक	६	लाभ	सिर	६	विजय
रहिनाह	४	लाभ	मुख	१	व्यहर	मुख	३	रोगप्रा
गोह	६	मार्गचल	रहिनाह	३	लेमकरेण	हृदय	३	लक्ष्मीप्रा
बायाहा	४	बंधन	हृदय	६	सुखप्रा	गोह	६	मार्गचल
हृदय	५	लाभ	बायाहा	३	रोगप्रा	बा. हा.	३	भय
नेत्र	४	लक्ष्मीप्रा	मंगल	६	शोक	मुख	१	मृत्यु
मस्तक	१	राजएहो	हृ. गोह	१	हानि	नेत्र	२	मृत्यु
उदा	१	अपमृत्यु	बा. गोह	१	रोगप्रा	हृदय	३	सुख

॥ सुभ ॥ ॥ सुभचक्रप्रवक्ष्यामि जन्मकक्षादिसौम्यभं ॥

शिरसि त्रीणि राज्यां स्यात् वक्रैकं धनधान्यदं ॥ ६३ ॥ नेत्रे
 द्वे प्रीति लाभौ च नाभौ श्रीः पंचकं तथा ॥ पादयोः षट्प्रवा
 सश्च वा मेवेदाधनं तथा ॥ ६४ ॥ चत्वारिदक्षिणे हस्ते ध
 नलाभस्तथैव च ॥ गुह्यस्थाने मह्यं च बंधनं मरणं फ
 लं ॥ ६५ ॥ गुरु ॥ गुरुचक्रं प्रवक्ष्यामि गुरुभाज्जन्मक्र
 शकं ॥ दद्याच्छिरसि चत्वारि चत्वारिदक्षिणे करे ॥ ६६ ॥ एकं
 कंठे मुखे पंचपादयोः षट्प्रदापयेत् ॥ हस्ते वा मे च चत्वा
 रि त्रीणि दद्याच्च नेत्रयोः ॥ ६७ ॥ फलं ॥ राज्यां लक्ष्मीर्धनप्रा
 प्तिः पीडा मृत्युस्तथैव च ॥ मुखे नैव क्रमेणैवं फलं ज्ञेयं वि
 चक्षणैः ॥ ६८ ॥ शुक्र ॥ शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात्
 जन्मभं ॥ मुखे त्रीणि महालाभः शीर्षे पंचशुभावहः ॥ ६९
 ॥ त्रिकं तु दक्षिणे पादे कुंशहानिकरं सदा ॥ नथैव वा मप्रादे
 च त्रीणि भानितु योजयेत् ॥ हृदये द्वे धनं सौख्यं भाष्टकं ह
 स्तयोर्द्वयोः ॥ मित्रसौख्यं धनप्राप्तिर्गुह्ये त्रीणि तथैव च ॥
 स्त्रीलाभश्च फलं प्रोक्तं भृगुपुत्रस्य सूरिभिः ॥ ७१ ॥ ॥

बुधः			गुरु			शुक्रः		
जन्मनस्तत्रसे बुधकेन			गुरुकेनस्तत्रसे जन्मन			शुक्रनस्तत्रसे जन्मनस		
क्षत्रतकदेखना स्थान			स्तत्रतकदेखना स्थानसे			त्रतकदेखना स्थानसे शु		
से शुभाशुभफलजानना			शुभाशुभफलजानना			भाशुभफलजानना-		
स्थान	न	फल	स्थान	न	फल	स्थान	न	फल
मस्तक	३	राज्यप्रा	मस्तक	४	राज्यप्रा	मुख	३	महाला
मुख	१	धन	दं हात	४	लक्ष्मीप्रा	मस्तक	५	शुभ
नेत्र	२	प्रीतिला	कंठ	१	धनला	दं गोड	३	कुंशहानि
नाभि	५	लक्ष्मीप्रा	मुख	५	पीडा	बा. गोड	३	कुंशहा
गोड	६	प्रवासक	गोड	६	मृत्यु	हृदय	२	धनसौ
बापाहा	४	धनला	बा. हा	४	मुखप्रा	हाथ	८	मित्रमुख
दं हा	४	धनला	नेत्र	३	मुखप्रा	गुह्य	३	स्त्रीला
गुद	२	बंधनमर	०	०	०	०	०	०

॥शनि॥ ॥सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि शौ रिभाज्जन्मकसमं॥
 मूर्ध्वैकं चतयावचैकरेचत्वारिदक्षिणे॥७५॥ विचसेत्वा
 द्युग्मौषद्वयमवाहौचतुष्टयं॥ हृदयेपंचक्रकाणिकमाच्च
 त्वारिनेत्रयोः॥७३॥ मूर्द्धिद्वयंगुदेवैकं पंदस्य पुरुषाकनेः
 ॥फल॥ मूर्द्धवच स्थभैरागौलाभौ वैदक्षिणेकरे॥ स्यादध्या
 चरणं द्वे द्वेषो वामकरे नृणां॥७४॥ हृदयेपंचलाभौ वैनेत्रयो
 तिरुदाहता॥ पूजाप्रस्ते परानूनं गुदे मृत्युं विनिर्दिशेत्॥७५॥
 ॥राहु॥ राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुचक्रसमं॥ मूर्ध्वित्री
 णितथात्रैकं करेचत्वारिदक्षिणे॥७६॥ पादयोः षट्प्रदात
 व्यं वामहस्तिचतुष्टयं॥ हृदये त्रीणिकंठैवं मुखे तौ नेत्रयोर्द्व
 यं॥७७॥ गुह्येद्वयं क्रमेणैव राहुचक्रं स्वभावतः॥फल॥ रा
 ज्यं रिपुक्षयः पंथा मृत्युर्लोभो यरोगकः॥ जयः सौख्यं तथा
 कष्टं क्रमाज्ज्येष्ठफलं बुधैः॥केतु॥ केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्म
 भात्केतुचक्रसमं॥ मूर्ध्विपञ्चजयश्चैव मुखेपंचमहद्भयं॥७९॥ ह
 स्तयोर्भौ निचत्वारि विजयश्च जयस्तथा॥ पादयोः षट्च सौख्यं स्या
 त् हृदि द्वे शोककारके॥८०॥ कंठे चत्वारि च व्याधिगुह्यैकं च महद्भयं॥

शनि			राहु			केतु		
शनिनक्षत्रसेजन्मनक्ष त्रतकदेखना स्थानसे शुभाशुभफलजानना			जन्मनक्षत्रसे राहु के नक्षत्रतकदेखना स्थानसे नक्षत्रशुभाशुभफलजानना			जन्मनक्षत्रसे केतुनक्ष त्रतकदेखना स्थानसे शुभाशुभफलजानना		
स्थान	न	फल	स्थान	न	फल	स्थान	न	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यश	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	द. हा.	४	रिपुनाश	मुख	५	बहुतम
द. हाथ	४	लाभ	गोड	६	पार्श्वत	हाथ	४	विजय
गोड	६	पार्श्वत	बा. हा.	४	मृत्यु	गोड	६	सौख्य
बा. हा.	४	बंधन	हृदय	३	बहुतदया	हृदय	३	शोक
हृदय	५	लाभ	कंठ	१	रोग	कंठ	४	व्याधि
नेत्र	४	मौलि	मुख	२	जय	मुख	१	बहुतम
मस्तक	१	पूजा	नेत्र	२	सौख्य	नेत्र	१	०
गुह्य	१	मृत्यु	गुह्य	२	क	गुह्य	१	०

॥ श्रीर्षीत्रीणि मुखे त्रयं चर विभा
देकैकभं स्तं धयो रेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्ण्यानि पंचोदरे
॥ नाभौ पुस्तले च जानु पुगुले एकैकत्र ससिपे ज्जंतोः केचिदि
तिष्ठति गणका शेषाणि पादद्वये ॥ ८२ ॥ अल्पा युष्मरणि स्थि
तेन गमनं देशं तज्जानु भेगुह्ये स्यात्परदारलं भनमहौनाभौ
चलोभ ॥ ८३ ॥ मस्य करयोर्बालोर्बलं वै मुखे
॥ गाराज्यं स्थिरं मूर्धनि ॥ ८३ ॥ ॥ ॥

॥ नक्षत्रसेजनक्षत्रतकदेखने काक्रमप्रथम
॥ १ ॥ नक्षत्र फल राजप्राप्ती. सुखपर २ नक्षत्र फल मिष्टान्न भोजनस्कं
॥ २ ॥ नक्षत्र फल बलवान्. भुजापर २ नक्षत्र फल बल. हाथके नलवेपर २
॥ ३ ॥ नक्षत्र फल चोर. हृदयपर २ नक्षत्र फल ऐश्वर्य नाभीपर १ नक्षत्र फल सुख
॥ ४ ॥ नक्षत्र फल स्त्रीसेलंपट जानूपर २ नक्षत्र फल देशवास. पाद
पर ६ नक्षत्र फल थोडा आयुष्य ऐसा जन्म नक्षत्रसे स्थान विचार करना
लग्न शुद्धी पंचक देखना ॥ ॥ गत तिथि पुतल ग्रंथं दहत् शो
षकं च वसुधम पुगुषट्के क्षोणि संख्याक्रमेण ॥ रुगनल नृपचौर
मृत्युदं पंचकं स्याद्भूतगृह नृपमार्गो हाह केवर्जनीयम् ॥ ८४ ॥
टी० गत तिथी मेल ग्रयुक्त करना २ से भाग लेना शेष ८ रहै तो रोग पंचक सो
जनेऊ मे वर्ज्य शेष २ रहै तो अग्नि पंचक सो गृहार्थं भकरान ही शेष ४ र
हे तो राज पंचक और शेष ४ रहै तो चोर पंचक ऐसे दूनों मे ग मन करान
ही शेष १ रहै तो मृत्यु पंचक उस्मे विवाह करान ही इस्से दूसरे ३
क शेष रहै तो पंचक नही ऐसा जानना.

वारपर त्वसे पंचक ॥ ॥ रवौ रोग कुजे वन्दिः सोमे तु नृपपं
चकं ॥ बुधे चोर शनौ मृत्युः पंचकानि तु वर्जयेत् ॥ ८५ ॥
टी० रविवार को रोग पंचक त्याग करना मंगल को अग्नि पंचक. चंद्रवा
र को राज पंचक बुधवार को चोर पंचक शनिवार को मृत्यु पंचक ऐसा प
हवार पंचक त्याग करना. ॥ दिनमान रात्रिमान ॥
अयनादिक वासर रामहताः गगना नल बाण शशांक पुताः ॥
परिभाजित शून्यर सैर्घटिका कर्कादि निशामकरादि दिनं ८६

ज्योतिषसार २६

टी० अथनकहिये कर्कसंक्रांतीसे ६ मकरसंक्रांतीतक १२०
 क्रांतीसे ६ कर्कसंक्रांतीतक इत्येजि सतिथीकादिनगानकरनाहोय
 उहातक गिननातवउस्को १ सेगुणदेना जो अंकहोयउम्मे १५३० मिला
 बना ६० सेभागलेना शेषजोरहे सी रात्रिमान जानना कर्कसंक्रांतीसे
 देखना औरमकरसंक्रांतीसे दिनमानजानना-

दिनकितना आया सो

रात्रि

ताचमेघात्पट्टसित्पुनत्रि

दिनदलस्यनगाहतस्य पूर्वगतोस्य

टी० प्रथमअपनीश्यापागोडसेगिननाजो अंकऔप
 औरमेघसंक्रांतीसेकन्यातक १ अंकउस्येकमकरनाइस्को
 सेमीनतकसंक्रांतीकेहोपककमकरनासोतुला ३ वृश्चिक४ ध
 कर५ कुंभ४ मीन ३ चहरीतसेकमकरना ऐसा अंककमकरकोजूता
 १२खनानन्तरदिनकादल १५ इस्को ७ सेगुणदिपातो १०५ अणाइस्के
 पीछेरखे अंकसे भागलेना जो अंकआवे सो पटिका परनुदिनकेपू
 र्वाधकीपड़ी भई औरउत्तरार्द्धमेइतनादिनरहताऐसाकहना-

रात्रिकितनी भईसेदेखना ॥ सूर्यभावाधनक्षत्रे साप्तसे

ख्याविशोधितं ॥ विंशति घनवहतंगतारात्रिः स्फुटाभवेत्

टी० रातको मध्यमे जो नक्षत्र आयाहोयउतनानक्षत्रसूर्यनक्षत्रसे
 नना औरउस्ये ७ कमकरना शेषजोरहे उस्को २० सेगुणदेना २ सेभा
 लेना शेषजोरहे उत्तनी रातगत भईहेसाजानना-

अंतरंगबहिरंगनक्षत्र

सूर्यभाद्रुगणपुनः पुनर्गण्यतामिति चतुष्टयं च ॥

अंतरंगबहिरंगसंज्ञकतत्र कर्मविदधी ततादृशं ॥ ८९

टी० सूर्यनक्षत्रसेदिननक्षत्रनकदेखना प्रथमउनक्षत्र भीतर ३ न
 क्षत्रबाहर ऐसेकमसे अंतरंगनक्षत्रनक्षत्रनाचहपमूलका
 वनेको औरदेनेकोवधितहे ऐसाजानना

IGNCA RAB
 ACC. No. 183

॥ इति भाषाटीकासाहज्यतपसाः समाप्तः ॥

